एकमुश्त समाधान

अमित प्रकाशन
के०बी० ६७, कविनगर, गाज़ियाबाद (उ०प्र०)

एकमुश्त समाधान

डॉ० रामनिवास 'मानव'

अनुवादक :

सूर्यदेव पाठक 'पराग'

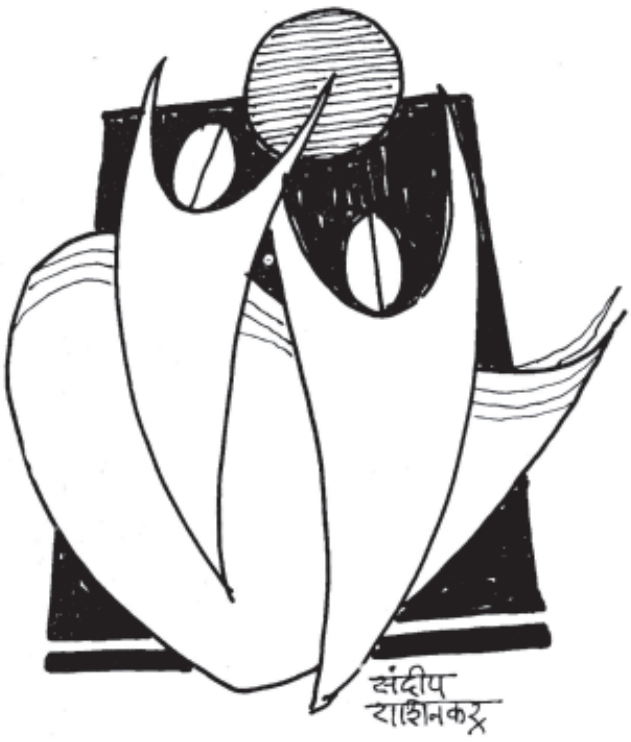

(डॉ० रामनिवास 'मानव' के भोजपुरी में अनूदित लघुकथा)

ISBN : 978-93-80050-09-6

अमित प्रकाशन
के०बी० ६७, कविनगर,
गाज़ियाबाद–२०१००२ (उ०प्र०)

●

मूल्य : १५०.०० रुपये
प्रथम संस्करण : २००६ © लेखकाधीन
आवरण : रवीन्द्र शर्मा

●

कम्पोज़िग : कोनिका कम्प्यूटर्ज, हिसार (हरि०)
मुद्रक : क्वालिटी सिस्टम, शाहदरा–११००३२

Ekmusht Samadhan (Laghuktha-Sangraha)
by Dr. Ramniwas 'Manav'
Edition : 2009 Rs.150.00

आमुख

डॉ० रामनिवास 'मानव' हिन्दी भाषा के जानल–मानल कवि, सरस बालगीतकार, सम्मानित लघुकथाकार, हरियाणा में रचाइल हिन्दी–साहित्य के पहिल शोधार्थी आ अधिकारी विद्वान का साथे एगो सफल हिन्दी–प्राध्यापक आ मंजल शोध–निर्देशक हउवे। उनका प्रतिभा का अंजोर से उनकर लिखल हर विधा के रचना जगमगा गइल बा। एकर सबूत बा ओह विधन पर लिखल रचनन के अधिकारी विद्वानन का ओर से मिलल व्यापक स्वीकति आ अनेक राष्ट्रीय संस्थन से उनका मिलल पुरस्कार आ सम्मान। उनका कई हिन्दी–पुस्तकन के अनुवाद अनेक भारतीय भाषा का अलावा विदेशी भाषा में भी हो के देश–विदेश में पढ़ल जा रहल बा।

हमरा डॉ० 'मानव' के हिन्दी–लघुकथनौ के पत्र–पत्रिकन का माध्यम से पढ़त रहे के सुजोग पिछिला दस–बारह बरिस से मिलत रहल बा, आ तबसे हम उनका लघुकथन से प्रभावित रहल बानी। सन् २००४ में छपल उनकर दूगो लघुकथा–संग्रह 'घर लौटते क़दम' आ 'इतिहास गवाह है' के जब पढ़े के अवसर मिलल, त पढ़के हम कुछ आउर ज्यादा प्रभावित भइलीं। हमरा ई समझे में देर ना लागल कि काहे उनका हिन्दी–रचनन के हिन्दीतर लोग अपना भाषा में अनुवाद क के अपना भाषा–भाषियन तक पहुंचावे खातिर लालायित बाड़े।

भोजपुरी बोलेवाला इलाका में हमार जनम भइला आ ओह भाषा में लिखे–पढ़े का प्रति लगाव रहला से, हम पिछिला चालीस साल से, भोजपुरी–साहित्य से जुड़ल बानी। भोजपुरी–साहित्य के विकास पिछिला पचास बरिस में बहुत तेजी से भइल बा, जवना में कविता का अलावा गद्यो में बहुत काम भइल बा। कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध आदि का साथे लघुकथा भी भोजपुरी में खूब लिखा रहल बा। भोजपुरी के प्रायः सभ कहानीकार लघुकथा लिख रहल बाड़े, जवन पुस्तक के रूप में कम, बाकिर पत्र–पत्रिकन का माध्यम से भोजपुरी के पाठकन तक पहुंच रहल बा।

सन् १९६४ में, जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य–परिषद् का ओर से, चन्द्रभूषण सिन्हा का सम्पादन में पनरहगो लघुकथाकारन के एक इसगो लघुकथन के पहिलका संकलन 'छोटी–मुटी गाजी मियां' नाम से प्रकाशित भइल। अइसे त संकलित लघुकथा भोजपुरी का प्रारम्भिक दौर के लघुकथा कहइहें स, तबो सभ लघुकथा जिनगी का वास्तविकता से कवनो–ना–कवनो रूप में जुड़ के आपन पहचान बनावे में सफल रहल बाड़ी स। भोजपुरी–लघुकथा के दूसरकी पुस्तक

'जमीन जोहत गोड़' सन् १९८२ में छपल रामनारायण उपाध्याय के चालीस लघुकथन के एकल संग्रह ह। एकर सभ लघुकथा कथ्य आ शिल्प, दूनू स्तर पर सफल बाड़ी स। तिसरका लघुकथा–संकलन 'टुकी–टुकी जिनगी' ब्रजकिशोर आ भगवतीप्रसाद द्विवेदी का संयुक्त सम्पादन में सन् १९९० में छपल, जवना में बारह गो लघुकथाकारन के उनसठ गो लघुकथा संकलित बाड़ी स। पुस्तक के सम्पादक ब्रजकिशोर के अनुसार, "टुकी–टुकी जिनगी' में समय का सत्य के कथाकार लोग बड़ा ईमानदारी से उरहले बा। शिल्प, कसाव, भाषा, कवनो दष्टि से ई लघुकथा उनइस नइखी सन।" भोजपुरी–लघुकथा के चउथका संकलन एह पांतियन के लेखक का सम्पादन में सन् १९९४ में 'तिरमिरी' नाम से छपल, जवना में नवासी गो लघुकथाकारन के एकहे गो लघुकथा दिहल गइल बा। एह संकलन के प्रकाशन से भोजपुरी–लघुकथा के विकास आ लघुकथाकारन के एह विधा के प्रति रुझान के अन्दाजा लागत बा। सन् १९९७ में पांडेय कपिल आ कष्णानन्द 'कष्ण' का सम्पादन में 'एक मुट्ठी लाई' नाम से एकसठ गो लघुकथाकारन के एकहेगो लघुकथा के संकलन प्रकाशित हो के पांचवी कड़ी का रूप में जुड़ल। भगवतीप्रसाद द्विवेदी के पचपन लघुकथन के एगो संग्रह 'थाती' नाम से सन् १९९९ में प्रकाशित भइल, जवना के पांडुलिपि सन् १९९० में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य–सम्मेलन का तरफ से 'पांडेय जगन्नाथप्रसाद सिंह पुरस्कार' से पुरस्कत हो चुकल रहे। सन् २००१ में, गंगाप्रसाद 'अरुण' का सम्पादन में, अनेक लघुकथाकारन के लघुकथन के मिला के एगो संकलन 'अगुआ', सन् २००५ में, जयबहादुर सिंह के लघुकथा–संग्रह 'सपना के सांच', जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य–परिषद् का ओर से प्रकाशित होके आ मनोकामनासिंह 'अजय' के 'खरजिउतिया' भोजपुरी–लघुकथा का विकास के सहयात्री बनल। हमरा जानकारी में इहे नवगो लघुकथा के पुस्तक भोजपुरी में लउकत बाड़ी स। अगर कुछ छूटल पुस्तकनो के जोड़ दिहल जाय, तबो भोजपुरी में प्रकाशित लघुकथा–पुस्तकन के संख्या दस–बारह से ज्यादा ना होई।

भोजपुरी में छपल लघुकथा–संग्रहन आ पत्र–पत्रिकन में छपेवाली लघुकथन के देख के अइसन लागत बा कि भोजपुरी–लघुकथा का भंडार के समद्ध करे खातिर दोसरो भाषा के श्रेष्ठ लघुकथाकारन का लघुकथन के अनुवाद भोजपुरी–पाठकन का सामने आवे के चाहीं, जवनन के पढ़ के भोजपुरी–लघुकथाकारन के कुछ नया दष्टि मिले आ पाठकन के नया स्वाद के लघुकथा से परिचित होरवे के अवसर मिले। सन् १९९० में, हमरा सम्पादन में प्रकाशित भोजपुरी तिमाही 'बिगुल' में, हिन्दी के वरिष्ठ लघुकथाकार डॉ० सतीशराज पुष्करणा के कुछ हिन्दी–लघुकथन के भोजपुरी में अनुवाद प्रकाशित भइल रहे, जवनन के पाठक पसन्द कइले रहले।

लघुकथा के क्षेत्र में हरियाणा के खास पहचान दिलवावेवाला लघुकथाकारन में डॉ० रामनिवास 'मानव' के विशेष स्थान बा। जीवन आ जगत् के विभिन्न पहलुअन पर तेज नजर आ ओकरा के लघुकथा का शिल्प में ढाले के जइसन क्षमता डॉ० 'मानव' में लउकत बा, ओइसन बहुत कम लघुकथाकारन में देखे के मिलेला। व्यक्ति, समाज, देश, दुनिया, घर, परिवार, नेता, मजदूर, आपसी द्वेष, दाम्पत्त्य सम्बन्ध में बिखराव, नारी–शोषण, बुढ़ापा के बेबसी, युवा पीढ़ी का मानसिकता में आइल बदलाव आ शिक्षा, शोध, साहित्य आदि से जुड़ल विषयन के लघुकथा में ढाल के एकरा आयाम के विस्तार देबे में डॉ० 'मानव' के प्रतिभा अपना पूरा क्षमता का साथे सामने आइल बा। उनका लघुकथन के सभ पात्र आदमी के मनोवत्तियन के प्रतीक का रूप में उरेहल बाड़े। एह पात्रन का माध्यम से युग के एगो पूरा तस्वीर देखल जा सकत बा।

डॉ० 'मानव' का लघुकथन के शैलीगत विशेषतो अपना ओर ध्यान खींचे वाला बा, जइसे–'बिना लवटल राम' (वर्णन), 'चैकअप' (विवरण), 'शो–पीस' (उत्तम पुरुष), 'बीजारोपण' (संवाद), 'पत्नी बनाम नारी' (पत्र), 'मैरिड आदमी' (डायरी), 'लाश' (समाचार), 'आ कवि के जनम' (काव्य)। आकार का दष्टि से डॉ० 'मानव' के लघुकथा चार पांतियन से लेके डेढ़ पन्ना तक के आकार में देखल जा सकेले। एह से ई बात बिना हिचकिचाहट के कहल जा सकेला कि लघुकथा के क्षेत्र में जतना सफल शैलीगत प्रयोग डॉ० 'मानव' कइले बाड़े, ओतना शायदे केहू लघुकथाकार कइले बा।

डॉ० 'मानव' के दूनू लघुकथा–संग्रह 'घर लौटते क़दम' आ 'इतिहास गवाह है' में कथ्य के विविधता देखते बनत बा। 'टॉलरेन्स', 'निरापद', 'समझदारी', 'संस्कार', 'स्टेटस', 'मुक्ति' आदि कुछ महत्त्वपूर्ण लघुकथा बाड़ी स, जवन जिनगी का समग्रता के रूपायित करत बाड़ी स। 'घर लौटते क़दम' लघुकथा में महानगरीय जिनगी में आदमी के पहचान गुम होरवे के पीड़ा के बहुत सटीक चित्रण कइल गइल बा। अहसहीं 'शो–पीस' में अपना जीयत बाप के उपेक्षा करे वाला बेटा सतीश द्वारा उनका मरला का बाद उनकर बड़हन फोटो सुनहरा फ्रेम में मढ़वा के टांगल आदमी का व्यवहार के विसंगति के उजागर करता बा। 'व्यवस्था' लघुकथा में भ्रष्टाचार, दमन, अन्याय आ आतंक का बुनियाद पर टिकल वर्तमान समाज का गठन पर चोट कइल बा। अइसहीं 'दूरदर्शिता' में भारतीय राजनीतिज्ञन का ओह पाखंड भरल मानसिकता के उजागर कइल बा, जे ऊपर से नैतिकता आ सदाचार के दुहाई देत बाड़े, बाकिर भीतरे–भीतर भ्रष्टाचार के समर्थक बाड़े। डॉ० 'मानव' के लघुकथा–संग्रह 'इतिहास गवाह है' के लघुकथा भी बहुत मर्मस्पर्शी आ पाठकन का मन पर अमिट छाप छोड़ेवाली बाड़ी स। 'जड़ कटल गाछ' में लेखक जमीन से कटला के व्यथा उजागर करत बाड़े। माई के ममता कइसे दोसरो पीड़ित परिवार

तक पहुंच जाला, एकर चित्र 'माई' लघुकथा में उकेरल बा। 'जीवन–रेखा' में बाप–बेटा का बिछोह के हृदयस्पर्शी चित्रण बा। 'दोसरकी औरत' में पराई औरत के प्रति आकर्षित होखेवाली पुरुष–मानसिकता के चित्र देखे लायक बा। 'शान्ति के द्वीप' के मानवीय करुणा आ साम्प्रदायिक सद्भाव से सराबोर लघुकथा कहल जा सकेला। डॉ० 'मानव' चूंकि शिक्षा, शोध, साहित्य आ पत्रकारिता से जुड़ल बाड़े, एह से कुछ लघुकथन का माध्यम से, ओहू क्षेत्रन में व्याप्त विसंगतियन के चित्रित करे में सफलता पवले बाड़े। 'शोध–सन्दर्भ' में अपना शोधछात्र के शोधपत्र संशोधन करे के बहाने कुछ दिन ले अपना लगे रोक के निर्देशक द्वारा बाद में अपना नाम से छपवा लिहल, 'मोर्चाबन्दी' आ 'तटस्थ लोग' में महाविद्यालय प्रबन्ध–समितियन में होखेवाली मनमानी, 'निर्णय' में विभागाध्यक्ष द्वारा 'जूनियर' पर अकारण धौंस जमावे के प्रवत्ति, 'चेतावनी' में प्रिन्सिपल द्वारा अपना 'जूनियर' पर गलत आरोप लगा के प्रताड़ित कइल आ 'चोट' में अपना व्यक्तिगत फायदा खातिर समारोह के मुख्य अतिथि बना के केहू के उपकत करे का प्रयास के उजागर कइल बा। 'पहिल प्रति', 'दष्टिकोण', 'मान–अपमान', 'डॉ० अश्वमुख कुटिल', 'दुमदार' आदि में साहित्य आ पत्रकारिता–जगत् का विसंगतियन के अपना अनुभव का आंच में पका के डॉ० 'मानव' यादगार लघुकथा बना देले बाड़े। डॉ० 'मानव' का लघुकथन में व्यक्ति, समाज, राजनीति, शिक्षा का साथे आउर अनेक सन्दर्भन का कुरूप सच्चाई के साक्षात्कार बहुत संवेदनशीलता का साथे भइल बा।

कुछ लघुकथन के शीर्षक खातिर अंगरेजी शब्दन के प्रयोग कइल बा, जवन विषयवस्तु का दष्टि से सटीक लागत बा। एह से हम ओकर अनुवाद ना क के ओहनी के जस–के–तस छोड़ देले बानी। हिन्दी के कारक–चिह्न लागल शीर्षकन में आइल हिन्दी–शब्दन के बदल के ओकरा जगह पर भोजपुरी–शब्दन के प्रयोग कइल गइल बा। अनुवाद के क्रम में हमार प्रयास रहल बा कि हिन्दी के प्रचलित तत्सम शब्दन के भोजपुरीकरण करे खातिर ज्यादा तोड़–मरोड़ ना कइल जाय। भोजपुरी के हिन्दी से बहुत दूर ना रखके ओकर सहयोगी आ सहचर का रूप में साथे आगे बढ़े दिहल जाय।

डॉ० रामनिवास 'मानव' के उपर्युक्त दूनू लघुकथा–संग्रहन के अनूदित लघुकथन से भोजपुरी–लेखकन के नया ऊर्जा मिली आ भोजपुरी का पाठकन का हिन्दी–लघुकथा के विकसित रूप आ ओकरा ऊंचाई के अन्दाजा लाग सकी। साथ ही, हिन्दीतर भाषा में लिखल जायेवाली लघुकथन के भोजपुरी में अनूदित क के पाठकन तक पहुंचावे का प्रवत्ति के बलो मिली। उमेद बा, हमरा एह प्रयास के भोजपुरी–जगत् में स्वागत होई। इत्यलम्।

१८१, आवास–विकास कॉलोनी,
गीता वाटिका, गोरखपुर (उ०प्र०)

–सूर्यदेव पाठक 'पराग'
(अनुवादक)

।।अनुक्रम।।

घर लवटल कदम

१.	रिजर्वेशन	: १३	२६.	चेहरा–मोहरा	: ४८
२.	बिना लवटल राम	: १४	३०.	सांप	: ४६
३.	शो–पीस	: १६	३१.	टिकट के आधार	: ५०
४.	स्टेटस	: १८	३२.	दूरदर्शिता	: ५१
५.	कसक	: १६	३३.	व्यवस्था–परिवर्तन	: ५२
६.	बुढ़ौती के सांच	: २१	३४.	नियति	: ५३
७.	बाप के दर्द	: २२	३५.	व्यवस्था	: ५४
८.	बीजारोपण	: २३	३६.	मुक्ति	: ५५
६.	असमंजस	: २५	३७.	समाधान	: ५६
१०.	पोस्टकार्ड	: २६	३८.	निरापद	: ५७
११.	गोली	: २७	३६.	कारण	: ५८
१२.	रोशन लाल	: २८	४०.	मोहरा	: ५६
१३.	सास–बहू	: २६	४१.	गरीब के माई	: ६०
१४.	बहू के समझ	: ३०	४२.	जान–माल के कीमत	: ६१
१५.	एहसास	: ३१	४३.	अच्छा	: ६२
१६.	टॉलरेन्स	: ३२	४४.	सभ के कहानी	: ६३
१७.	औरत के भूख	: ३३	४५.	समझदारी	: ६४
१८.	पत्नी के भविष्य	: ३४	४६.	नेम–प्लेट	: ६५
१६.	पत्नी बनाम नारी	: ३५	४७.	चैकअप	: ६६
२०.	सरप्राइज	: ३७	४८.	पहचान	: ६८
२१.	हार्ट–अटैक	: ३६	४६.	मानदंड	: ६६
२२.	मैरिड आदमी	: ४०	५०.	हैसियत	: ७०
२३.	टू–लैट	: ४२	५१.	घर लवटल कदम	: ७१
२४.	तिरिया–चरित्तर	: ४३	५२.	संस्कार	: ७२
२५.	लाश	: ४४	५३.	यात्रा–वत्त	: ७३
२६.	काफिर	: ४५	५४.	आवेवाला के भय	: ७४
२७.	धर्म–हिंसा	: ४६	५५.	उत्थान–पतन	: ७५
२८.	धर्म–परिवर्तन	: ४७	५६.	कवि के जन्म	: ७६

।।अनुक्रम।।

इतिहास गवाह बा

१. परिचित : ७६
२. जड़ कटल गाछ : ८०
३. खेलौना : ८२
४. बहाव के सामने : ८३
५. सपना के पूर्ति : ८४
६. तमाचा : ८५
७. इतिहास गवाह बा : ८७
८. माई : ८८
९. जीवन–रेखा : ८९
१०. रिश्ता के निमाह : ९५
११. तहरा के का बताईं ? : ९१
१२. दोसरकी औरत : ९२
१३. घर–बेघर : ९३
१४. सच्चा पति : ९४
१५. क्लेम : ९५
१६. कद : ९७
१७. बाप बनला के मिठाई : ९८
१८. नरेन्द्र के घर–आपसी : ९९
१९. दिवाली के मिठास : १००
२०. एकमुश्त समाधान : १०१
२१. आग : १०२
२२. नाव : १०३
२३. बहाना : १०४
२४. फ्रिज : १०५
२५. दर्द–बोध : १०६
२६. बिआह के सगुन : १०७
२७. सिसकी : १०८
२८. पहिलका अनुभव : ११०
२९. अतीत से कटल वर्तमान : १११
३०. प्रसंग : गोलीकांड : ११२
३१. शोध–सन्दर्भ : ११३
३२. मोर्चाबन्दी : ११५
३३. तटस्थ लोग : ११६
३४. निर्णय : ११७
३५. चेतावनी : ११८
३६. चोट : १२०
३७. बोझ : १२१
३८. अक्स : १२२
३९. पहिल प्रति : १२३
४०. दष्टिकोण : १२४
४१. मान–अपमान : १२६
४२. डॉ० अश्वमुख कुटिल : १२७
४३. दुमदार : १२८
४४. हार–जीत : १२९
४५. जय श्रीराम : १३०
४६. आतंकवादी : १३१
४७. शान्ति के द्वीप : १३२
४८. धर्मान्तरण : १३४
४९. आश्रय : १३५
५०. छत : १३६
५१. लालटेन : १३७
५२. बुढ़ापा–पेंशन : १३९
५३. रामबाण : १४१
५४. दोसर फैसला : १४२
५५. धन्यवाद–मुद्रा : १४३
५६. राष्ट्र के सत्त्व : १४४

घर लवटल कदम

संदीप
राशिनकर

रिजर्वेशन

ओकरा एगो तेज झटका लागल, बाकिर खचाखच भीड़ में फंसल रहला से गिरे से बच गइल। बेमारी से कमजोर हाथ ओकरा के डंडा से आउर ज्यादा लटकवले रखे में असमर्थ रहे। एह से ऊ लगेवाली तीन सीट पर लेटल बच्चा के थोड़ा एक तरफ क के बइठ गइल।

"अरे–रे, अंधा बाड़ का ? लेटल बच्चो देखाई नइखे देत। मरब का एकरा के ?" पीछे के सीट पर बइठल सफेदपोश महाशय ओकरा पर पिल पड़ले।

"बेमार बानी भाई !" लड़खड़ाइल आवाज में ऊ कहलस–"थोड़ा–सा जगह में का फरक पड़त बा। बच्चा के अपना गोदी में लेटा लेत बानी।"

पीछेवाला महाशय आउर तेज आवाज में बरसले–"बस–बस, रहेद। ई तीनू सीट एकरा खातिर रिजर्ब बा। टिकट लेके बइठल बानी, अइसहीं ना। सीटे चाहत रहे, त कवनो दोसरा बस से आवेला। उठ, एकरा के सूते द।"

ऊ बेचारा लजइला जइसन होके उठके खड़ा हो गइल। तबे, पीछे के दोसरा सीट पर बइठल एगो दोसर सज्जन आवाज़ लगवले–"भाई साहेब, रउए एने आ जाईं। ई सीट केहू खातिर रिजर्व नइखे। जहां तीन आदमी बाड़े, उहां चार सही।"

आ ओह सीट पर बइठल तीनू आदमी घुसुक के एक तरफ हो गइले।❐

बिना लवटल राम

दिवाली लक्ष्मी के तेवहार मानल जाला, बाकिर खास क के ऊ आवेला महीना का आखिरी सप्ताह में। अइसनो स्थिति में व्यापारी लक्ष्मी–पूजा कर लेले, बाकिर बेचारे नौकरीवाले मने–मन सोचते रह जाले। महीना का आखिरी सप्ताह आवत–आवत उनकर जेब एकदम खाली हो जाला आ राशन, सब्जी, प्रैस आदि सभ के बिल बाकी रह जाला। फेर छुट्टियो दू चारगो ना पड़े, त पटाखा फुस्स होरवे भा ना, मन जरूरे फुस्स हो जाला।

दशरथ–नन्दन रामचन्द्रजी त दिवाली का दिने अयोध्या आपस आ गइल रहले, बाकिर हमार लघुकथानायक रामचन्द्र प्रायः घरे ना पहुंच पावस। ओइसे उनका मन में एह दिन अपना घर पर, घर वाले बूढ़ माई–बाप का लगे रहे के इच्छा भगवान रामो से ज्यादा रहेला। कारण, रामजी के पिता जी त सरगवासी हो गइल रहले, बाकिर एह रामचन्द्र के बाबूजी भगवान का कपा से अस्सी बरिस के उमिरो में अभी ले सही–सलामत बाड़े। बाप के सुख उनका भाग्य में खूब लिखल बा।

एकरा के संजोगे समझीं कि एह बार दिवाली का लक्ष्मी–पर्व पर रामचन्द्र के जेब सौ–सौ के नोट से भरल बा। कुछ त पहिलके महीना के तनखाह देर से मिलल आ कुछ दिवाली पहिले आ गइल। इहो संजोगे बा कि अबकी छुट्टियो दू–एक दिन का बदले पूरा पांच दिनके पड़ रहल बा। एहसे ऊ बहुत खुश बाड़े। चल, अबकी बेर त दिवाली पर घरे रहब। माई–बाप बूढ़ बाड़े, पता ना कब का हो जाय।

"सीता !" मानलीं इहे उनका पत्नी के नाम ह–"काल्ह सबेरे पांच–बीस वाली बस से घरे चलब स आ दू पहर ले पहुंच जाएबस। एही हिसाब से सभ तैयारी रखीह।"

"का करब स घरे चल के ? हर साल त दिवाली सूखले निकलिए जाला, अबकी बेर बखत पर तनखाह मिलल, त बोरिया–बिस्तर बान्ह ल। हम पूछत बानी कि परेशानी छोड़ के का मिली उहां गइला से ? पांच–सात सौ से कम खर्च ना होई।"

"अरे भाई, तू समझत काहे नइखू ? बात पइसा–खरचा के ना, भावना के होले। तेवहार के मौका पर अपना बूढ़ माई–बाप का लगे रहल का कम ह।"

"ना, हम ना जाएव। जाहीं के बा, त रउआ चल जाईं। रउआ त अपना माई–बाप का अलावा केहू पर ध्याने नइखे। हमरा त घर आ लइकन के पढ़ाई–लिखाई, सभकर ध्यान रखे के बा।"

"भाग्यवान, सर्दी शुरू हो गइल बा। घरे जा के इहो त देखे के बा कि केकरा लगे कपड़ा–बिस्तरा बा आ केकरा लगे नइखे। जाएब स, त दूनू काम हो जाई।"

"रउआ सोचत बानी कि अपने बनवाएब तबे कपड़ा–लत्ता बनी। राउर आउरो त तीन भाई बाड़े। तीनू कमाले। का उनका तनिको ध्यान ना होई अपना माई–बाबू के ? ऊ बनवा दीहें।"

खैर, निष्कर्ष इ निकलल कि सीता घरे जाय खातिर तैयार ना भइली। अकेले अयोध्या जा के रामचन्द्रो जी का करिते। उनका अइसन लागल कि बनवास के एक बरिस आउर बढ़ गइल बा। ऊ मने–मन सोचत बाड़े–"काश, एहू बेर तनखाह समय पर ना मिलित ! जेब खाली भइला से घर ना जाय के कम–से–कम बहाना त होइत।"❐

शो-पीस

हमरा उनका से लइकाइएं से लगाव रहे। उनका लइकन नियर हम हूं उनका के बाबूजी कहत रहीं। उहो हमरा के कबो गैर ना समझले। झूठ काहे बोलीं, ऊ बखत–बेबखत रुपया–पइसा से हमरा परिवार के मदतो करत रहले। हमार नोकरिओ लगवावे में ऊ कवनो कसर ना छोड़ले। आज जे बाबूगीरी कर रहल बानी, ई उनके भाग–दउड़ के सुफल ह।

बाबूजी के पूरा नाम रहे– सेठ महेश दत्त। बाकिर ज्यादा लोग उनका के बाबूएजी कहत रहे। शहर भर में नीमन इज्जत रहे। आपन छापाखाना चलावत रहले। जवानी में अखबारो निकालत रहले। एह से थाना–कचहरी तक नीमन पहुंच रहे। लोग उनका के बहुत मानतो रहे।

उनका एह बात के बराबर बहुत दुःख रहे कि उनकर एकलौता बेटा आवारा हो गइल। सचहूं एगो बाप खातिर एह से बड़हन दुःख के बात होइओ ना सकेला। सतीश के शिकायत रहे कि बाबूजी उनका के प्यार ना करस। बराबर दुरदुरावत रहेले, जइसे ऊ उनकर बेटा ना होके पराया होखस। जब दू बरिस के रहले, त कपार पर अइसन डंटा मरले रहस कि ओकर चिन्हासी अबले पड़ल बाटे। फेर ऊ आवेश में आ के उल्टा–सीधा बोले लागस–''ई बाप थोड़े हउवे, कसाई हउवे। अइसन बाप के मुंह ना देखीं....।'' आदि।

हम उनका के बहुत समझाईं–''भइया, जे आदमी, हमरा जइसन पराया लइका के अतना प्यार करत बा, ऊ अपने बेटा के ना करी भला ! आ फेर उनका तहरा के छोड़ के कवन दोसर बेटा बइठल बा, जवना के प्यार करिहें।'' बाकिर हमरा बात के सतीश पर कवनो असर ना होखे। ऊ गुस्सा में भर के घर से निकल जात रहले आ फेर बीतला रात में घरे लवटस।

हम जब कबो छुट्टी में आईं, बाबूजी से जरूर मिलत रहीं। उनका बातां में बहुत मिठास होत रहे। दुनिया–भर के कहानी–किस्सा सुनावस, आल्हा–ऊदल से लेके सूर आ कबीर के पद–भजन, सभ। सचहूं उनका लमहर अनुभव रहे। कबो–कबो उनका बात से लागे, जइसे ऊ मने–मन सोचत होखस, ''काश, उनको बेटा उनका के ओतने सम्मान दीत ! एही तरे

उनका लगे आके बड़ठित आ सुनित।'' बहुत कचोट रहे उनका मन में। खैर, पिछिला महीना में, सत्तर बरिस का उमिर में, हार्ट–अटैक से बाबूजी के सरगवास हो गइल रहे।

हम छुट्टी में अइलीं त हरमेसा के तरह एहू बेर उनका घरे गइलीं। बइठका में सुनहरा फ्रेम में जड़ल उनकर बड़हल फोटो लागल देखके अचरज भइल। शायद सतीशे ऊ फोटो लगववले रहस। हमरा के फोटो का ओर ताकत देख के सतीश हमार भाव समझ गइले। बोलले–''अभी पिछिलके सप्ताह में बनववले बानी। अच्छा लागत बानू ?''

हमरा बुझाइल, सतीश खातिर बाबूजी का तस्वीर के महत्त्व 'शो–पीस' से अधिका नइखे।❐

स्टेटस

प्रभु साल–भर बाद छुट्टी में आइल बाड़े। एह बीच ऊ पइसो ना भेजले। जरूर जोड़ के रखले होइहें। दू–तीन हजार से कम का ले आइल होइहें। चल अब सभ कर्जदारन आ हथ–उधारिअन से पीछा छूट जाई। तीन हजार के करीब त होइबे करी सभ मिला के।

तगादा करेवालन के प्रभु का आवे के उमेदे पर रोक के रखले रहस गनपत। सभका से कहस–''अब का चिन्ता बा ! प्रभु कवलेज में लेक्चरर हो गइले। सभे पी०डी० शर्मा कह के बोलावेला। ऊंचा रुतबा बा साहेब ! अढ़ाई हजार तनखाह होई, एकरा से कम ना होई।'' आ तगादावाले उमेद लगा के चल जास।

पूरा सप्ताह हो गइल प्रभु का अइले, बाकिर ऊ अबले एको रुपया ना दिहले। गनपत सोचले, शायद भुला गइल बाड़े, जइहें तब दे दीहें। पइसा ले आइले ना होखस, ई त नइखे हो सकत। ऊ कई बेर करजा–खरचा के बात चलवले, बाकिर प्रभु "हां–हूं" क के टार दिहले। पइसा मांगल उहो उचित ना समझले।

आज प्रभु जा रहल बाड़े। बहुत जल्दी छुट्टी निकल गइल। कबो–कबो समय कतना तेज चले लागेला। काका हरमेसा के तरह नहर तक छोड़े अइले, त ऊ (प्रभु) बात चलवले–''अबकी बेर कुछ ना बंचल काका ! शहर में अनघा खर्चा बा, स्टेटस का हिसाब से रहे के पड़ेला। फेर एक दिन कुन्नू जिद्द करे लगली, त टी०वी० लेबे के पड़ गइल।''

''त का भइल बेटा ! हम कब पइसा मंगलींह। होखे त दे दिहल कर, ना त कवनो बात नइखे। घर में कवनो बात के कमी थोड़े बा। तू खुश रह, लइकन के ध्यान रख। खाये–पीये में कंजूसी ठीक नइखे।'' सभ–कुछ एके सांस में कहके काका बहू–बेटा के आशीर्वाद दिहले, पोती कुन्नू के माथ पुचकरले आ वापिस मुड़ चलले।

मुड़ते गनपत का आंख के सोझा कईगो चेहरा एके साथे घूमे लागल। ऊ समझ ना पावत रहस कि कहां से आई अब तीन हजार रुपया। अब उनका अपना इज्जत से ज्यादा एह बात के चिन्ता रहे कि लोगन के पइसा समय पर ना चुकावल गइल, त बेटा का 'स्टेटस' के का होई।❐

कसक

गांव के जवान पढ़–लिख के शहर में नौकरी लागते अपना जड़ आ जमीन से कट जाला। शहर जा के ऊ अपना गांव के अभावन आ अतप्तिअन के बदला लिहल शुरू कर देला। ओकरा एह प्रतिशोध के शिकार माई–बाप होले, काहे कि अपना के गरीब घर में पैदा करे के सीधा जिम्मेदार ऊ उनके के मानेला।

हमरा लघुकथा–नायक श्रीमान् का साथहूं इहे भइल। श्रीमान् सिंचाई–विभाग में ओवरसियर बाड़े। तनखाह का बादो मोट आमदनी बा। अब ऊ कपड़ा के जूता से लिवर्टी शूज तक आ लट्ठा के कुर्ता–पैजामा से सफारी सूट तक पहुंच गइल बाड़े। पिछिला साल उनकर बिआह भइल ह। एह से समूचा कमाई पति–पत्नी के बनाव–सिंगार, खान–पान आ पिकनिक–सिनेमा में खर्च हो जाता। माई–बाप खातिर कुछ नइखे बांचत। ओह लोग के हालत पहिलहूं जइसन नइखे रह गइल। जे कुछ रहे से, श्रीमान् का पढ़ाई आ बिआह में खर्च हो गइल। उमर नियर खेतियो जवाब दे गइल। एह से माई का लुगड़ी के पेवन आ काका का चेहरा पर के झुर्री आउर बढ़ गइल बा।

श्रीमान् कबो–कबो घरे आवेले। पत्नी के गांव में परेशानी मत होखो, एहसे रास्ता में ससुरार छोड़ आवेले। घरवालन के रुके खातिर कहला पर शान देखा के कहेले–''नीलम गुड़गांव में बाड़ी, अकेले डेरइहें। एहसे आजे जाय के पड़ी।''

काल्ह ऊ घंटे–भर बाद जाय लगले, त काका मन भारी क के कइले–''अतना लगे रहलो, पर महीना–महीना दिन पर आवत बाड़। आवत रह बेटा ! बहुओ के साथे ले आइल कर। हम त कवनो हरमेसा बइठल रहब ना। अब त साले दू साल ले बानी।''

''से त ठीक बा काका ! बाकिर गांव में छव बिगहा ऊसर जमीन, कच्चा पुश्तैनी घर आ तहरा अलावा बड़ले का बा, जवना खातिर आइल जाय।''

''तहार मरजी बेटा !'' कह के काका श्रीमान् के विदा क दिहले, बाकिर उनका देर रात ले नींन ना आइल। ऊ सोचे लगले कि बेटा खातिर उनकर महत्त्व ऊसर ज़मीन आ कच्चा घरो बराबर बा कि ना।❐

बुढ़ौती के सांच

रामसिंह परसों गइले, श्यामसिंह काल्ह आ लाभोसिंह आज चल गइले। घर में रह गइले सिर्फ बूढ़ बाप आ तीर्थ माई।

मेहरसिंह संचहूं आज बहुत टूटल जइसन लागत बाड़े। थोड़ ही देर पहिले तक इहां रौनक–मेला रहल, दिवाली रहे, अब सभ सुनसान हो गइल बा। तीन–तीन बेटा भइले, बाकिर तीनू परदेसी हो गइले। सभे अपना–अपना दाना–पानी में मस्त। आंरिवन से दूर आ पहुंच से दूर। साल–छव महीना में कबो–कबो आवेले एकाध दिन खातिर, जइसे मेहमानी के रसम निमाहे के होखे। एकरा से त नाहिंय, आइल अच्छा। मोह–ममता जाग जाला, ममता हरियरा जाला आ जाते फेर उहे हाल। पता ना, बेटा खातिर दुनिया एतना चाव काहे करेला। का इहे ह बेटा के सुख ? पाल–पोस के, पढ़ा–लिखा के सेयान कर दीं आ फेर उड़े के सीखते फुर्र।

एह खयालन में मेहरसिंह डूबत–उतरात रहले कि भागवन्ती के आवाज उनका के झकझोर दिहलस–''अइसहीं पसरल रहब का ? कतना काम पड़ल बा। करब ना, त खइब कहां से ? आसाढ़ बरिसेवाला बा, बाकिर इहां ना हर के जोगाड़ बा आ ना खेत के खियाल।''

भागवन्ती का बात के मेहरसिंह कबो गम्भीरता से ना लिहले रहले, बाकिर आज उनका लागल, जइसे बुढ़िया सांच कहत बिया। एहसे ऊ घुटना पकड़ले उठ के खड़ा भइले–''उठत बानी भाग्यवान ! तू केकरा के दू घड़ी गोड़ सीधा कर देलू।''❐

बाप के दर्द

जवन बाप लड़काईं में ओकरा के सपना का पलना में झुलवले रहले, बूढ़ भइला पर उहे बेटा खातिर बोझा बन गइले। आंख बुता गइल, दांत झड़ गइल, हाथ–पांव में जान ना रह गइल, त बाप पूरा तरह से बेटा पर आश्रित रहे लगले।

बाहर–भीतर ले गइल, नहवावल–धोवावल, खियावल–पियावल, दवा–दारू कइल, कतना काम होला बूढ़ आदमी के। एह से बूढ़ बाप जब कबो कवनो काम खातिर कहत बाड़े, त बेटा झुंझला उठत बा, बड़बड़ाय लागत बा। ई रोज के बात हो गइल रहे। बाप मन मार के रह जात रहस।

आज बेटा दवा दिहल भुला गइल, त बाप इयाद दियवले–''रामजी, लागत बा, तू हमरा के दवा दिहल भुला गइल बाड़।''

''का–का इयाद रखीं। कवनो एगो बात होखे, त इयाद रहो।''

''बस बेटा, बस !'' बाप के दर्द फूट पड़ल रहे–''तू सिर्फ एगो बात इयाद रख ल कि एक दिन तहरो बूढ़ होखे के बा।'' ❐

बीजारोपण

''का सोचत बाडू रामरति ?''

''कुछुओ त ना।''

''ना, कुछ त जरूर सोच रहल बाडू।''

''अब का सोचे के बा।''

''शायद सोच रहल बाङू कि सम्पत्ति का बंटवारा के बाद अब भाइयन में माइयो–बाप के बंटवारा होई।''

''ई त होखहीं के बा, फेर का सोचे के बा।''

''सोचे के ई बा कि देखीं के केकरा हिस्सा में आवत बा।''

''कोई केहू का हिस्सा में आवे, एहसे का फर्क पड़त बा। दूनू त आपने बेटा हउवे, केहू का लगे रह।''

''तहरा अजीब ना लागी ?''

''काहे ?''

''सगरी अमिर साथ रहलीं, अब बुढ़ौती में अलग–अलग।''

''अइसन बात रउआ काहे शुरू करत बानी।''

''दिल दुखत बा शायद।''

''राउर नइखे दुखत ?''

''एगो बात पूछीं रामरति ?''

''हं, पूछीं।''

''तहरा एगो बात इयाद बा ?''

''कवन ?''

''बड़का पेट में रहे, तब ...।''

''तब का ?''

''हम कहत रहलीं कि लड़की होई आ तू कहत रहलू कि लइका होई।''

''हं, इयाद बा, सभ इयाद बा। अइसनो बात भुलाला का ?''

''एही बात पर हमनी में नोक–झोंक हो गइल रहे।''

''इहो इयाद बा।''

''तू कहले रहलू कि हम लइका लेब आ हम लइकी लेबे के चहले रहीं।''

''हं, बिलकुल।''

''रामरति, हमरा लागत बा....।''

''का ?''

''हमनीं बंटवारा के बीया ओही दिन बो देले रहीं।''

''शायद रउआ ठीक कहत बानी।''❐

असमंजस

ऊ असमंजस में बाड़े। कुल्ह सौ रुपया उनका जेब में बाटे। दस दिन बाद दिवाली बा। घरे पइसा भेजस कि ना, ऊ समझ नइखन पावत।

''घर ? हल्दी–नमक, बुहारी–बर्तन, जूती–कपड़ा, कुछुओ त नइखे घरे, छव आदमियन के अलावा। ऊ सौ–के–सवो रुपया भेज देस, त एसे का फरक पड़ी। एक लोटा पानी त छव आदयिन के हलको तक ना पहुंची। तब का ई ठीक नइखे कि घर के छव जमा दू, कुल्ह आठ आदमियन में से दूगो के दिवाली त रंग–चाव से मने। यानी ई सौ रुपया.... ।'' ऊ मने–मन सोचत बाड़े।

''लाजवन्ती !'' ई उनका पत्नी के नाम ह–''जल्दी तैयार हो जा। 'सीमा' में पिक्चर बदल गइल बा। तीन से छववाला 'शो' ठीक रही नू ?''❐

पोस्टकार्ड

बार–बार बोलवला के बावजूद ऊ कई साल के बाद जीजी से मिले गइले। उदास जीजी के देखके ऊ सन्न रह गइल रहले। घर में अभाव आ जीजा के लाइलाज बेमारी उनका के असमये में बूढ़ बना देले रहे। बिआह का साले–भर बाद पता ना जीजी का सोहाग के केकर नजर लाग गइल। सुख के बेल देखते–देखत सूख गइल रहे। तब से अबले, पूरा बीस साल के लमहर सफर जीजी जेठ के जरत दुपहरी में खाली गोड़े चलते त पार कइले बाड़ी।

ऊ चले लगले, त जीजी उनका गला से लाग के फूट–फूट के रोवे लागल रहली–''भइया, आवत रहिह। अब त समय कटले नइखे कटत। बहुत थाक गइल बानी। तू आ जाल, त दिल कुछ हलुक हो जाला। गली–मोहल्लावालनो के लागे कि एको आदमी एकरा आगे–पीछे बा।''

ऊ भविष्य में आवत–जात रहे के हुंकारी भरले रहस–''जरूर आएब जीजी, एम०ए० के पढ़ाई करत रहलीं हं, अब ऊ पूरा हो गइल। तू जानते बाडू कि नौकरी का साथे पढ़ाई कइल कतना मुश्किल ह। एही से ना आवत रहलीं हं।''

''भाई, मुकेशो के ध्यान रखिह।'' बड़ा उमेद रहे जीजी के–''ऊ दसवीं कर गइल। तू त शहर में रहेल। कवनो छोट–मोट नौकरी मिले, त ओकरो के लगावे के कोशिश जरूर करिह।''

कुछ करे के पक्का आश्वासन दे के ऊ चल अइले। बाकिर मुकेश खातिर का करस, ई समझ नइखन पावत। ओकरा के कहीं फैक्ट्री–वैक्ट्री में रखवावल जा सकत बा। बाकिर फैक्ट्रीओ में चक्कर लगावे खातिर छुट्टी लेबे के पड़ी आ ओतना छुट्टी उनका लगे बा ना। एको 'विदाउट पे' हो गइल, त महीना–भर के बजट 'अपसैट' हो जाई। बाकिर कुछ त करे के पड़ी।

आ ऊ आलमारी से पोस्टकार्ड निकाल के लिखे लागत बाड़े–''जीजी, तू कवनो तरह के फिकिर मत करिह। भाग्य के चक्कर ह, जे ई दिन देखे के पड़त बा। बाकिर मौसम हरमेसा एक जइसन ना रहेला। समय के चक्कर पूरा होते सभ अपने–आप ठीक हो जाई। हमरा से जवन हो सकी, तवन त हम करबे करब।''❐

गोली

ऊ 'स्टेटस–सिम्बल' समझ के दुनाली खरीद लिहले। सुरक्षा के गारंटी त बड़ले बा, रौब बा से अलग। एही से त नेता से अभिनेता ले आ दरोगा से दस नवम्बरी ले, सभे पिस्तौल लटका के घूमत बा। पिस्तौल खरीदल उनका बूता से बाहर रहे, एह से दूनालिए खरीद लिहले। बाकिर ओकरा के देख के घर–बाहर के केहू आदमी खुश ना रहे।

स्वजन–परिजन के प्रतिक्रिया देखीं।

माई : ''निगोड़ी बन्दूक हमरा कवना काम के बेटा ! लड़ल बाभन के धर्म ना ह।''

बाप : ''इनका त पइसा बर्बाद करे से मतलब बा। भला इनका से केहू पूछे, का कपार में मरिहें बन्दूक के। फौज–पुलिस में जे होखस, से रखस बन्दूक। खाली ठकुराई में का रखल बा !''

भाई : ''अब बन्दूक से भाई साहेब शिकार खेलिहें। सभे वाहवाही दी–"वाह, रामानन्द शर्मा के जवाब नइखे। सूरमा हउवन।''

पड़ोसी : ''बेटा, बन्दूक वगैरह बाद में खरीदीह। घर में पच्चीस बरिस के कुंवार बहिन बइठल बिया, पहिले ओकर हाथ पीयर कर। कहीं कुछ ऊंच–नीच हो गइल त...।''

ऊ निराश हो गइले। बन्दूक खरीद के शायद गलत कइले। गीता यानी उनकर बहिन। बन्दूक देखके पुलक उठल–''भइया ! बन्दूक खरीद लह। आपन बन्दूक ह नू भइया, हमरो के बन्दूक चलावे के सिखइब नू ?''

''हं।'' ऊ हामी भरले।

''एह से एके गोली में आदमी मर जाला नू भइया ?''

बहिन के सवाल सुनके ऊ सन्न रह गइले। उनका लागल, जइसे बन्दूक के बिना चलले गोली उनका आर–पार निकल गइल बा।❐

रोशन लाल

रोशन लाल अतना भावुक हो सकेला, हम एकर कबो कल्पनो ना कइले रहीं। ऊ बादाम ह– बाहर से कड़ा, बाकिर भीतर से एकदम कोमल आ चिक्कन।

सांझ के चार बजे ऊ अपना लइकन के स्कूल से लवटे के इन्तजार करे लागल, त हम पूछलीं–''तोरा लइकन का कारन बहुत परेशानी उठावे के पड़त बा, दस बरिस से तें कठिन तपस्या करत आ रहल बाड़े। तें दोसर बिआह काहे ना कर लिहले ?''

ऊ गम्भीर हो के बीड़ी सुनगावे लागल, बाकिर बोलल कुछउ ना। रोशन अटेली में हमरा चूना का भट्ठा पर पिछिला बारह बरिस से काम कर रहल बा। दू–अढ़ाई किलोमीटर दूर गांव से आवेला। सबेरहीं नहवा–धोवा के, तैयार क के, अपना लइकनो के साथे लेले आवेला। फेर लइका स्कूल चल जाले स आ ऊ काम में लाग जाला। सांझ के स्कूल से आके लइका एहीजा खेलत रहेले, रात के साथ ही घरे लवटेले।

''जब तोर मेहरारू मरल, तें जवान रहले, घरो–बार ठीक रहे, तीनगो छोट–छोट लइकन के कारन मजबूरिओ रहे, तबहूं तें दोसर बिआह ना कइले।'' हम फेर ओकरा के कुरेदे के चहलीं।

''का करब साहेब पूछ के ?'' ओकरा आंख के कोर भींज गइल रहे–''ई एगो दर्द भरल कहानी बा।''

''कवन कहानी, उहे त हम जाने के चाहत बानी।''

''ऊ हमरा आ विमला का बीच के बात ह। साथ निमाहे के वादा रहल, बाकिर ऊ पांच साल का बादे साथ छोड़ गइल। विमला बात के बहुत कच्चा निकलल बाबूजी।''

''ओह, सचहूं।''

''एह लइकन में हमरा विमला के अक्स देखाई पड़ेला, एही से साथे राखीले। हम ओकरा के बतावे के चाहत बानी कि रोशन लाल बात निमाहे के जानत बा। मर्द के त बाते नू होला।''❐

सास-बहू

सात बजे ले बहू कमरा से बाहर ना निकलल, त सास, बड़का का बाबूजी जी के सबेरे के चाय के कप थम्हावत, बड़कू के आवाज लगवली–''बहू, अभी ले ना उठल !''

''माई, देर ले सुते के आदत बा ओकरा, जल्दिए समय पर उठे लागी। सबेरे के चाय तू ही बना दिहल कर।'' बड़कू अपना नई–नबेली के पक्ष लेत माई से कहलस।

दूपहर में खाना खाते बर्तन 'सिंक' में डालके बहू आराम करे लागल, त सास रसोई समेटत कहली–''बहू बर्तन जूठे छोड़ गइल।''

''माई, कविता का अभी बर्तन धोवे के अभ्यास नइखे। एहसे तू ही धो लिहल कर। पहिलहूं त धोवते रहलू।'' छोटू अपना भौजाई के बचाव करत माई के समुझवलस।

रात में खाना खइला का बाद बहू सुते चल गइल, त सास बिस्तर लगावत पूछली–''बहू, रसोई ना समेटबू का ?''

''ओकरा खाये–पीये–सुते के उमिर बा। सुत गइल बिया, त ओकरा के काहे तंग करत बाड़ू।'' बहू खातिर लाड़ देखावत ससुर कहले।

'काम करे के आदत, अभ्यास आ उमिर त एगो हमरे बा।' सास मने–मन सोचत बाड़ी आ रसोई समेटे में लाग जात बाड़ी।❐

बहू के समझ

छोटकी बहिन का बिआह के बात चलल, त रमेश आ रेखा विचार कइले–''आपन दहेजवाला फर्नीचर कुन्नू के दे दिहल जाय। अपना हिस्सा के पइसो ना देबे के पड़ी आ ई हलुक फर्नीचरो निकल जाई। बाद में अच्छा आ मनलायक खरीद लिहल जाई।''

रेखा विचार काका तकले पहुंचा दिहली–''गुड़िया, अपना बाबा से कह दे, कुन्नू का बिआह के चिन्ता मत करीं। फर्नीचर त हमनीवाला बड़ले बा। बेड, सोफा, डाइनिंग टेबुल, आलमारी, सभ हमनी दे देब। जब चीज घर ही में बा, त काहे खरीदल जाय।''

काका गदगद हो गइले।

''आरे, सुनत बाडू ?'' ऊ अपना मेहरारू से कहले–''तू मझिलकी बहू के हरमेसा ना समझ समझेलू। आपन समूचा सामान कुन्नू का बिआह में दे देबे के कह रहल बिया। बहुत समझदार बिया, केतना खियाल राखेले घर के, ना त आज अइसे के देता आपन कीमती सामान।''

''के समझत बा ओकरा के नासमझ ! ऊ त सभ से समझदार बिया, तबे त अपना दहेज के समूचा सामान बिआह के दोसरे दिने ताला में बन्द कर दिहलस।'' पत्नी एके सांस में सभ उगिल दिहली–" नासमझ त बड़की ह। आपन समूचा सामान तुड़वा दिहलस, दस साल से घर के खर्चो चलावत बिया आ अब भाई–हिस्सा के पइसो दी।''

कहत–कहत पत्नी के भींजल आंख बडकू का बिआह के कबाड़ हो चुकल डबल बेड, सोफा, डाइनिंग टेबुल आ आलमारी पर जा के टिक गइल।❐

एहसास

कहे खातिर त ओकर आपन घर बा, बीवी आ एगो बच्चो बा, बाकिर एह सभन से ओकरा लगाव नाहींयें के बराबर बा। ऊ घर के जवना रूप में ढाले के चाहत रहे, ढाल ना पवलस। पत्नी का जिद्द का आगे ऊ हार गइल। एह से ओकरा मन में कड़ुआहट आ अलगाव बढ़त गइल।

ओकरा बिआह के चार बरिस हो गइल बा। ई चार बरिस कड़की में गुजरल बा। अभाव आ झंझट ओकरा स्वभाव में आउर कड़ुआहट घोर देले बा। घर में ओकरा घुटन के अलावा कुछ नइखे मिलत। एह से ऊ बाहरे रहल पसन्द करत बा।

दिन–भर बाहर रहला का बाद ऊ घरे लवटेला एह खातिर कि या त ओकरा लगे होटल में खाये खातिर पइसा ना रहेला, चाहे फेर देह के भूख मेटावे खातिर ओकरा जवन चाहीं, ऊ बाहर ना मिल पावेला।

खाना खाते ऊ सीधे बिस्तरा में घुस जाला। साथ में चुपचाप लेटल पत्नी, मन में भरल बेचैनी आ कमरा में फइलल भारी सन्नाटा से ओकरा जेहन में कवनो कोठा के एहसास उतर जात बा। ऊ एह एहसास से जल्दी से निपट लेबे के चाहत बा।

एह से सभ जनलो पर ऊ पत्नी से पूछत बा–''सुत गइलू का ?''❐

टॉलरेन्स

दिन में देखल 'शहीद' फिलिम ओकरा आंखिन का सामने घूम रहल बा। भगतसिंह का साथे दुर्व्यवहार कइल जाता... बर्फ के सिल्ली पर लेटावल जाता...चाबुक से पीटल जाता..... गन्दा खाना दिहल जाता। तबहूं ऊ अपना माई का पत्र में लिखत बाड़े–''तू कवनो तरह के चिन्ता मत करिह। इहां का लोगन के बर्ताव बहुत अच्छा बा। जेलर बड़ा मेहरवान बाड़े।''

''ग्रेट टॉलरेन्स।'' ओकरा मुंह से निकलत बा। ओकर मन भगतसिंह का प्रति श्रद्धा से भर जात बा। ऊ धीरे से करवट बदलत बा।

रील फेर चले लागल। ओकर पत्नी ओकरा बरोबर के नौकरी करेले। सुबह–सांझ घर के काम करेले, से अलग। बेमारो रहेले। ऊ रोज दारू पीके बितला रात के लवटेला। बात–बात में पिनिक जाला, डांटेला आ पीटबो करेला। ऊ घरे चिट्ठी लिखेले–''हमार चिन्ता मत करिह माई ! ई बहुत अच्छा हउवे। सांचे, इनका साथे रहके हम बहुत खुश बानी।''

''ग्रेट टॉलरेन्स !'' ओकरा मुंह से फेर निकलत बा। ओकर मन अपना पत्नी का प्रति प्यार से भर जाता। ऊ फेर करवट बदलत बा।

''ऐं !'' ऊ आधे नीन में चौंकत बा। पत्नी अभी ले ओकर गोड़ दबा रहल बिया। ऊ खीसी गुर्रात बा–''कमबख्त, अभी ले सुतले ना। आधा रात हो गइल।''

आ अपना पत्नी के एक लात जमा के ऊ एक बार फेर करवट बदल लेत बा।❐

औरत के भूख

ऊ आदमी ह आकि जीअत पहेली, कहल मुश्किल बा। आउर के त बात छोड़ीं, पूरा पांच साल माथा खपवला का बाद मेहरारुओ ओकरा सुभाव के ना समझ पवलस।

बेचारी मेहरारुओ का करो ! सुभावे ओकर केतना विचित्र बाटे। पानी मंगलस, बाकिर पत्नी का पानी लेके आवत–आवत पियास खतम। कबो बिना तड़का के सब्जी अच्छा नइखे लागत, त कबो तड़का से एकदम नफरत। कबो दूइए गो चपाती खाके उठ जाता, त कबो थरिआ से उठे के नाम नइखे लेत।

पत्नी धीरे से मुस्कुरा भर देत बिया–''हे भगवान, सभ आदमी अइसने होले का ?''

ऊ रात में खाये बइठल, त खाते रह गइल। सब्जी, दाल, सलाद, सभ पत्नी का आवे के पहिलही साफ। ऊ खाये बइठली, त दूगो चपाती थरिआ में बचल रहे।

''एतने से काम चल जाई ?''

''हं।''

''काहे, भूख नइखे लागल का ?''

''लागल बानू।''

''फेर ?''

''आज कम बा, त काल्ह हम दूगो चपाती ज्यादा खा लेले रहीं।''

''बाकिर तहार भूख ?''

''औरत का भूख के का ! अधिक चपाती बच जाय, त भूख अधिक आ कम बचे, त कम।''❐

पत्नी के भविष्य

पति नया साल पर 'हिन्दुस्तान' में आपन सलाना भविष्य–फल देखला का बाद पत्नी से पूछले–''तहार राशि का ह ?''

''तुला, काहे के ?''

''तहार सलाना भविष्य देखे के बा।''

''हमरा बिना देखले पता बा।''

''कइसे ?''

''एह में कइसे के कवन बात बा। बिआह का बाद पिछिला दस बरिस जइसे बीतल बा, ओइसहीं इहो बरिस बीती।''

''क.... कइसे ?''

''साल–भर कान में चिखचिख, दिमाग में खटखट, आ मन में खिन्नता रही.... चहारदीवारी का उमस में जीव घुटत रही....पति का साथ सम्बन्ध पहिलहीं जइसन रही...सप्ताह–दस दिन में पति एक बेर प्यार करिहें, सिर्फ दस मिनट खातिर.... आउर.... आउर.... एकरा से अलग एगो पत्नी के भविष्य का हो सकेला ?''❐

पत्नी बनाम नारी

हमार प्रान,

राउर हमरा से बहुत सारा शिकायत बा। बाकिर हम समझ नइखीं पावत कि उन्हनीं के कइसे दूर करी। जवन आवत रहे, तवन सभ क के देख लिहलीं, तबो रउआ के खुश ना कर पवलीं। पत्नी पति के खुश ना रख सके, एसे बढ़ के असफलता ओकरा खातिर आउर का हो सकेला।

बाकिर का समूचा दोष, समूचा कमी, हमरे बा ? रउओ त हमार साथ नइखीं देत, रउओ त कोशिश नइखीं करत। हम चाहे जवन करीं, जबले रउआ साथ ना देब, बात ना बनी। सोचीं त, हमनी पति–पत्नी हुईं। दूनू के बदले के पड़ी।

सिर्फ राउर,
राजी

प्रानप्रिय,

फेर समूचा दोष रउआ हमरे पर थोप दिहलीं। हमार कमल, रउआ ई काहे नइखीं सोचत कि हम राउर हईं, नीक चाहे बेजांय, अब त निमाहहीं के पड़ी। राउर हमरा से इहे नू शिकायत बा कि रउआ जवन चाहत बानी, ऊ हम नइखीं दे पावत। बाकिर हमरा लगे का बा, जवन हम रउरा के ना दिहलीं। आपन घर–परिवार, सभ–कुछ छोड़ के रउरा लगे चल अइलीं। अब हम, हमार सभ–कुछ राउरे नू ह। तबो रउआ कहत बानी....।

हम कबो कुछ चहलीं भा मंगलीं, त पत्नी का नाते। पत्नी के भी त पति पर कुछ हक होला कि ना ! तबहूं हम विश्वास दिलावत बानी कि अब हम रउआ से ना कुछ चाहब आ ना मांगब। रउआ हमार रहीं, बस। हम एही में खुश बानी।

राउर दासी,
राजी

हमार कमल,

लागत बा, हम जिनगी–भर रउआ के समझ ना पाएब आ एक दिन अइसहीं तड़पत–तड़पत प्रान निकल जइहें। तबो अब रउआ से का शिकायत करे के बा।

शिकायत त पति से कइल जाला, बाकिर रउआ त पति से पहिले पुरुष हईं। पुरुष समर्थ होला, निर्दोष होला। सभ दोष त हमरा में बा, हम नारी नू हईं। नारी भइला से बड़ा दोष आउर का हो सकेला ! हम अपना के खाली पत्नी समझ बइठल रहीं, जवन हमार गलती रहे, ई हम आज समझ पवलीं हं।

चिर अभागी,
राजी❐

सरप्राइज

पत्नी समूचा सब्जी ओकरा प्लेट में डाल के कराही के चुप्पे अइसन तोप दिहलस, जइसे ओमें ओकरा खातिर बहुत सब्जी होखे। बाकिर ऊ नजर बचा के देख लेले रहे कि कराही खाली बा। ऊ एकर कारन समझत रहे। काल्हे के बात ह। ओकरा प्लेट में थोड़ही सब्जी रहे, ऊ मुश्किल से चार चपाती खा सकत रहे। आखिरी चपाती लेबे खातिर कहलस, त ऊ एतने बोललस कि कवना चीज का साथे खाएब। पत्निओ एकरा से आगे कुछ ना बोलले रहे।

ऊ खाके देखलस, त सब्जी बहुत रुचिगर लागल। आलू–मटर के सब्जी बहुत दिन का बाद बनल रहे, ऊहो बहुत कम। ऊ मने–मन सोचत रहे–'काश, आज सब्जी के तीन–चार प्लेट ओकरा सामने रहित। ऊ सभ चट कर जाइत।' ऊ एक बेर फेर अपना पत्नी के पहिले नियर सरप्राइज देबे के चाहत रहे।

जब ओकर नया–नया बिआह भइल रहे, ई बतावे खातिर कि पत्नी के बनावल खाना ओकरा केतना सवदगर लागेला, कई बेर दूनू के खाना ऊ अकेलही साफ कर जात रहे। पत्नी का अपना खातिर खाना अलग से दुबारा बनावे के पड़त रहे। एह क्रम में दूनू के बहुत खुशी मिलत रहे। आज ऊ ओही खुशी के दोहरावे के चाहत रहे।

बाकिर खात–खात ओकर गति अचके धीमा पड़ गइल। समूचा सब्जी उहे खा जाई आ पत्नी बेचारी ! ना, अब अइसन सरप्राइज ठीक ना रही। आ ऊ आधा प्लेट सब्जी छोड़ के उठ गइल।

''आरे, रउआ ई सब्जी काहे छोड़ दिहलीं ? चपाती आउर ले लेतीं।'' पत्नी कहली।

ऊ जानत रहे कि अगर ऊ कहलस कि ई तहरा खातिर ह, त तुरन्ते कह दी कि हमरा खातिर कराही में बड़ले बा, चाहे हमरा सब्जी अच्छा ना लागे। हम त अंचारे भा चटनी का साथे खा जाएब। ओकरा से अइसन बात पिछिला दू साल में ऊ कई बेर सुन चुकल बा। एह से मुंह बिगाड़ के बोललस–''हमरा अच्छा नइखे लागत।''

ऊ देखलस, पत्नी के चेहरा एकदम उतर गइल। पति ओकर बनावल चीज के पहिला बार नापसन्द कइले रहे।

झूठ बोल के ऊहो पछतात रहे। पत्नी का ओकर बात अतना खराब लागी, ई ऊ ना सोचले रहे। झूठ ओकरा गला में जाके जइसे अंटक गइल रहे। ''तनी पानी दीह।'' कहके ऊ पत्नी का तरफ गिलास बढ़ा दिहलस। ओकर निगाह खाली कराही पर जा टिकल रहे।❐

हार्ट-अटैक

ऊ दिल के मरीज ह। एक बेर दौरो पड़ चुकल बा। भावुक ह, सोचेला ज्यादा। एकान्त मिलते उधेड़–बुन शुरू। दुनिया–जहान के दुःख–दर्द ओकरा दिमाग में चक्कर काटे लागेला आ ऊ परेशान हो उठेला।

डॉक्टर सलाह दिहले कि ऊ खुश रहे, व्यस्त रहे। एकान्त ओकरा खातिर खतरनाक बा। एही से ऊ पत्नी के साथे राखेला।

काल्ह पत्नी एक सप्ताह खातिर नइहर जाये के तैयार भइली, त ऊ मना कर दिहलस। ऊ पत्नी का भावना के समझत रहे, बाकिर मजबूर बा। एक सप्ताह के एकान्त सह पावल ओकरा खातिर मुश्किल बा।

पत्नी का दिल के ठेस लागल रहे। एह से उखड़ गइली। देर तकले सुसुकत रहली। ऊ अपराध–बोध से भर गइल।

''काल्ह नइहर चल जइह, हम छोड़ आएब।''

''का जरूरत बा जायेके ! हम मर चुकल बानी ओह लोग खातिर।''

''हमार बात ना मनबू ?''

''हमरा के आपन बात मनवावेवाला रउआ के होखीले ? हम राउर गुलाम त ना हईं।'' तैश में आके पत्नी कहली।

''तू हमार मजबूरी नइखू समझत। हमरा कुछ हो गइल तब ?''

''का होई, हार्ट–अटैके नू ! जवन होखे के बा, तवन जल्दी हो जाय, त अच्छा बा। अनिश्चितता त मेट जाई।''

पत्नी के बात सुनके ऊ सन्न रह गइल। एकरा से बढ़के हार्ट–अटैक आउर का होई, ऊ सोचे लागल।❐

मैरिड आदमी

५ अक्तूबर, १९८२

ऊ हमरा के चाहेले, एकर आभास त हमरा हो गइल रहे, बाकिर एह तरह से दीवाना बिया, एकर पता आजे चलल। हमरा किरायादार बनके ओकरा मकान में अइला जुम्मा–जुम्मा आठ दिन भइल बा, बाकिर ऊ अइसे व्यवहार करेले, जइसे हमार–ओकर सम्बन्ध दिनन के ना, बरिसन के होखे।

सबेरे तैयार होके दफ्तर जाये लगलीं, त ऊ पानी भरे का बहाने हमरा गेट का सामने लागल नल पर आ गइल। बोललस–''एह सूट में रउआ बहुत जंचत बानी। रउआ के देख के हमार दिल मचले लागत बा। अतना मत तड़पाईं प्रिय !''

८ अक्तूबर, १९८२

पौधन के पानी देबे खातिर ऊ आज सांझ के फेर हमरा ओर चल आइल रहे। एकान्त पाके हम पूछलीं–''तू हमरा से प्यार करेलू ?''

उत्तर में ऊ हमरा से प्रश्न कइलस–''आ रउआ हमरा से ना करीं ?''

''देख, हम बिआहल बानी आ एगो लइका के बापो हईं। कुछ दिन में हमार पत्नी इहां आ जइहें।'' हम साफ कइलीं।

''बिआहल बानी त का, बिआहल आदमी से प्यार कइल त आउर ठीक रहेला, केहू के सन्देहो ना होला।''

१० अक्तूबर, १९८२

ओकर माई काल्ह सबेरे एगो शादी में पटियाला चल गइली। दू दिन बाद लवटिहें। अब घर में तीन बेकत बाड़े– ओकर बाप, छोट बहिन आ ऊ। एह से ऊ सबेर ही से बहुत खुश रहे।

रात के ग्यारह बजल होई। हम पढ़ते रहलीं कि ऊ चुप्पे दरवाजा खोल के हमरा कमरा में चल आइल। हम कुछ समझ पवतीं, एकरा से पहिलहीं ऊ बत्ती बुता के हमरा लगे बिछौना पर आ बइठल।

हम अनुभव कइलीं, ऊ बुरी तरह से सुलग रहल बिया। थोड़ही देर में ओकर गर्मी हमरा तक पहुंच गइल आ ओकर व्यवहार पूरा तरह से पत्नी नियर हो गइल। हम बहुत हरान–परेशान रहलीं।

बहुत देर ले ऊ सुसुकत रहल–''कुछ कर ना। कबले अइसे झुलसावत रहब, एह आग में।''

बाकिर बिआहल भइला का चलते हम डेग आगे ना बढ़ा सकलीं। रात ढलला पर जब ऊ जाये लागल, त हम पूछलीं–''काल्ह फेर अइबू ?''

''ना।'' ऊ बेरुखी से जवाब दिहलस।

''काहे ?'' हम जाने के चहलीं।

''काहे कि हम समझ गइल बानी कि बिआहल आदमी से कबो प्यार ना करे के चाहीं।''❐

टू-लैट

मैनेजर बाबू महेन्द्र गुप्ता के जुदाई ललिता के बुरा तरह से तूर देले रहे। पति का मरला के बाद, ऊ अपना कोठी के आधा भाग किराया पर दिहल, एह से शुरू कइली कि गुजारा भी हो जाई आ मनो लागल रही। बाकिर एक दिन, कवनो किरायादार के गइला पर उनका अतना सदमा लागी, ई ऊ कबो सोचलहूं ना रहली।

अइसे त ओह कोठी में कई किरायादार रहले– प्रोफेसर जुनेजा, नरेश बाबू आ डॉक्टर शर्मा। सभन से उनका कुछ भावात्मक रिश्ता जुड़ गइल रहे, बाकिर गुप्तो जी से ऊ कुछ ज्यादही जुड़ गइल रहली। गुप्तो जी त उनका से अलग कुछ ना रखले रहस। ललिता का एह एक साल में जवन सुख गुप्ता जी दिहले रहस, ओतना सुख त उनका अपना पति का साथे रहत पांचो साल में ना मिलल रहे।

ललिता फैसला कइली कि अब ऊ केहू के किराया पर मकान ना दिहें। दू, चार, पांच दिन अइसहीं गुजर गइल। ऊ कुछ एह तरह से टूटल आ उदास रहली कि उनका पते ना चलल कि कब दिन भइल आ कब रात। खाइल–पीयल, नहाइल–धोआइल, ऊ जइसे सभ भुला गइल रहली।

अचके उनका दिमाग में एगो सवाल उभरत बा–'अइसे कबले चली ललिता ? गुप्ता जी के संघत पति के इयाद भुलवा दिहलस, शायद केहू आउर इनकर कमी पूरा कर दे।'

आज ऊ, धीरे से उठके, कोठी का दरवाजा पर एगो तख्ती टांग देत बाड़ी। तख्ती पर लिखल रहे–'टू–लैट'।❐

तिरिया-चरित्तर

'नारी–सशक्तिकरण' विषय पर डॉ० शकीला शर्मा के व्याख्यान सुनके हम अकचका गइलीं। उनका मुंह से नारी का सच्चरित्रता, शालीनता, लज्जाशीलता आदि के बात सुनलीं, त हमरा अचानक बीस बरिस पहिले का घटना–क्रम के इयाद आ गइल।

जब हम कानपुर विश्वविद्यालय में शोधछात्र रहीं, त शकीला उहां एम०ए० करत रहली। ऊ हमरा से तीन–चार साल 'जूनियर' रहली। अपना बिन्दास व्यवहार से ऊ पूरा विश्वविद्यालय में 'चर्चा–क्वीन' रहली। घुटना तक मोड़ल जीन्स पहिन के, जब ऊ बिना मडगार्ड वाला मोटर साइकिल के, साठ–सत्तर किलोमीटर के रफ्तार से दउड़ावस, त लइका 'दादी–दादी' कहके चिल्लाय लागत रहले। कुछ मनचला त तरह–तरह के बोल बोले आ सीटिओ बजावे से बाज ना आवत रहले। हमरा अबहूं ठीक से इयाद बा, उनकर नाम एगो छात्र–नेता का साथे अबैध सम्बन्धो खातिर बहुत दिन तक चर्चा में रहल आ बात उनका के विश्वविद्यालय से निकाले तक पहुंच गइल रहे। आज उइे शकीला नारी–गरिमा के बखान कर रहल बाड़ी।

''ना ई सभ झूठ ह। इनका मुंह से नारी–गरिमा के बात शोभा नइखे देत।'' हमरा मुंह से अचके निकल गइल रहे।

''काहे परेशान लागत बाड़ इयार !'' सभ स्थिति से परिचित आ लगही बइठल एगो मित्र कहले–''अइसन बात आज–काल्ह अइसने लोग का मुंह से शोभा देत बा।''❐

लाश

कानपुर, १२ दिसम्बर (सुरेन्द्र दिवाकर)। ''हमार मन पापी हो गइल रहे साहेब ! हम पोस्टमार्टम–रूम से निकललीं, त लाश के देखला बिना ना रह सकलीं। जवान आ सुन्दर औरत के लाश रहे। साहेब, ओकरा के देखते मन में पाप आ गइल आ हम अपना के रोक ना सकलीं।'' ई शब्द ह स्थानीय अस्पताल के चौकीदार जंगबहादुर के, जवन ओह लाश का साथे दुष्कर्म कइले रहे आ काल्ह का घटना के विवरण देत संवाददाता से कहलस।

लिखे जोग बात बा कि जंगबहादुर के महिला के लाश का साथे दुष्कर्म कइला का जघन्य अपराध के आरोप में गिरफ्तार कर लिहल गइल बा। ऊ आपन अपराधो संकार लेले बा।

ई लोमहर्षक घटना साबित कर देले बा कि अपना मूल प्रकति में आदमी आजो जानवर से अलग नइखे। काम–वासना के अपना आदिम भूख के तप्ति खातिर ऊ लाश से बलात्कार जइसन दुष्कर्मो करे में संकोच नइखे करत।

पावल विवरण का मोताबिक जंगबहादुर पिछिला सात बरिसन से इहां चौकीदार का रूप में नौकरी पर बा। ओकर बीवी–बच्चा नेपाल का तराई में बसल खुम्बा में ही रहत बाड़े।

घर–बार का बारे में पूछला पर ऊ बतवलस–''साहेब, अपना बीवी–बच्चने खातिर हम अपना गांव से इहां नौकरी करे अइलीं। पइसा भेजत रहीं। बाकिर हमरा साथे धोखा भइल साहेब ! साल–भर बाद जब हम गांवे गइलीं, त पता चलल कि हमार बीवी दोसर घर कर लेले बिया।''

ओकर आंख भर आइल रहे। हम कुछ आउर पूछतीं, एकरा पहिले उहे हमरा से पूछलस–''फेर का करतीं साहेब, हम गांवे जा के ? गांव में आपन कहे लायक आउर त केहू बा ना।''

हमरा ई पूछला पर कि का तहार आत्मा तहरा के अइसन अपराध–कर्म करे से रोकलस ना, ऊ बतवलस–''पहिली बार हम अपना के समझवलीं, ई ठीक नइखे; माटी से खेलवाड़ कइल धर्म–विरुद्ध ह। बाकिर दोसरका बेर ओने से गुजरलीं, त ई पाप–कर्म कर बइठलीं। ....का करीं साहेब, औरत के जिस्म देखले सात साल हो गइल रहे।''❐

काफिर

ऊ कर्फ़्यूग्रस्त रोशनी में कदम रखलहीं रहे कि एगो भयानक सवाल सुन के कांप उठल–''कवन हउव तू ?''

''देखत नइख, एगो आदमी हईं, बेमार बच्चा के बाप। दवा लेबे निकलल बानी।'' अपना ओर घूरत कई जोड़ी आंखिन के ऊ एके सांस में सभ–कुछ बता देबे के चाहत रहे।

''हमनी जे पूछ रहलबानी, ओकर जवाब द, समझल ?'' अब सवाल का साथे आदेशो जुड़ गइल।

''हमरा बात पर विश्वास नइखे रउआ ? साथे चल के हमरा तड़पत एकलौता बेमार बच्चा के अपना आंखिन से देखली।'' ऊ दवा के खाली शीशी देखावत जरत आंखिन के कुछ ठंढा करे के प्रयास कइलस।

''बच्चा के मार गोली....। जल्दी से ई बताव कि तू हउव के, ना त....।'' एह बार सवाल, आदेश आ चेतावनी, तीनू एके साथे रहे।

''हम रउआ आदमी नइखी लागत का ?'' उत्तर में ऊ डरते–सहमते घूरत आंखिन से पूछलस।

एकाएक सधल हाथ का साथे एगो जोरदार वाक्य ओकरा दिमाग से टकराइल–''ई साला जरूर काफिर ह, ना त अपना के आदमी काहे कहित।''❐

धर्म-हिंसा

उग्रवादियन का ओर से चौंतीस बस–यात्रियन के निर्मम हत्या क दिहला से उपजल प्रतिहिंसा के उन्माद चरम सीमा पर रहे। साम्प्रदायिकता के झंडा उठवले दंगाइयन के टोली, शिकार का खोज में, नगर में बिना रोक–टोक के दनदनात फिरत रहे। पुलिस आ प्रशासन आज शायद छुट्टी पर रहे।

बाहरी कॉलोनियन में, एगो विशेष सम्प्रदाय का लोगन के घरन–दुकानन आ बस–ट्रकन के जरवला के बाद, दंगाई मुख्य बाजार में आ गइल रहले। कवन दूकान केकर ह, एकर पूरा जानकारी उनका बाटे। साम्प्रदायिकन का तर्ज पर शायद उहो कवनो 'हिट लिस्ट' बनाके रखले बाड़े। एही से ऊ आवते 'पंजाब क्लॉथ हाउस' में आग लगा दिहले। देखते–देखत लाखन के कपड़ा राख में बदल गइल।

एकरा से तिसरकी दूकान 'पंजाब क्लॉथ हाउस' के मालिक बलदेव सिंह का छोट भाई जगदेव सिंह के ह। लोग अब ओने बढ़े लगले।

'बोले से निहाल, सत सिरी अकाल' का नारा के साथ ही दूकान के शटर उठा दिहल गइल। एगो दंगाई जरत मशाल लेके दूकान का ओर बढ़ले रहे कि भीड़ में से एक–ब–एक केहू कहल–''ठहर।'

''काहे, का बात बा ?'' कई स्वर एके साथ अचरज से पूछलस।

''जगदेव सिंह चौरासी का दंगा के बाद केश कटवा देले रहले।'' पहिला वाला स्वर साफ कइलस।

अतना सुनते दंगाइयन के टोली आगे खसके लागल। मशालची दोसर का हाथ से दूकान के शटर गिरा देले रहे। ''फेर त जगदेव आपन धर्म–भाई भइले।'' ऊ कहलस।❐

धर्म-परिवर्तन

आज जे दू सौ लोग धर्म–परिवर्तन कइले रहले, ओह लोगन में रामधनो रहले। दोसरा लोगन का साथे उहो गुसल कइले, पाक–साफ कपड़ा पहिरले, बजू कइले आ फेर मौलवी से कलमा पढ़ले–''लाइल्लाह इल्लुल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह।'' आ ऊ रामधन से रसूल अहमद हो गइले।

मुस्लिम धर्म मनला खातिर उनका ढेर सारा तोहफा आ पांच सौ रुपया नगद मिलल। रस्म–अदायगी के बाद नोटन के गड्डी जेब में ठूंस के आ तोहफा उठा के रसूल अहमद उर्फ रामधन मस्जिद से बाहर हो गइले। ऊ बहुत खुश रहले। थोड़े दूर जाके हंसले आ बुदबुदइले–"'स्साला कहत बाड़े कि धरम बदल गइल। अब से चार बेर ई कलमा पढ़ चुकलीं। धरम जब ना बदलल, त अब का बदली !"

आ ऊ मस्जिद का ओर मुंह क के 'पिच्च' से थूकले आ अपना राहे बढ़ गइले।❐

चेहरा-मोहरा

''हिन्दू–सिक्ख त भाई–भाई हउवे, एके महतारी के दूगो बेटा। दूनू में फरके का बा ? जे लोग राजनीतिक स्वार्थ का चलते दूनू में फूट डालल चाहत बाड़े, उनकर नापाक इरादन के कबो सफल ना होखे दिहल जाई।''

ई रामभवन जी हउवे, इलाका के जानल–मानल नेता, पूरा तरह से गैर–साम्प्रदायिक आ धर्मनिरपेक्ष। सबेरे से हिन्दू–सिक्ख दंगा से ग्रस्त क्षेत्र के दौरा कर रहल बाड़े। अनेक जनसभा में दूनू सम्प्रदायन का एकता पर जोरदार भाखन दे चुकल बाड़े आ एह तरह से हिन्दू–सिक्ख सद्भाव–समिति का अध्यक्ष के जिम्मेदारी ठीक से निमाह रहल बाड़े रामभवन जी।

लगभग आधी रात के अल्पसंख्यकन पर एक–ब–एक जोरदार हमला भइल। कई लोगन के मार–काट दियाइल। घरन में आग लगा दियाइल। दूकानों में जमके लूटपाट आ तोड़फोड़ कइल गइल।

जवना ओर से घातक हमला भइल रहे, ओह ओर से हमला होखे से थोड़ी देर पहिले, एगो नेतानुमा आदमी के चुपके से घसकल देखल गइल रहे। सामने देखेवालन के कहनाम बा कि ओह नेता के चेहरा–मोहरा एकदम रामभवन जी से मिलत रहे।❐

सांप

तड़ातड़ तीन लाठी पड़ल। सांप तड़फड़ा के ओही जा ढेर हो गइल।

एगो बोललस–''हम अइसन जम के लाठी मरलीं कि लागते सांप के प्रान निकल गइल।''

''तहार लाठी ठीक जगह पर ना लागल रहल। सांप मरल त हमरा लाठी से।'' दोसरका बोललस।

''तू दूनू झूठ बोलत बाड़।'' तिसरका कहलस–''अगर हमार लाठी ना लागित, त सांप मरबे ना करित। तहरा लोग के लाठी खाके त सांप उलिटे काटहीं चलल रहे।''

''झूठ।'' एके साथे पहिलका दूनू का मुंह से निकलल। फेर एगो बोललस–''सांप के मरलीं त हम, आ श्रेय तू लेबे के चाहत बाड़ ?''

'ई बिल्कुल ना होई।' दूसरका कहलस। तिसरका कहलस–''ना होई, त ना सही। सांप त हमहीं मरले बानी।''

बात बढ़ल, बात बिगड़ल। थोड़की देर पहिले जवन लाठी सांप पर चलल रहे, ऊ अब एक–दोसरा पर चले लागल। एगो के कपार फूटल, दोसरा के बाजू टूटल आ तिसरको के गम्भीर चोट आइल। तीनू पड़ल तड़पत रहले।

मरल सांप तीनू के डंसले रहे।❐

टिकट के आधार

उपचुनाव खातिर पार्टी–प्रत्याशी के चयन खातिर एगो राष्ट्रीय पार्टी का मुख्यालय में साक्षात्कार चलत रहे। सभ उम्मीदवारन से एकेगो सवाल पूछल जात रहे–''रउरे के पार्टी के टिकट काहे दिहल जाय ?''

सभ उम्मीदवार एह सवाल के जवाब अलग–अलग दिहले।

पहिलकू बोलले–''हम आपन पूरा जिनगी सार्वजनिक क्षेत्र में बितवले बानी। हमार आपन जनाधार बा। हम ई सीट जीत सकत बानी।''

दूसरकू कहले–''हम हरमेसा पार्टी के वफादार सिपाही रहल बानी आ तन–मन–धन से पार्टी के सेवा कइले बानी।''

तिसरकू साफ कइले–''हमार आस्था 'घीसू–माधो' परिवार में बा। हम हरमेसा, हर परिस्थिति में, एह परिवार खातिर काम कइले बानी। झाडू आ नारा लगावे से लेके 'बूथ कैप्चरिंग' तक, सभ काम कइले बानी।''

चउथकू के जवाब रहे–''हमार आस्था पार्टी–अध्यक्ष साधो जी में बा। हम त उनकर अदना सेवक बानी। उनका खातिर कुछउ कर सकत बानी। टिकट मिल जाई, त हम उनकर आउर सेवा कर सकब।''

पांचवां उम्मीदवार कारन बतवले–''हमार आस्था त पार्टी–अध्यक्ष का चरनन में बा। हम त उनकर जूता उठावहीं खातिर राजनीति में आइल चाहत बानी। अगर हमरा पार्टी के टिकट मिलल, त हम एही तरह से 'जनसेवा' करत रहब।''

आ साक्षात्कार का बाद, योग्यता के आधार पर, पांचवे उम्मीदवार के 'जनसेवा' खातिर सभसे ज्यादा उपयुक्त समझ के, पार्टी–टिकट दे दिहल गइल।❐

दूरदर्शिता

एगो निर्दलीय सदस्य का तरफ से सदन में एगो विधेयक प्रस्तुत कइल गइल, जवना में भूतपूर्व सरकार का भ्रष्ट मन्त्रियन के, भविष्य में चुनाव लड़े पर कानूनी प्रतिबन्ध लगावे के प्रावधान रहे।

सत्तारूढ़ दल का विधायक दल के बैठक में विचार–विमर्श चलत रहे कि विधेयक पर अगिला दिन होखेवाला मतदान के समय का रुख अपनावल जाय।

एक : ''हमार पार्टी चुनाव का समय अइसन कानून बनावे के वादा कइले रहे। हमनी के अब आपन वादा पूरा करे के चाहीं।''

दू : ''अइसन विधेयक के पास भइला बिना भ्रष्टाचार के खतम कइल सम्भव नइखे।''

तीन : ''अगर सरकार भ्रष्टाचार के समाप्ति खातिर वचनबद्ध बिया, त ओकरा एह विधेयक के पास करवावहीं के पड़ी।''

चार : ''विधेयक पूरा तरह से लोकतान्त्रिक बा आ लोक के हितो करेवाला बा।''

पांच : ''विधेयक पास भइल, त एह से राजनीति में नैतिकता के प्रतिष्ठा में मदत मिली।''

छह : ''बाकिर काल्ह दोसर सरकार एह कानून के प्रयोग रउरो विरोध में त कर सकेले।''

तर्क के तीर एक–ब–एक थम गइल रहे। अगिला दिन सदन में चर्चा का बाद ध्वनिमत से विधेयक रद्द कर दिहल गइल।❐

व्यवस्था-परिवर्तन

जानवर शेर का एकतन्त्र के विरुद्ध विद्रोह क दिहले। व्यवस्था–परिवर्तन के समर्थक चाहत रहले कि जंगल में प्रजातन्त्र कायम होखे। शेर स्थिति के गम्भीरता के समझले आ उनका के तुरन्ते निष्पक्ष चुनाव करावे के आश्वासन दे दिहले।

चुनाव के समय शेरो 'जंगल–कांग्रेस' नाम से एगो नया पार्टी के गठन क के दंगल में उतर पड़ले। उनकर प्रतिद्वन्द्वी हिरन के नेतत्ववाली 'जंगल–जनता' के अधिकांश उम्मीदवार आपन जमानत गंवा बइठले।

चुनाव का बाद विजयी शेर सम्मान से जानवरन का ओर से फूलन से लाद दिहल गइले। सभ जानवर खुश रहले कि काल्ह के राजा आज जन–प्रतिनिधि का रूप में उनका बीचे उपस्थित बाड़े।

'शेर जिन्दाबाद', 'जंगल–कांग्रेस जिन्दाबाद' के नारन से आसमान गूंजत रहे। एह जय–जयकार में उहो जानवर सामिल रहले, जे शेर का विरोध में भइल विद्रोह में बढ़–चढ़के भाग लेले रहले।❐

नियति

चक्की का पाट के चनन के प्रति व्यवहार बहुत निर्मम रहे। एह से एक दिन कुछ चना मिल के ओकरा के फोड़ दिहले। चना चाहत रहले कि पाट अइसन होखे के चाहीं, जे उनकर दर्द समझे आ भावना के कदर करे।

पाट बदल दिहल गइल। नया पाट पहिलका पाट से कहीं भारी रहे। चक्की फेर चले लागल। चना अब ज्यादा पिसात रहले।❐

व्यवस्था

दारू आ हवस से पागल चारों दरिन्दा ओह असहाय युवती का इज्जत से मुंह काला करत रहले। शिकारी का हाथ में पड़ल घवाहिल हिरनी अइसन युवती छटपटइला का अलावा का कर सकत रहे।

युवती के समूचा देह नोंच–खरोच दिआइल रहे। बाल पूरा तरह से उलझ आ छितरा गइल रहे, कपड़ा तार–तार हो गइल रहे। ओकर लोराइल चेहरा बहुत करुण आ कातर लागत रहे। ऊ अहल्या बनल खड़ा रहे, अब जाय त कहां ?

ऊ चारो सन्तुष्ट हो के आपस में बतियावत रहले–

''अब बेचारी अस्पताल जा के डॉक्टरी जांच करवाई।''

''मुख्य चिकित्सा–अधिकारी त हमार रिश्तेदारे हउवे।''

''कवनो राजनेता से न्याय के गोहार लगाई।''

''इलाका के सभसे प्रभावशाली नेता त हमार भाइए हउवे।''

''त फेर थाना में जाके रिपोर्ट करी।''

''ना, थानावाले एह ममिला में हमनी से निर्दयी हउवें। मोकदमा दर्ज करे से पहिले, इहो उहे सभ करे के चहिहें, जवन हमनी कइलीं हं।''

''फेर कचहरी के दुआर खटखटाई।''

''एह से का होई ? तू जानत नइख, हम शहर के सभसे नामी आ धनिक वकील के बेटा हईं। कचहरी में एकरा बेइज्जती आ बदनामी का अलावा कुछ ना मिली।''

''हाय, त फेर जाई कहां बेचारी !''

''एकेगो रास्ता बा एकरा खातिर।''

''ऊ कवन ?''

''ऊ ई कि अब ई जे कुछ भइल, ओकरा के भुला के, चुपचाप अपना घरे चल जाय।''

ई बात सुनके, सकपका के ठाढ़ युवती के डेग, धीरे–धीरे अपना घर का ओर बढ़े लागल।❐

मुक्ति

बंधुआ मजदूरी से छुटकारा खातिर सर्वोदयी नेता पुलिस का चौकसी में ट्रक ले के ईंट–भट्ठा पर पहुंच गइले। उनका कहला पर सभ मजदूर तुरन्ते आपन सामान बान्ह के चले के तैयार हो गइले।

ट्रक का लगे आ के मजदूरन के मुखिया के गोड़ एक–ब–एक रुक गइल। ऊ आ ओकरा साथे सभ मजदूर आपन–आपन सामान जमीन पर रख दिहले।

''चल–चल, आपन–आपन सामान जल्दी से ट्रक पर रख।'' सर्वोदयी नेता कहले।

सभ मजदूर मुखिया का ओर देखे लगले। ऊ चुप रहे।

''बुधराम, का बात ह भाई ? चुप काहे बाड़ ? अपना साथियन के सामान रखे के कह ना।''

मुखिया अबो चुप रहे, जइसे कुछ सोचत होखे। सर्वोदयी नेता समझले, ई पुलिसवालन से डर रहल बाड़े। एह से उनका ओर इसारा करत कहले–''ई सिपाही तहरा लोग के कुछुओ ना करिहें। ई त हमरा साथे बाड़े, तहरा लोग के छुटकारा खातिर आइल बाड़े।''

''साहेब, हमनी के भाग्य में इहे लिखले बा।'' मुखिया बोललस–''काल्ह इहां ना, त कवनो दोसरा भट्ठा पर सही, इहे मजूरी करे के पड़ी।''

''क....काहे ?''

''एह भट्ठा का कैद से मुक्ति त रउआ करा दिहलीं, बाकिर भूख से छुटकारा के कराई साहेब ?''❐

समाधान

''इहवां कवनो खान बा जवना में से निकाल–निकाल के तहरा के खियावल करीं। कपड़ा–लत्ता, रुपया–पइसा त सगरी तहरा पढ़ाई–लिखाई में फूंक दिहलीं, अब तहार मुंह कइसे फूंकी ?''

जरले–कटल त रोज सुने के पड़त रहे, बाकिर आज त माई हद क दिहलस–''निकल जा हमरा घर से। हम त बुढ़ापा में मजूरी करत बानी आ तू पूरा दिन पड़ल–पड़ल खटिया तूरत बाड़।''

आ ऊ बिना सोचले, चुपचाप घर से निकल पड़ल।

जिला कल्यान–अधिकारी का ऑफिस के बाहर ऊ भीड़ जइसन लागल देखलस। भूख के भुलावे खातिर उहो लगे आ के रुक गइल।

अधिकारी का ओर से दलित–कल्यान का नाम पर कइल जा रहल हेराफेरी का विरोध में 'दलित–कल्यान समिति' का ओर से आमरन अनशन शुरू होखेवाला रहे। बाकिर अनशन पर के बइठे, ई तय ना हो पावत रहे।

''अनशन पर हम बइठब।'' भीड़ के एक तरफ धकियावत ऊ मंच का ओर बढ़ गइल रहे।❐

निरापद

जमींदार ठाकुर जगत सिंह के बेटा नखत सिंह का हवस के शिकार भइला पर, गांव में जंगल का आग नियर फइलल बदनामी से बचे खातिर धनिया चमार के बेटी झुमका घर से भागल, त पुलिस का साल–भर के रात–दिन के भाग–दौड़ का बाद, कहीं एगो कोठा पर बरामद भइल।

''हमरा के एहीजा रहे द इन्स्पैक्टर साहेब !'' गिरफ्तारी खातिर आइल महिला इन्स्पैक्टर का सामने झुमका गिड़गिड़इलस।

''हम इहां कैद नइखीं। अपना मर्जी से रहत बानी।''

''ई नरक ह झुमका !'' इन्स्पैक्टर डेरववली–''एह में एक बेर जे गिर गइल, ऊ फेर ना उबरेला।''

''हम एह नरक में ओह स्वर्ग से कहीं ज्यादा सुखी बानी।'' झुमका के निश्चयो दीर्ह रहे।''

''तू उहां कवनो अच्छा धंधा शुरू क के आपन जिनगी संवार सकेलू।'' इन्स्पैक्टर राय दिहली।

''अच्छा होखे भा बुरा, धंधा त अब ओहूजा इहे करे के पड़ी। उहां गांव के कुत्ता देहो नोचिहें आ भूंकबो करिहें, इन्स्पैक्टर साहेब ! इहां कवनो कुत्ता भूंकत त नइखे।''❐

कारण

बेटी अनीता खातिर दू बरिस का भाग–दौड़ के बाद, बहुत मुश्किल से, एगो जोग्य लइका मिलल रहे। बाकिर ओकरो के ओकर बाप 'रिजेक्ट' क के अइले, त पत्नी का कारण समझ में ना आइल।

''लइका सुन्दर आ सुशील रहल ह, घरो–बार ठीक रहल ह, शासन–गोत्रो ना मिलत रहल ह, तबो रउआ ओकरा के 'रिजेक्ट' क अइलीं।''

''हं।'' पति बोलले।

''बाकिर काहे ?''

''काहे कि ओह घर में लइकी के इज्जत–आबरू सुरक्षित ना रहल ह।''

''काहे, कइसे, केकरा से ?'' पत्नी अवाक् हो गइली।

''लइका के घर पुलिस–चौकी का सामने पड़त बा, एही से।'' पत्नी का सभ सवालन के एके वाक्य में पति जवाब दे दिहले।❐

मोहरा

कपड़ा–मिल में मज़दूर–हड़ताल के तिसरका सप्ताह चल रहल बा। प्रबन्धक हड़ताल के गैर–कानूनी करार दे रहल बाड़े आ मजदूरन का आगे झुके के कस हूं तैयार नइखन। एह से मजदूर अपना मांग के समर्थन में नगर के बीचो–बीच जुलूस निकलले बाड़े।

जुलूस का आगे चलेवालन का हाथ में तख्ती बाड़ी स, जवना पर कईगो नारा लिखल बा। पीछे चलेवाला कुछ मजदूर नारा लगा रहल बाड़े। बीच–बीच में कुछ लोग पर्ची बांट रहल बाड़े।

हम उन्हनी में से एगो के रोक, के पर्चा का ओर संकेत करत, पूछत बानी–''एह पर्चा में का लिखल बा ?''

''हमरा कुछुओ नइखे पता बाबू ! तू ही पढ़ ल।''

''ई जुलूस काहे खातिर निकालल जा रहल बा ?''

''हमनी के कुछ मांग बा, ओही खातिर।''

''तहार का मांग बा ?''

''हम ठीक–ठीक नइखीं बता सकत।''

ऊ उतावली में एने–ओने नजर दउड़ा के, सभसे आगे चल रहल खद्दरधारी का ओर संकेत करत, कहत बा–''ऊ जे हमरा आगे चलत बाड़े नू, गांधी बाबा वाला कपड़ा में, दाढ़ी–मोंछवाले, उहे हमार परधान हउवें। उनके से पूछल जाव बाबू !''

तबे पीछे से एगो नारा उछलत बा–''हमार मांग।''

''पूरा कर।'' मुट्ठी तान के ऊ जोर से चिल्लाता आ तेजी से दोसर साथी मजदूरन का साथे आगे बढ़ जाता।❐

गरीब के माई

भइल उहे जवना के ओकरा उमेद रहे। घर के डेवढ़ी पर गोड़ रखते बेमार माई के खनखनात सवाल उल्का–पिंड अइसन ओकरा कान से टकराइल–''हमार दवाई ले अइल बेटा ?''

ऊ माई का चेहरा के झुर्रिअन में उभर आइल छनिक उमेद के झलक देखलस आ फेर ओके अचके खांसी में बदलतो देखलस। माई के चेहरा करिआ पड़े लागल। लागल, जइसे ओकर सांस निकलल, अब निकलल।

माई के हालत देखके ऊ घबड़ा गइल। माई दमा के मरीज हई। रोज दवा ले आवे के कहेली। ऊ रोजे कवनो–ना–कवनो बहाना बना के दवाई ना ले आवे के बात कह देत रहे। बाकिर आज माई के हालत देख के ओकरा झूठ बोले के पड़ल–''हं, ले आइल बानी माई ! अभी ले अइलीं।''

घर का भीतर घुसते ओकरा अपना फैक्ट्री का मालिक पर बड़ा गुस्सा आइल। ऊ कतना गिड़गिड़इलस बीस रुपया 'एडवान्स' लेबे खातिर, बाकिर ऊ ना दिहलस। माई के बेमारी बतवलो पर ओह बेदर्दी के दिल ना पसीजल।

एगो ताखा में रखल कुछ पुरान शीशिअन के खोजलस। हिला के देखला पर पता चलल कि एगो शीशी में कुछ दवा बा। ऊ बिना सोचले–समझले, ऊ दवा माई का गला के नीचे उतार दिहलस।

दवा के भीतर जाते माई के खोखला देह झनझना उठल। जोर से खांसी का साथे उनका कै आ दस्त आवे लागल। हिचकी बन्द हो गइल आ आंख बाहर निकल आइल। थोड़े देर में माई के चेहरा पीयर पड़ गइल।

''आरे, ई कइसन दवाई ले अइले हरिआ ?''

''हम ओह डाकदर के खून पी जाएब माई ! ऊ कमीना गलत दवाई दे देले बा। जइसे गरीब के मतारी मतारी ना होले।'' फेर झूठ बोल के, अपराध–बोध से मुक्ति पावे के प्रयास करत, ऊ कहत बा।❐

जान-माल के कीमत

खाना खाते मनभर खटिआ पर पसर जाता। फेर ओकरा पते नइखे चलत कि कब आंख लागल आ कब रात बीतल। बाकिर आज, दिन–भर पसेना–पसेना होके मेहनत कइलो पर, ओकरा नींन ना आवत रहे। दिनवाली बात शीशा के टुकड़ा नियर ओकरा दिमाग में गड़त रहे।

नगर का छाती पर बनल एगो आलीशान बिल्डिग के इन्जीनियर खतरनाक घोषित क देले रहले। एह से ओकरा के तूरे के आदेश दे दिहल गइल रहे। मनभर दोसरा साथी मजदूरन का साथे पूरा दिन ओही काम में जुटल रहे।

''साहेब एह बिल्डिग में ना कवनो दरार देखाई पड़त बा, ना कवनो ओर देवाल टूटल लउकत बा, ना कवनो नुखुसे देखाई पड़त बा। फेर ई खतरनाक कइसे हो गइल ?''

''भाई, जब बिल्डिग पुराना हो जाला, त ओकरा में गिरे के खतरा पैदा हो जाला। आ कवनो बिल्डिग के गिरला पर जान–माल के कतना नुक्सान हो सकेला, जानत बाड़ ?'' जवाब में एगो इन्जीनियर मनभर से पूछलस।

मनभर सोचे लागल–''हम त पिछिला पैंतीस साल से ओह बिल्डिगो से कई गुना खतरनाक मकान में रहत आ रहल बानी। हमरा जान–माल के कवनो खतरा नइखे का ?''

ओकरा आपन सोच बेतुका लागे लागल। ''हुंह !'' ऊ व्यंग्य से बुदबुदइलस–''हमरा मकान में माले कहां बा ! छव जान बानी स, बाकिर गरीब का जान के कवनो कीमत होला का ?''❐

अच्छा

स्वास्थ्य–विभाग का ओर से आयोजित गोष्ठी में विचार चलत रहे। विषय रहे–'विभिन्न अनाजन के आदमी खातिर महत्त्व आ उपयोगिता।' विद्वान डॉक्टर आ अन्न–विशेषज्ञ विषय पर आपन–आपन विचार प्रस्तुत करत रहले।

''गेहूं आदमी खातिर सर्वोत्तम अन्न ह।'' डॉ० आनन्द त्रिपाठी के निष्कर्ष रहे।

डॉ० रमेश बत्रा के विचार रहे–''आदमी खातिर जौ, गेहूं का अपेक्षा ज्यादा उपयोगी आ पुष्टिकारक होला।''

श्री रंजन शर्मा चाउर के वकालत कइले रहस–''चाउर हलुक होला आ ठीक से पचहूंवाला। एह से ऊ अधिक अच्छा होला।''

वक्ता लोग का एह विचारन से हम पूरा तरह से आश्वस्त ना हो पावत रहलीं। हम अनाज का श्रेष्ठता के बारे में व्यावहारिक बात जाने के चाहत रहलीं।

तबे एगो नौकर पानी पियावत ओने आ गइल। देखे में ऊ देहाती लागत रहे। ठीक मौका पा के हम अनाज का उपयोगिता आ श्रेष्ठता के विषय में ओकर विचार जानल चहलीं–''चाउर, गेहू, मकई, जौ आ ज्वार में से खाये में सभसे अच्छा कवन होला ?''

''अच्छा–बुरा हम का जानीं बाबू !'' देहाती लहजा में ऊ जवाब दिहलस–''हमरा खातिर त उहे अच्छा बा, जवन सस्ता होखे।''❐

सभ के कहानी

लइका कहले स–''कहानी सुनाव।'' हम कहानी सुनावे के आरम्भ कइलीं–''माई भाई–बहिन में मिठाई बांट दिहली। रूप का माई के बंटवारा सही ना लागल। ऊ बोललस–''शशि के अतना आ हमरा एतने–सा।''

माई शशिवाली मिठाई रूप के आ रूपवाली शशि के दे दिहली। रूप का एहू से सन्तोष ना भइल। फेर अइंठल–''शशि के फेर अतना आ हमरा के एतने–सा।''

लइकन में से एगो बोललस–''ई त हमार कहानी ह।''

दूसरका बोललस–''ना, ई त हमार कहानी ह।''

तिसरका बोललस–''झूठ, ई घटना त काल्ह हमरा घरे घटल।''

''बहस के बात नइखे लइका लोग ! ई त हमनी सभ के कहानी ह।'' दूर लेट के हमार बात सुनत दादाजी समझवले।❐

समझदारी

''काम मिली साहेब ?''
''का–का कर सकेल ?''
''झाड़ू–पोंछा, सफाई, परोसगीरी, सभ–कुछ साहेब !''
''तनखाह का लेब ?''
''सौ रुपया, कपड़ा–रोटी।''
''जाति का ह ?''
''हरिजन।''
''हरिजन। हूं, जगह खाली नइखे।''

* * *

''कवनो जगह खाली बा साहेब ?''
''हं, का कर सके ल ?''
''जे कहब साहेब।''
''तनखाह का लेब ?''
''जवन देब साहेब !''
''जाति का ह ?''
''बराम्हन।''
''दू दिन पहिलहूं तू काम खातिर आइल रहल ?''
''ना साहेब !''
''केहू आइल त रहे।''
''हमरा जइसन केहू दोसर होई।''
''समझ गइलीं।''
''फेर साहेब ?''
''ठीक बा, काल्ह से आ जइह काम पर।'' ❐

नेम-प्लेट

आज प्रोफेसर मधुकान्त का जिनगी के सभसे सुखद दिन रहे। कहे खातिर त उनकर घर बिआह होते बस गइल रहे, बाकिर वास्तव में बसल त आजे रहे। बीस–बाईस बरिसन तक किराया का मकान में गहस्थी उठावत–जमावत थाक गइल रहले। एह से अब आपन एगो छोट मकान बना लेले रहले। रहे खातिर आपन घर होखे, ई हर गहस्थ का दिल के साध होला आ मधुकान्तो साहेब के रहे। आज उनकर ई साध पूरा हो गइल रहे, सबेरही नयका घर में प्रवेश कइले रहले। एह से उनकर खुश भइलो स्वाभाविके रहे।

कान्त साहेब एगो खूबसूरत नेम–प्लेटो पीतर के बनववले रहले। आपन मकान होखे आ दरवाजा पर नेम–प्लेट ना लागल होखे, ई कइसे हो सकत बा। नेम–प्लेट के बिना, घर के दुआर अइसन सून–सून लागेला, जइसे बिना बिन्दी के सोहागिन के माथ। एह से घर के सामान कुछ व्यवस्थित होते, ऊ एगो टेबुल पर चढ़ के नेम–प्लेट दरवाजा पर लटका दिहले।

''इहां एकदम ठीक लागत बा नू ?'' हंस के लगे खड़ा पत्नी से कहले–''अब ई नेम–प्लेट बिना पूछले बता दी, इहे ह मधुकान्त, एम०ए० (अंग्रेजी–हिन्दी), एल०एल०बी० के नया घर।''

''हं–हं, बिल्कुल ठीक लागत बा। छोड़ीं अब एकरा के, अभी आउरुओ बहुत काम करे के बा।'' दिल के रोगी पति के ज्यादा खुश भइल पत्नी के कुछ अच्छा ना लागत रहे।

उतरे खातिर ऊ टेबुल से नीचे झुकले रहले कि उनका सीना में एक–ब–एक दर्द उठल आ अचकचा के गिर पड़ले। मूरत जइसन भइल पत्नी फटल–फटल आंखिन से देखत रह गइली, ऊ ना हिलले, ना उठले। सैंतालीस बरिस का उमर में दिल के ई तिसरका आ आखिरी दौरा रहे।

प्रोफेसर साहेब के असामयिक देहान्त के दुःखदाई समाचार, रेल का धुंआ नियर, पूरा कॉलेज आ कॉलोनी में फइल गइल। ऊ बहुत भला आ मिलनसार आदमी रहले। एह से जेही सुनल, उनका घर का ओर दउड़ल चलत आवत रहे। अब सचहूं, केहू के उनका घर के पता पूछे के जरूरत ना रहे, दरवाजा पर उनकर नेम–प्लेट जे लागल रहे।❐

चैकअप

रोज–रोज का बेमारी से ऊ तंग बाड़े आ घरवाले परेशान। बेमारियो, मेहमान नियर, कबो–कबो आवे त ठीक। ई का कि आज जुकाम, त काल्ह खांसी; परसों बुखार, त नरसों कुछ आउर। आदमी एही चक्कर में पड़ल रही, त काम कब करी !

बेमारी केहू के बस में त बा ना। एह से उहो मजबूर बाड़े। दू दिन काम पर जात बाड़े, त फेर बिस्तर पकड़ लेत बाड़े। अब उनका पता चलल कि 'सच्चा सुख निरोगी काया' काहे कहल बा। पूरुब जनम का करम के फल ह, खराब कइले होखिहें, एही से भोग रहल बाड़े।

हानि–लाभ जीवन–मरन, जस–अपजस विधि हाथ। एह में ऊ कुछुओ नइखन कर सकत, काहे कि कहल गइल बा कि होइहें सोइ, जो राम रचि राखा। तबो ऊ संकल्प कइले कि अबकी बेर ऊ आपन पक्का इलाज करइहें, आर भा पार।

एह से अबकी बेर ऊ डॉ० के०वी० शर्मा, वैद्य रामप्रसाद जइसन नीम–हकीमन के छोड़ के जनता अस्पताल के डॉ० के० कुमार से आपन 'चैकअप' करववले। कुमार जोग्य डॉक्टर हउवे, मरीजन के ध्यान से देखेले, उनको के देखले। एक सप्ताह के दवा लिख दिहले–''ई कोर्स ल, ओकरा बाद, अगिला सप्ताह फेर 'चैकअप' करब।''

दवा बहुत महंगा रहे, चौबीस रुपया पैंसठ पइसा के, जरूर अच्छा होई। सस्ता डॉक्टरन आ सस्ता दवा पर से उनकर विश्वास पहिलहीं उठ चुकल रहे। एह से दवा के महंगापन उनका ठीक होखे के आश्वासन मालूम पड़त रहे।

ऊ पूरा सप्ताह नियमित रूप से दवा लिहले। ऊ दवा लेबे के बहुत पाबन्द, अभ्यस्त बाड़े। कड़ुआ–से–कड़ुआ दवो बहुत आसानी से ले सकत बाड़े। खैर, सातवां दिने उनकर आशा निराशा में बदल गइल, काहे कि दवा कवनो खास असर ना कइलस।

उनकर स्वास्थ्य अबो ओइसने रहे; उहे कमजोरी, पसलियन में दर्द, गोड़ में भड़कन। एह से डॉक्टर के दोबारा त देखावही के रहे। ऊ अस्पताल

जाये लगले, त ई जाने खातिर जेब में हाथ डलले कि पइसा बा कि ना। निकाल के देखले, त कुल्ह एक रुपया आ पैंतीस पइसा निकलल। अतना से त दवा आई ना। फेर का कइल जाय ?

''अब कइसन तबियत बा मामचन्द ? पहिले से काफी ठीक लागत बाड़।'' पर्ची आ चेहरा के सरसरी नजर से देखत डॉ० के० कुमार कहले।

''ठीक बानी, अब त बिल्कुल ठीक बानी डॉक्टर साहेब !'' मुस्काय के असफल चेष्टा करत ऊ कहल जारी रखले–''ऊ त अइसही दुबारा 'चैकअप' करवावे आ गइलीं कि कहीं कवनो कमी–बेसी ना रह जाय।''❐

पहचान

''अब तू जरूर ठीक हो जइबू लक्ष्मी ! सरकारी अस्पताल में जे नया डॉक्टर बदल के आइल बाड़े, ऊ हमार लइकाईं के दोस्त हउवे।''

''अच्छा।''

''हमनी मिडिल तकले एके स्कूल में, एके साथ पढ़ले रहीं।''

''बाकिर एह बात के त पनरह बरिस हो गइल।''

''त ओह से का ?''

''अब राउर इयाद उनका होई ?''

''अरे, ना त का ऊ भूल गइल होइहें ! हमनी तीन साल साथे पढ़ले बानी, पूरा तीन साल। अपना लइकाईं के संघतिया के केहू भुला सकत बा का ?''

***

बारी आइल, त ऊ पत्नी का साथ ही 'आउटडोर' में चल गइले। मरीज के स्टूल पर बइठे के इशारा करत डॉ० कमल सिंह पूछले–''इनका का तकलीफ बा ?''

''हम अमरसिंह हईं, डॉक्टर साहेब ! आ ई हमार पत्नी लक्ष्मी।.... रउआ शायद हमरा के ना पहचनलीं।''

''भई, ऊ त पहचान लिहलीं, बाकिर इनका का तकलीफ बा, अब ई त बताव।''

उनकर बेमारी बतवला का बाद डॉक्टर दवाई लिखके पर्ची थम्हा दिहले–''ई दवाई बाजार से खरीदे के पड़ी।''

ऊ रोवे–रोवे जइसन हो गइले। ऊ कुछ बोलिते, एह से पहिले डॉक्टर घंटी बजा देले रहले–''नेक्स्ट।''

कमरा से बाहर आ के अमरसिंह पत्नी से सफाई दिहले–''आरे, ई पहचनले त सही, बरना आज का जुग में बड़ा आदमी बनला का बाद के केकरा के पहचानत बा।''❐

मानदंड

बेटा रामदयाल के दिल्ली गइला एक साल होखे के आइल। ऊ ना चिट्ठी–पत्री लिखले आ ना रुपया–पइसा भेजले, त रतिराम का चिन्ता भइल। ऊ पता लगावत कवनो तरह बेटा का लगे पहुंच गइले।

''चिट्ठिओ पत्री ना दिहल। का बात बा ? सभ ठीक त बा बेटा ?''

''कामें अतना बा कि चिट्ठी लिखे के फुरसते नइखे मिलत काका ! आ फेर लिखबो करतीं, त का लिखतीं।''

''पइसा त भेजत। पता बा कि उहां पइसा के कतना जरूरत बा।''

''पता बा, सभ पता बा, काका ! बाकिर भेजतीं कहां से ?''

''कांहे, तनखाह ना मिले ?''

''बहुत मुश्किल से एगो फैक्ट्री में क्लर्की मिलल बा। तीन सौ मिलेला, जवना में से सौ मकान का किराया में चल जाला, कुछ खाये–पीये में। फेर जे सज्जन नौकरी दियवले बाड़े, अभी उनकर कर्ज चुका रहल बानी।''

''आरे, त का हम तहरा के तीन सौ के क्लर्की खातिर बी०ए० तक पढ़वले रहलीं ?'' बेटा के जवाब से काका के बड़ा आघात लागल रहे।

''का करीं काका !''

''हम आपन पेट काट–काट के समूचा कमाई तहरा पढ़ाई में फूंक दिहलीं, त इहे सोच के कि तू कुछ बनब, आपन आ अपना घरवाला के भी भला करब, बाकिर तू त....।''

''काका, पेट त भरत बा।''

''पेटे भरे के बात रहे, त तहरा से त तहार छोट भाई रामचन्दर अच्छा बा। पांचो जमा तकले ना पढ़लस, बाकिर खेती–बारी क के अपनो पेट भरत बा आ हमरो।''❐

हैसियत

गनेसी बार–बार करवट बदल रहल बा। ओकरा अंटी में डेढ़ हजार रुपया बा, पूरा दू साल के कमाई। पाई–पाई जोड़ले बा बेटी रेखा के बिआह खातिर, बाकिर बिआह में अभी छव महीना बा। अतना रकम अपना लगे राखल ठीक नइखे, चोर–उचक्का के डर, आग–पानी के अनेसा।

ऊ सारा रकम अपना मिल के मैनेजर रामबाबू का टेबुल पर रख देत बा–''ई पइसा रउआ अपना लगे जमा करलीं साहेब ! हम गरीबन खातिर त रउरे बैंक बानी। बेटी का बिआह में ले लेब।''

बिआह निगिचा गइल बा, खाली दस दिन बांचल बा। कपड़ा–लत्ता, गहना–अंगूठी, खाना–पीना, सभ कुछ करे के बा। एह से गनेसी रुपयो लेबे साहब का लगे पहुंच गइल। ''हमरा बेटी के बिआह आ गइल साहेब ! एह से हमरा रुपया चाहीं।'' ऊ कहत बा।

'हं–हं', जतना चाहीं, ओतना ले जा !'' कह के रामबाबू सामने बइठल डॉ० धर्मचन्द का आंखिन के भाव पढ़े लागत बाड़े।

''अभी त एके हजार दे दीं, पांच सौ भांवरवाला दिने ले जाएब। समूचा रकम अबे ले जाएब, त खरच हो जाई।''

रामबाबू तिजोरी से निकाल के एक हजार रुपया के गड्डी गनेसी के थम्हा देत बाड़े। गनेसी दफ्तर से बाहर, दरवाजा का लगहीं खड़ा होके, नोट गिने लागत बा।

''कमाल के आदमी रउओ बानी रामबाबू !'' डॉ० धर्मचन्द के आवाज रहे–''बिना लिखे–पढ़ी के एक हजार रुपया ओकरा के थम्हा दिहलीं ! भाई, लेबे वाला के हैसियत देखल करीं।''

''का करीं भाई, मजदूर मिल के पहिया होला। ओकरा के चलावे खातिर समय–समय पर ग्रीस देबहीं के पड़ेला। एकरा त लड़की के बिआह बा, बिना दिहले चरे ना रहलह।'' ई रामबाबू रहले।❐

घर लवटत कदम

महाराम का जिनगी के दू–तिहाई सफर बैलन के पोंछ पकड़ के घर से खेते आ खेत से घरे जाते–आवत पूरा हो गइल रहे। पूरा तीन बीसी आ ऊपर दू साल गुजार दिहले ऊ सूखत–भींजत, कबो पसेना से, त कबो बरसात से। कबो ढंग से ना पहिरले, ना खइले। कवनो बखत एगो हबेली जरूर बना लेले रहस, जवन सौ घरवाला गांव में अकेले रहे।

पिछिला साल उनकर बड़का हरलाल बी०ए० पास क के जब दिल्ली में नौकर हो गइल, त महाराम का जिनगी के पहिला अउर सभसे बड़का साध पूरा हो गइल रहे। उनकर दोसर साध रहे दिल्ली देखे के। उहो आज पूरा होत रहे। ऊ कुछ दिन खातिर बड़कू का लगे दिल्ली आ गइल रहले।

बाकिर, दिल्ली अइला का तीन–चार दिन बादे, उनकर मन उचटे लागल। बड़कू पूरा दिल्ली घुमवले, लालकिला, कुतुबमीनार, जामा मस्जिद, जन्तर–मन्तर, सभ देखवले, बाकिर बाप खुश ना भइले। उनकर चेहरा भरल बादर नियर लटकल रहत रहे।

एक रात जब खाये बइठले, त बापू कहले–''हमरा के अब गांवे जायेद बेटा ! हम एह शहर में आउर ज्यादा नइखीं ठहर सकत।''

''काहे, का बात बा बापू ? अतना जल्दी गांवें चल जइब ?''

''हं बेटा !''

''कवनो बात त होई ?''

''कवनो बात ना।''

''ना, शायद हमरा खातिरदारी में कवनो कमी रह गइल बा।''

''इहो बात नइखे बेटा !''

''फेर कवनो तकलीफ बा ?''

''तकलीफो कवनो नइखे।''

''त फेर अतना जल्दी काहे जाये के चाहत बाड़ गांवें ?''

''बात ई ह बेटा, एह दिल्ली में हमार कवन औकात बा ! एह में त हम कोठी–कारवाला के नोकरो नइखीं लागत ! ओह गांव में हम हवेलीवाला त कहाइले।''❐

संस्कार

ऊ बहाली का बाद, पहिला बार ऑफिस आइल रहले। उनका टेबुल का ठीक सामने, देवाल पर, गांधी जी के बड़का फोटो लागल रहे। फोटो का नीचे लिखल रहे–''मन, वचन आ कर्म से कइल पवित्र आचरण तप ह।''

उनका सामनेवाली सीट पर टाइपिस्ट मिस कुसुम बइठेली। आज, जबसे ऊ आइल बाड़े, केतना बेर उनका के अपना ओर ताकत देखले बाड़े आ हर बेर उनकर मन फाइल से उचट जाता। सामनेवाला फोटो पर ध्यान जाते ऊ परेशान हो जात बाड़े।

ऊ एके दिन में देख लेले बाड़े कि इहां काम कम होला आ टीका–टिप्पनी आ विवाद–बतकही ज्यादा। सबेरे से अबले उनको पर कई बेर छींटाकसी कइल जा चुकल बा। हरमेसा उनकर ध्यान फोटो पर जाके अंटक जाता।

सबेरे से कई आदमी सीमेन्ट खातिर चक्कर लगा चुकल बाड़े। हर बेर ऊ कुछ कहे के चाहत बाड़े, बाकिर उनकर नजर फोटो पर जाके टिक जाता आ ऊ सभका के 'फेर अइह' कहके टार देत बाड़े।

अगिला दिन सबेरे, सभसे पहिले आ के, ऊ सामने लागल गांधी जी के फोटो उतार के, अपना पीछेवाला देवाल पर टांग दिहले। आज ऊ बिना कवनो संकोच के कई गो काम निपटवले।❐

यात्रा-वत्त

जब ऊ मजदूर रहले, त पैदल फैक्ट्री जात रहले। दोसर कई लोग साइकिल पर जात रहे। ओह लोग के देखके ऊ सोचस–''काश, उनको लगे साइकिल रहित !''

जब ऊ क्लर्क भइले, त उहो साइकिल ले लिहले। अब लगे से जात मोटर साइकिल देखस, त निराश हो जास। सोचस–"उनको लगे मोटर साइकिल होखे के चाहीं।''

जब ऊ सेल्स–अफसर बनले, त ऊ मोटर साइकिल खरीद लिहले। अब उनका कारवालन से ईर्ष्या होखे लागल। ऊ सोचस–''मोटर साइकिल से का, उनको लगे कार होइत, त बात बनित।''

जब ऊ मैनेजर भइले, त उनका कार मिल गइल। अब ऊ कोठी का दरवाजा पर कार में बइठस आ फैक्ट्री का गेट पर उतरस। अब ऊ सचहूं बहुत खुश रहले, उनकर मनोकामना जे पूरा हो गइले रहे।

बाकिर धीरे–धीरे उनकर स्वास्थ्य खराब होखे लागल। डॉक्टर सलाह दिहले कि उनका रोज नियम से दू–चार किलोमीटर पैदल चले के चाहीं। एह से अब उनकर कार गैरिज में खड़ा रहेला आ ऊ पैदल फैक्ट्री आवत–जात रहेले।❐

आवेवाला के भय

'काल्ह' बुढ़ा गइल रहे। खुरदुरा पीयर जइसन देह, जाला लागल खोढ़िला अइसन आंख आ कवनो भुतहा आकति जइसन चेहरा ! बाकिर 'आज' जवान रहे, पुष्ट आ सुड़ौल। एक दिन बाप–बेटा में कवनो बात पर तकरार हो गइल।

''तहार बुद्धि सठिया गइल बा, बुढऊ ! सोचल–समझल अब तहरा बस के बात नइखे। अब अपना कोठरी में पड़ल राम के नाम लिहल कर।''

''बेटा, बुजुर्गन के अपमान कइल अच्छा ना होला। जवन समय अभी बा, ऊ हरमेसा ना रही। समझदार, समय के चाल समझ के, अपना बड़–बूढ़न के पद चिह्नन पर चलेला।''

''आरे बुढऊ ! तू का समझब ? हम आज हईं, आज। हम जे चाहीं कर सकिले। कहत तंहरा पद–चिह्नन के समानान्तर चिह्न बना के सिद्ध कर दीं कि तहार चिह्न गलत बा आ हमार सही।''

''ताकत सभ–कुछ कर सकेला बेटा ! बाकिर ताकत से बनावल सांच अन्तिम ना होला।''

''तहार दकियानूसी विचार–धारा बलगम बनके तहरा फेफड़न में भर गइल बा, दिन–भर खेंखारत रहेल, बस ! हर सांच खातिर ताकत एगो चुनौती होला आ चमत्कारो, समझल ?''

काल्ह असहाय हो चलल रहे। ओकर संस्कार आ मजबूरी आके गला में अंटक गइल। ओकरा घुटन अहसन महसूस होखे लागल।

''बुजुर्गन के अपमान करेवाला कबो सुखी नइखे हो सकत। आवेवाला से त डर बेटा ! जे आई, ऊ तहरा जगह पर खड़ा होई आ तू हमरा जगह पर। ओह दिन के कल्पना कर बेटा !'' कह के 'काल्ह' शान्त हो गइल।

तबे से 'आज' आवेवाला 'काल्ह' का भय से डेरात चलल आ रहल बा।❐

उत्थान-पतन

''बेटा, तहार आवाज बहुत डेराइल लागत बा। तू अतना बेचैन काहे बाड़ ?''

''देश पर दुश्मनन के अधिकार हो गइल बा गुरुदेव ! हजारन सैनिकन के प्रान निछावर कइला का बादो, देश का प्रभुसत्ता के बंचावल ना जा सकल।''

''चिन्ता के कवनो बात नइखे बेटा ! जा, आ देश के उद्धार खातिर धीरता का साथे लड़ाई कर।''

''कुछ देश का बारे में कह बेटा !''

* * *

''धन–धान्य से सम्पन्न देश मउज–मस्ती में डूबल बा। जनता सुख–चैन के बंसी बजा रहल बिया। कहीं कवनो कमी नइखे भगवन् !''

''कुछ आउर ?''

''कविता के छन्दन में, संगीत के धुनन में, महफिल के प्यालियन में, सभ जगह रस बा, आनन्द बा। कला–सौन्दर्य आ वैभव–विलास में समूची प्रजा डूबल बाड़ी गुरुदेव !''

''बहुत चिन्ता करे जोग हालत बा। बेटा, देश के सम्हार।''

''गुरुदेव, राउर आशय ? देश के पराधीन भइला पर रउआ तनिको बिचलित ना भइलीं, बाकिर आज एह चिन्ता ना करेवाली स्थिति से बहुत चिन्तित बानी।''

''शारीरिक रूप से पराधीनता स्वीकार करेवाला आदमी का उत्थान के सम्भावना बनल रहेला, बाकिर मानसिक रूप से पराधीन हो गइला पर आदमी के पतन निश्चित बा।''❐

कवि के जन्म

आदमी सच्चा मन से सरस्वती के साधना कइलस। सरस्वती प्रसन्न होके कहली–''बेटा, कुछ वर मांग।''

आदमी अपना हृदय के परत खोल के कहलस–''हे मां, अगर राउर इहे इच्छा बा आ हमरा के कुछ देबहीं के बा, त वरदान देके समर्थवान बनाईं कि हम जीवन आ जगत् के खुलल आंखिन से देख सकीं आ भाव के साध के भाषा में बान्ह सकीं। हम संसार के आपन देखल लेखा देखा सकीं।''

सरस्वती शर्त रखली–''तू ना सुन्दरता देख सकब आ ना माधुर्य जान सकब।''

आदमी विचार कइलस। ओकरा शर्त स्वीकार ना भइल–''सौन्दर्य कविता के प्रान ह, आ बिना माधुर्य के सभ बेजान हो जाई। मां, हमरा अइसन प्राणहीन कविता ना चाहीं।''

आदमी का तर्क से मां सरस्वती प्रसन्न हो गइली। ऊ 'एवमस्तु' (अइसने होखे) कह के आदमी के फेर वरदान दिहली।

अगिले छन पुलकित मन से ऊ आदमी लिखे में लीन हो गइल आ कवि कर्म से छविमान ऊ आगे चल के महाकवि हो गइल।❐

इतिहास गवाह बा

संदीप
राशिनकर

परिचित

''बस में छूट गइला के कारन पुलिस उनकर सामान अपना कब्जा में ले लेले रहे। अब, केहू परिचित आदमी के जमानत के बादे, ऊ सामान मिल सकत रहे।

''हमार पत्नी बहुत बेमार बाड़ी। हमरा जल्दी घर पहुंचल बहुत जरूरी बा, होल्दार साहेब !'' ऊ विनती कइलस।

''भई, कह त दिहलीं, केहू जानकार आदमी के ढूंढ़ के ले आव आ ले जा आपन सामान।''

''हम त परदेसी आदमी हईं। साहेब, दू सौ मील दूर के शहर में, के मिली हमरा के जानेवाला !''

''ई हम नइखीं जानत। देख, ई त कानूनी खानापूर्ति ह। बिना खानापूर्ति कइले हम सामान तहरा के कइसे दे सकिले ?''

ऊ समझ ना पावत रहे कि खानापूर्ति कइसे होखे !

कुछ सोच के ऊ दसके नोट निकललस आ चुपके से कांस्टेबुल का ओर बढ़ा दिहलस। नोट के जेब में खसका के, ओकरा के डांट पियावत, कांस्टेबुल कहलस–''तू शरीफ आदमी लउकत बाड़, एही से सामान ले जाये देत बानी। बाकिर फेर अहसन मत करिह। समझल ?''

दस के नोट कांस्टेबुल के परिचित बना देले रहे।❐

जड़ कटल गाछ

उनका गांव छोड़ला बीसो बरिस से अधिक हो गइल बा। अब फेर से कवनो गांव में बसे के उमेदो नड़खे, काहे कि तीनू भाई नौकरी–पेशा बाड़े, जहां जवना शहर में नौकरी करेले, ओहीजा के वासी हो गइल बाड़े। लइकन के परवरिस आ शिक्षा–दीक्षा ओहीजा, शहरी माहौल में भइल बा। एहसे उनका गांवे लवटे के सवाले नइखे उठत।

तबो बनवारी का अपना खानदानी मकान आ घर–बार का जमीन से गहिरा लगाव बा, जे समय बीतला के साथे–साथे, कम होखे का बदले, बढ़ते जाता। उनका एह बात के बहुत खुशी बा कि उनको पुस्तैनी जायदाद बा। छुट्टिअन में जब कबो ऊ गांव के आपन टूटल बीरान मकान में, घड़ी–दू घड़ी खातिर जा के बइठेले, त उनकर मन हरिअर हो जाला, जइसे सुखार में बरिसन पहिले ठूंठ भइल गाछ पर, बरसात के पहिलका फुहार का बाद, पत्ती फूट आइल होखे। घर–गांव से जुड़ल लइकाईं आ जवानी के सभ इयाद एक–एक क के ताजा हो जाला।

मोहल्ला का कई लोगन के बनवारी का मकान पर नजर बा। उदमी, पहलाद, सुल्तान आदि कई बार उनका से कह चुकल बाड़े–''एकरा के अब बेंच द। तहरा एकरा के रखके का करे के बा ! खाली पड़ल बा, पड़ोसी दबवले जा रहल बाड़े। देखभाल का अभाव में अइसहूं खराब हो जाई।''

उनका बाकी बातन से सहमत भइलो, पर बनवारी मकान बेंचेवाली बात से सहमत ना हो पावत रहले। हं, दूनू छोट भाई गिरधारी आ हरद्वारी सहमत रहले। कहत रहले–''जब उदमी तीन हजार दे रहल बाड़े, त बेंच देबे के चाहीं। कवन खान गाड़ल बा एह में। हमनी में से त केहू के इहां रहे खातिर आवे के बा ना।''

बनवारी जानते बाड़े, खान ना सही, उनकर नाल त गड़ल बा। बाकिर ई बात उनका दूनू छोट भाइयन का समझ में नइखे आ सकत, काहे कि ऊ बनवारी के नौकरी लागते छुटपने में गांव छोड़ देले रहले आ उनके

साथे रह के, शहर में पढ़ले–बढ़ले। ऊ पूरा शहरी हो गइल बाड़े, बाकिर बनवारी का मन के आधा हिस्सा में आजो गांव बसल बा।

काल्हे हरद्वारी के चिट्ठी मिलल, जवना के पढ़ के बनवारी के सांस नीचे–के–नीचे आ ऊपर–के–ऊपरे रह गइल। लिखल रहे–''गांववाला मकान आ जमीन उदमी के बेंच देले बानी। पइसा ले के कच्चा लिखा–पढ़ी कर देले बानी, पक्का रजिस्ट्री गर्मी का छुट्टी में रउरा अइला पर करवा लेब।''

बनवारी के हालत जड़ कटल फेड़ नियर हो गइल रहे। उनका लागल कि ऊ हिचकोला खा रहल बाड़े आ कबो धड़ाम से गिर सकत बाड़े।❐

खेलौना

हरिबाबू नजर घुमा के देखले, त उनका अपना ड्राइंग–रूम के हर चीज बहुत सस्ता आ घटिआ नजर आइल। 'इहो कवनो ड्राइंग–रूम ह !' सोच के ऊ उदास हो गइले।

ड्राइंग–रूम त धीरो साहेब के बा, एकदम फस्स क्लास। काल्हे जन्म–दिन के बधाई देबे गइले, त देखते रह गइले। का सोफा, रंगीन टी०वी०, वी०सी०आर० आ फ्रिज रहे आ का सजावट रहे, वाह !

आउर हं, शो–केस में कतना शो–पीस सजल रहे, एक से बढ़ के एक, पीतर के, लकड़ी के, संगमरमर के ! एगो रेक त पूरा–के–पूरा खेलौना से भरल रहे आ हर खेलौना कतना कीमती, खूबसूरत आ चमचमात लागत रहे।

छन–भर खातिर हरिबाबू कहीं खो गइले, तबले उनकर चुन्नू–मुन्नू 'पपा आ गइले, पपा आ गइले' के शोर मचावत भीतर घुस अइले। फेर उछलत–गावत–झूमत ऊ दूनू पूरा ड्राइंग–रूम के एगो संगीतमय ताजगी से भर दिहले।

हरिबाबू का चेहरा पर हलुक मुस्कान झलक आइल। बस फेर का रहे, दूनू लइका चढ़ बइठले उनका कान्ह पर आ लगले उछल–कूद के खेले।

अब फेर नजर डलले, त हरिबाबू के आपन सभ–के–सभ चीज बदलल नजर आइल।

'धीर साहेब के ड्राइंग–रूम में सभ त बा, बाकिर अइसन जानदार खेलौना त नइखे।' ऊ अपने–आपसे कहले आ लइकन के कस के छाती से लगा लिहले।❐

बहाव का सामने

आज हम सबेरही से परेशान बानी। बिटिआ बेमार बिया। तेज बुखार बा। कुछ जुकाम–खांसियो बा। डॉक्टर का दवाई के कवनो असर ना भइल। बुखार जइसे–के–तहसे बा।

हम बार–बार ओकरा माथ पर हाथ रख के देखत बानी। सान्त्वनो देत बानी–''चिन्ता के कवनो बात नइखे। बहुत जल्दी ठीक हो जाई हमार बिटिआ। बुखार त आवते रहेला।''

हमरा प्यार का गरमाहट से ऊ आंख खोल देत बिया। आंख लाल हो गइल बा, लगातार पानी बह रहल बा। ऊ मुस्काय के चेष्टा करत बिया। फेर धीरे से कहत बिया–''डैडी, मन करत बा, बेमारे रहीं।''

''काहे बेटा ?'' हम हरान होके पूछत बानी।

''जब बेमार पड़ीले, त रउआ हमरा के आशु भइया जतने प्यार करीले नू ?'' बिटिआ स्पष्ट करत बिया।

हम सनाक् दे हो गइलीं। बेटी के अदालत हमरा के अपराधी घोषित कर देले रहे। बेटा–बेटी में हम कबो भेद ना कइलीं, बाकिर दू बरिस छोट भइला के कारन बेटा आशु का प्रति लगाव भइल स्वाभाविक बा। निशि ओकरा के अपना प्रति भेदभाव समझ लेले रहे।

हम ओकरा के कस के दबा लेत बानी। हमरा लागत बा कि अगर हम आपन पकड़ ढीला कर दीं, त ओकरा आंख से उमड़े वाली जल–धारा हमरा के बहा ले जाई।❐

सपना के पूर्ति

जन्म–दिन के धूमधाम खतम भइल, त सभ लोग राजीव का भविष्य के विषय में आपन–आपन राय आ इच्छा प्रगट करे लगले। सभ के 'राजू' पर पूरा हक रहे, एह से हरेक आदमी चाहत रहे कि ऊ बड़ होके ओकरा सपना के साकार करे।

''हम त अपना बेटा के डॉक्टर बनाएब।'' अक्सर बेमार रहेवाली मम्मी आपन इच्छा प्रगट करत कहली–''घर में डॉक्टर होई, त हमरा परेशान ना होखे के पड़ी।''

''आरे, डॉक्टरो के कवनो नौकरी ह ! दिन–भर क्लीनिक में मरीजन का बीचे फंसल रह। ना कहीं आवे–जाये के फुर्सत आ ना खेले–खाये के। हम त अपना बेटा के, अपना तरह, प्रोफेसर बनाएब।''

''भाई, अपने गइब लोग कि एह बूढ़ो के सुनब लोग ?'' अनुभव में बूढ़ दादा कहले–''आज डॉक्टर, प्रोफेसर के के पूछत बा ! हम अपना बेटा के आई०पी०एस० बनाएब, आई०पी०एस०।''

जन्म–दिन पर विशेष तौर पर आइल बुआ आपन कल्पना बतावत कहली–''राजू त कलाकार बनी, कलाकार। एकर अंगुरी देखके हम त बहुत पहिले समझ गइल रहीं। देखली ह, बड़ा होके हमार बेटा हमार कल्पना जरूर साकार करी।''

आज चउदहवां बरिस में प्रवेश करेवाला घर के एकलौता चिराग, बड़–बुजुर्गन के बात सुनत, मने–मन सोच रहल बा कि हम एही लोग के सपना साकार करत रहब कि हमरा अपनो कवनो सपना साकार करे के अधिकार बा।❐

तमाचा

अंशु अपना फैसला पर दीर्ह रहे। मम्मी के दिहल गइल कवनो तरह का लोभ–लालच के ओकरा पर कवनो असर ना भइल आ ऊ साफ घोषणा कर दिहलस–''मम्मी, तू जा नाना–नानी का, लगे दीदिओ के ले जा, हम त एही जा डैडी का लगे रहब।'' ओकरा अपना डैडी यानी हमरा से अतना लगाव बा, ई हमनी जानत रहीं, बाकिर लगाव एह हद तक बा एकर पता हमरा आज चलल।

जाये के तैयारी में बिटिआ के कपड़ा पहिरावत ओकर मम्मी अंशु महाशय से पूछली–''खाना कहां खइब ?''

''होटल में।'' ऊ तपाक दे जवाब दिहलस।

''तहरा के नहवाई के ?''

''डैडी नहवइहें हमरा के, आउर के ?''

''खेलब केकरा साथे ?''

''गुड़िआ का साथे, पारुल का साथे खेलब।''

''जब डैडी कुरुक्षेत्र जइहें, तब का करब ?''

''हमहूं कुरुक्षेत्र चल जाएब।''

''रास्ता में भूख लागी, त का खइब ?''

''समोसा खाएब, बर्फी आ रसगुल्लो खाएब।''

''बाकिर इहां नाना–नानी ना होइहें।''

''उहां डैडिओ त ना होइहें।''

हम चार बरिस का बच्चा के समझ, हाजिर–जवाबी आ बोले में निपुनता देख के हरान रहलीं। हम गद्‌गद होके ओकर बात सुनत रहलीं।

जब ओकर मम्मी बिटिआ के जूता पहिनावे के भइली, त अंशु ओकर जूता पहिर के पलंग का नीचे घुस गइल। हमरा बार–बार कहला, बनवला आ डेरववला–घमकवलो पर बाहर ना निकलल, घुटना का बले एने–ओने भागत रहे। जूता के पालिस खराब हो जाये के कारन बबली रोवे लागल, त हमरा ओह पाजी पर बहुत गुस्सा आइल आ हम हाथ बढ़ा के एगो जोरदार तमाचा ओकरा के लगा दिहलीं।

''मम्मी, हमरो के तैयार कर द।'' तमाचा लागते ऊ बाहर निकल आइल आ मम्मी से चिपक गइल–''हमहूं तहरा साथे चलब।''

''काहे, अब का बात हो गइल ?''

''इहां डैडी हमरा के मारत बाड़े नू, एही से।''

अंशु के ई बात सुनके हम ओहू से जोरदार तमाचा अपना गाल पर अनुभव करे लगलीं।❐

इतिहास गवाह बा

उनकर निगाह आलमारी पर गइल, त देखले, रवि उनकर सभ किताब आ कइगो दोसर चीजन के बेतरह एक ओर खिसका के उहां आपन बस्ता रख देले रहे। ओह बच्चा का एह हरकत पर गुस्सा त आइल, बाकिर पूछ लिहलीं–''रवि महाशय, तू हमार चीज ओने काहे खिसका दिहल ?''

''हमार बस्ता ठीक से ना आंटत रहलह नू, एही से।'' बच्चा सहज भाव से जवाब दिहलस।

बच्चा के जवाब सुनके उनका लागल, जइसे ऊ बूढ़ हो गइल बाड़े आ रवि उनकर चारपाई कमरा से निकाल के, बाहर ओसारा में डाल देले बा, काहे कि कमरा में ओकर चारपाई जे ठीक से ना आवत रहे।

उनका एक–ब–एक इयाद हो आइल, दस बरिस पहिले उहो त इहे कइले रहले, अपना बूढ़ बाप का साथे।❐

माई

हमरा विश्वास ना भइल, बाकिर जब छोट शिकायत कर रहल बाड़े, त कुछ सच्चाई जरूर होई। माई के अब ई का हो गइल बा, हम समझ ना पावत रहीं।

माई अइसन ना रहली। तंगियो में हमार कतना खियाल राखत रहली। कबो कवनो चीज के कमी महसूस ना होखे दिहली। काका से कुछ कहे–मांग के हिम्मत ना होत रहे। जब जरूरत होखे, 'माई–माई' क के माई का लगे पहुंच जात रहीं। माई बिना बतवले सभ–कुछ समझ जात रहली। फेर जइसे होखे, हमार फरमाइस पूरा करत रहली। एकरा खातिर कई बार उनका काका से झूठ बोले के पड़त रहे आ झाड़ो खाये के पड़त रहे।

अब घर के हालत ठीक बा। हमहूं हर बार जाये का बेरा माई के कुछ–ना–कुछ देइए के जाइले। फेर अइसन काहे करेली माई ?

सीधा कुछ पूछे के त हिम्मत ना रहे, एह से घुमा–फिरा के पूछलीं, त माई बोललीं–''रवि आ रेखा ठीक कहत बाड़े बेटा !''

''बाकिर माई ...!'' हम बहुत हरान भइलीं।

''हमहूं का करीं, हमरो हाथ तंग रहत बा। एही से उनका जेबखर्ची में कटउती करे के पड़त बा।'' भारी मन से माई बतवलीं–''तू जानते बाड़ राकेश, सामने वाला ज्ञान के परसाल सड़क–दुर्घटना में मौत हो गइल। बेचारी शान्ति पर तीनगो छोट–छोट लइकन के बोझ बा। कवनो साधन नइखे, कहीं से कुछ मिलबो ना कइल।''

''हं, उनका हालत के हमरा पता बा। बाकिर ओकर रवि–रेखा का खर्च से का संबंध बा ?'' हम जानल चहलीं।

माई भावुक हो चुकल रहीं–''सम्बन्ध बा बेटा ! हमरा लगे कुछ होला, त हम ओह गरीब के मदत कर दीले। लइका पला जइहें बेचारी के, अइसही।''

माई के बात सुनके हमरा लागल, ऊ त हमरे ना, सभ के माई हई। ''माई !'' हमरा मुंह से अतने निकलल आ हम झुक के श्रद्धा से उनकर चरन चूम लिहलीं।❐

जीवन-रेखा

छुट्टी बिता के चलत समय ऊ बइठक का ड्योढ़ी पर गुम–सुम बइठल काका के पांव छुअले त काका आशीर्वाद खातिर आपन हाथ उनका माथ पर रख दिहले–"अच्छा बेटा, हंसियारी से जइह। हम त अब तहरा के जातो नइखीं देख सकत, आंख फूट गइल।"

ऊ द्रवित हो गइले। समूचा अतीत कवनो चलचित्र का तरह से एक–ब–एक उनका आंख का सामने घूम गइल।

ई बरिसन पुरान सिलसिला ह, लगभग बीस बरिस लम्बा। ऊ जबे बाहर जात रहले, काका हरमेसा उनका के दूर तक छोड़े जात रहले। उनका बार–बार मना कइलो पर उनकर मन लौटे के ना होत रहे। 'थोड़े दूर आउर, थोड़े दूर आउर' करत–करत ऊ एक–डेढ़ किलोमीटर दूर तक चल जात रहले, उनका साथे। ओकरा बादो तबले टकटकी लगवले देखत रहस, जबले ऊ आंखिन से अलोपित ना हो जात रहले।

बाकिर आज, आंख के बुझ गइला से, पुत्र–बिछोह के सभ पीड़ा काका भीतरे–भीतर पीयत जात रहले।

बरिसन का विस्तार में फइलल जिनगी कतना जल्दी सिमट जाला। उनका लागल, जइसे काका जिनगी के अन्तिम छोर पर डेग रख देले बाड़े। उनकर अगिला डेग कहां पड़ी, ई सोचत ऊ कांप गइले।

ऊ जात–जात बार–बार मुड़ के काका के देखत रहले। काका ओइसही बइठल रहले, बुझल, जड़ जइसन आ उदास।❐

रिश्ता के निमाह

डॉ० अश्वमुख का स्वभाव में आइल बदलाव से हम हरानो रहीं आ परेशानो। एक–ब–एक उनका का हो गइल बा, हम समझ ना पावत रहीं। एक–दू बार इशारा में उनका से पूछे के प्रयासो कइलीं, बाकिर ऊ कवनो सीधा उत्तर ना दिहले, बस हां–हूं तकले करत रहले। एह से हम भाभी जी, श्रीमती अश्वमुख से पूछ लिहलीं–''डॉ० साहेब के का हो गइल बा ? पिछिला कुछ दिन से बदलल दिखाई पड़त बाड़े, बर्तावो में बहुत बदलाव आ गइल बा। एकर कवनो कारन ?''

''भाई साहेब !'' हमरा सवाल के जवाब देबे के बजाय भाभी जी कहली–''बुरा ना मानीं, त एगो बात कहीं, रउआ हमरा घरे आइल छोड़ दीं।''

''बाकिर काहे ?'' हम भाभी जी के बात सुनके हक्का–बक्का रह गइलीं। एह से कहलीं–''हम एकर कारन जान सकिले ?''

''अश्वमुख जी का अच्छा नइखे लागत।''

''कमाल बा ! उनका काहे नइखे अच्छा लागत ?''

''उनका शंका बा कि हम दूनू का बीच ....।''

''बाकिर भाभी, हम त रउआ के आपन बड़ बहिन के तरह मानीले। तबो ?'' भाभी के बात सुनके हमार खून सूख गइल रहे।

''भाई–बहिन का रिश्ता के महत्त्व त उहे जान सकत बा नू भइया, जे एह रिश्ता के निमाहे के जानत होखे। अश्वमुख जी के त एकेगो बहिन बाड़ी, बाकिर उनका त इहो पता नहखे कि ऊ जीयत बाड़ी कि मर चुकल बाड़ी।''❐

तहरा के का बताई ?

सुरेश के पता ना एक–ब–एक का हो गइल बा। उखड़ल–उखड़ल रहत बाड़े, बात–बात पर चिड़चिड़ा जात बाड़े। अपना के अपना 'क्लिनिके' तक सीमित कर लेले बाड़े, ना कहीं अपने जाये के आ ना ज्योति के ले जाये के। जब कबो ऊ चले के आग्रह करत बाड़ी, त कह देत बाड़े–''तू शीला का साथे चल जा।''

आ ई ज्योति से नइखे हो पावत। पति का रहने ऊ काहे जास कहीं अपना छोट ननद का साथे ! अबगे त बिआह भइल बा उनकर। उनका त बुरा लगबे करी, लोगवो का सोची।

ज्योति समझ नइखीं पावत कि बिआह के तुरन्त बाद सुरेश का स्वभाव में अतना बदलाव कइसे आ गइल बा। का ऊ उहे सुरेश हउवे, जे बिआह का पहिले उनकर हाथ थाम्ह के अक्सर कहत रहले–''तू त हमार प्रान हऊ ज्योति ! तहरा से अलग होके हम जी ना सकब।''

एह से आज सुरेश से साफ–साफ पूछ लेत बाड़ी–''का हो गइल बा रउआ ? काहे नइखीं निकलत घर से ? का हमरा के कैद करे खातिर इहां ले आइल रहीं ? बोलीं...।''

''ज्योति, तू जानत बाड़ू, हम कतना व्यस्त रहत बानी। मरीजन के तांता लागल रहत बा। अइसन में हमरा 'क्लिनिक' छोड़ल उचित नइखे।''

''का ई रउआ पहिले ना जानत रहीं डॉक्टर सुरेश ? रउआ तब काहे ना सोचलीं ?... आ फेर दोसरो डॉक्टर त बाड़े।''

''तू हमार दिमाग मत चाट ज्योति ! कह दिहलीं नू, जहां जाये के होखे, शीला के साथे ले जाइल कर। हमरा हरमेसा साथे गइल जरूरी नइखे।''

''हं, बा जरूरी। रउआ खातिर ना सही, हमरा खातिर राउर साथे गइल जरूरी बा। आखिर काहे नइखीं चलत रउआ हमरा साथे ? बोलीं, का कवनो कमी बा हमरा में ?'' कहत–कहत ज्योति फूट–फूट के रो पड़ल रही।

''ज्योति, हम तहरा के का बताईं ! कमी तहरा में ना, हमरा में बा। तू बहुत खूबसूरत बाड़ू आ हम....हम....। जब तू हमरा साथे रहेलू, सभ लोग तहरे के देखेला, हमरा ओर केहू नजरो तक ना डालेला।''❐

दोसरकी औरत

ऊ अपना खिड़की का लगे खड़ा दूर सड़क पर रेहड़ीवाला से सब्जी खरीदत औरत के देख के मुस्कात रहले। ऊ औरतो उनका के बराबर 'लिफ्ट' देत रहे।

''सचहूं कतना प्यारी बिया ई औरत ! काश, उनकर पत्नियो ओतने आकर्षक रहती !'' ऊ आह भरले।

रसोई–घर से आ रहल बर्तन खड़खड़इला का आवाज से ऊ निश्चिन्त रहले कि श्रीमती जी अपना काम में लागल बाड़ी।

उनकर दिल खिड़की से हटहीं के ना करत रहे। सब्जी खरीदेवाली औरत, मौका देख के, कुछ अइसन इसारा क देले रहे कि ऊ दिल थाम्ह के रह गइले।

खटखट के कुछ कम हो गइला पर, देखे खातिर कि पत्नी के काम खतम त ना हो गइल, ऊ रसोई–घर में घुसले, त अवाक् रह गइले–''तू !''

''जी, बर्तन साफ कर रहल बानी।''

''अपना धकधक करत दिल के कवनो तरह से शान्त करत ऊ पूछले–''फेर बीबीजी कहा गइल बाड़ी ?''

''जी, ऊ बाहर सब्जी खरीद रहल बाड़ी।'' बर्तन मलत महरी जवाब दिहलस।❐

घर-बेघर

ऊ बच्चा आ घर–बार में जेतने अझुरात चल गइली, पति उनका से ओतने दूर होत चल गइले। ऊ जब देख, तब कवनो–ना–कवनो काम में व्यस्त रहस। पति खातिर उनका लगे कबो समये ना रहत रहे।

–अभी फुरसत नइखे, झाड़ू–पौंछा करे के बा।

–राकेश के स्वेटर अधूरा पड़ल बा, पहिले ऊ पूरा करब।

–बच्चन का कपड़ा सिय के बा, बाद में कुछ अउर।

आ पति का मन के ज्वार, उठे से पहिलही, उतर जाता।

बाकिर आज, बीतला रात लड़खड़ात गोड़ से पति भीतर घुसले, त ऊ कांप गइली। आज उनका पहिला एहसास भइल कि घर–बार का चक्कर में ऊ आपन असली 'घर' खो देले बाड़ी।❐

सच्चा पति

आदमी के स्वभावो कतना विचित्र ह। पहिले उषा का पति से शिकायत रहे कि उनका हरमेसा पत्नी से शिकायत रहेला आ अब पति कवनो शिकायत नइखन करत, त ऊ परेशान बाड़ी कि उनका शिकायत काहे नइखे।

पति के समझे में उनका से सचहूं गलती हो गइल बा। दिल के त ऊ खराब ना हउवे। अपना गलती के एहसास आ पति का स्वभाव में आइल बदलाव उनका के भीतर ले कचोट रहल बा। एह से ऊ निर्णय कर लेले बाड़ी कि ऊ आज उनका से साफ कह दीहें।

''अब हम रउआ के सन्तुष्ट नइखीं रख सकत। पहिले जब ठीक रहीं, तबो कबहीं रउआ के सन्तुष्ट ना कर पवलीं। अब त अक्सर बेमारे रहत बानी।"

"हमरा सन्तुष्टि–असन्तुष्टि का विषय में सोचे के तहरा जरूरत नहखे। पहिले तू ठीक हो जा।"

''ना, हम राउर परेशानी समझत बानी, रउआ नइखीं कहत, त का ह। रउआ दोसर बिआह करली...।''

पति के हाथ जोर से गाल पर पड़ल, त उषा फूट–फूट के रो पड़ली। छन–भर बाद पति आपन ओठ उनका ओठ पर रख दिहले, बोलले–"बिआह के मतलब प्यार, भावना आ आत्मा के रिश्ता होला। तू हरमेसा उलिटे सोचेलू, पगली कहीं की !"

उषा पति के कस के भींच लिहली। उनका लागल, ऊ आज ले जेकरा के पति समझ के निभावत रहली, ऊ त पति के परछाही मात्र रहे। सच्चा पति त उनका आज मिलल बा।❐

क्लेम

''फेर तू का सोचलू कमला ?''

''का बताईं, कुछ समझ नइखीं पावत।''

''ऊं–हूं, एह में ना समझ पावे के कवन बात बा ?''

''त फेर तू ही बताव ना, का करे के बा ?''

''हमार मान, त काल्हे 'क्लेम' डाल द।''

''लेकिन का ई ठीक रही ?''

''एह में गलत का बा ?''

''सोच ल, लोग का कही।''

''लोगन के मार गोली, तू आपन सोच।''

''का ई तहरा खराब ना लागी कि पहिले त हमनी प्रेम–बिआह कइलीं, अतना आदर्शवादी बनलीं कि दहेज के एको कौड़ी ना लिहलीं स आ अब, पिताजी के गुजरते, उनका सम्पत्ति के हिस्सा मांगीं ?''

''एह में कुछ खराब नइखे। बाप का सम्पत्ति पर बेटियन के बेटा के बराबर अधिकार होला।''

''ई त बा, बाकिर इहां बात अधिकार के ना, भावना आ आदर्श के बा।''

''अरे भाई, तू भावना आ आदर्श का पीछे काहे पड़ल बाड़ ? सोच त, तहार पिताजी दस लाख के जमीन–जायदाद छोड़ के गइल बाड़े।''

''हं, से त ठीक बा।''

''चारों भाई–बहिन मिलके बांट लीं, त अढ़ाई–अढ़ाई लाख आवत बा, हरेक का हिस्सा में।''

''हिस्सा करिहें तब नू।''

''ऊ त करहीं के पड़ी। आरे, अतना रुपया त हमनी सारी जिनगी में भी नइखीं कमा सकत। रात–दिन लागल रहीं, तबो ना।''

''फेर काल्ह से कर दीं जा कार्रवाही शुरू ?''

''हं, नेकी आ पूछ–पूछ।''

''थैंक यू विमलेश ! थैंक यू वेरी मच।''

''का मतलब बा तहार ?''

''अरे बाबा, हम त ई पहिलहीं से सोच के बइठल रहीं। बस, रउए से हं करवावे के रहल ह। सोचलीं, कहीं लेखक महोदय आदर्शवाद का झोंक में, आइल लक्ष्मी के मत ठुकरा दीं, एही से।''

''ओ हो, तू कतना अच्छा बाडू कमला ! सांचो, अब हमनी का लगे मारुति कार होई, बैक बैलेन्स होई, आउर...आउर।''

''आउर फेर केहू हमरा के एगो फटीचर लेखक के बीवी ना कही, इहे नू !''❐

कद

बिआह का बाद मेहमानन के भीड़ छंटल, त दीदी उनका के पकड़ के बइठा लिहली आ समझावे लगली–''आपन ना, त लइकने के खियाल कर। भाभी हमरा के सभ बता देले बाड़ी।''

''सभ सुख त बा दीदी ! का तकलीफ बा लइकन के ? शीला त हरमेसा अइसही शिकायत करत रहेली।''

''हं, ऊ त पागल हई ! माई–बाप से तहरा प्रेम बा, बहुत अच्छा बात बा। बाकिर एह कारन केहू आपना नौकरी त ना छोड़ देला। लइकन के पढ़ाई–लिखाई, सभ खराब हो गइल। शहर से सीधे गांव में ले आ के तू उन्हनी के पटक दिहल। माई–बाबूजी के ओहीजा बोला लेत।''

''जइते तबनू ! एह लोग के केतना कहलीं, बाकिर ई गांव छोड़े के तैयार ना भइले।'' ऊ स्पट कइले।

''ना भइले, त एहीजा रहे देत।''

''त सड़े देतीं इनका के इहां अकेले बुढ़ापा में ? फेर का सुख भइल इनका बेटा के ? ई हमरा से देखल नइखे जात दीदी !''

''बाकिर दोसरो से त कुछ सबक ल। रोशने के देखल, सभ–कुछ बा उनका लगे। आ तहरा लगे ? कुछुओ ना।''

''हम मानत बानी, रोशन का लगे सुख–सुविधा के सभ साधन बा। बाकिर माई–बाबूजी के सेवा क के हमरा जवन सुख आ सन्तोष मिलल बा, ऊ त रोशन का लगे नइखे।''

दीदी निरुत्तर हो गइली। उनका लागल, रोशन का तुलना में, अपना जवना भाई के ऊ बौना रामझत रहली, रोशन त उनका घुटनो तक नइखन पहुंचत।❐

बाप बनला के मिठाई

खाना खा के उठे लगलीं, त पत्नी मिठाई के प्लेट आगे बढ़ा दिहली–''ल मुंह मीठ कर ल।''

''अरे वाह !'' कह के प्लेट से बर्फी के एगो टुकड़ा उठावत हम पूछलीं–''बाकिर ई मिठाई कवना खुशी में खियावल जात बा ?''

''नरेन्द्र मोहन किहां से आइल बा। नरेन्द्र जी बाप बनेवाला बाड़े।'' पत्नी पुलकित होके बतवली।

पत्नी के बात सुनते हमरा मुंह के स्वाद कसैला हो गइल। नरेन्द्र जी बाप कइसे बन सकेले ? हम खुद अपना 'क्लिनिक' में, दू बेर, ठीक से जांच कइले रहीं। नरेन्द्र जी के बाप बने के कवनो सम्भावना ना रहे आ ई बात हम उनको के साफ बता देले रहीं।

''फेर ?'' हम असमंजस का भंवर में फंस गइल रहीं।

अचके हमरा पत्नी के कहल एगो बात इयाद आ गइल। ऊ कहले रही कि श्याम पता ना काहे, हरमेसा नरेन्द्र का घरे पड़ल रहेले। नरेन्द्र हमरा के बतवले रहले कि श्याम उनकर पुरान दोस्त हउवे। बाद में हमरा इहो पता चलल कि श्याम अपना पत्नी के तलाक दे देले बाड़े। उनका के नरेन्द्र का घरे आवत–जात कई बार हम खुद देखले रहीं आ एक–दू बेर त नरेन्द्र का अनुपस्थितियो में।

''तब ?'' तुरत हमार सवाल विश्वास में बदल गइल रहे। हमरा लागल कि पत्नी थोड़ा गलत कह गइली, उनका कहे के चाहत रहे कि मिसेज नरेन्द्र मोहन माई बने वाली बाड़ी।❐

नरेन्द्र के घर-आपसी

नरेन्द्र घर से दूर, अकेला आ परेशान रहले, ई बात सुधीर महाशय अच्छा तरह से जानत बाड़े। बाकिर समूचा उमिर छोटे भाई के बोझा उठावे के ठेका त ऊ नइखन ले ले। नरेन्द्र मानसिक रूप से कुछ कमजोरो बाड़े। एहसे जलवायु–परिवर्तन का नाम पर, उनका के डॉ० केवल मलिक का 'फार्म–हाउस' पर, रखवा देले रहस।

आज कवनो सिलसिला में उनकर नाम आइल, त पत्नी कहली–''नरेन्द्र उहां पेरशान होइहें, काहे नइख उनका के आपस बोला लेत ?''

''उनका के बोला लेहलीं, त तू परेशान हो जइबू। तहरे कहला पर त उनका के उहां भेजले रहीं।''

''हं–हं, उनका के हमहीं भेजववले रहीं, बाकिर बोलवावतो त हमहीं बानी।'' पत्नी कुछ खिसिआ उठल रहली।

''बाकिर काहे ?'' हरान होके पूछले–''चार बरिस बाद एक–ब–एक नरेन्द्र खातिर अतना प्रेम कइसे उमड़ आइल ?''

''तू ना समझब। अरे साहेब, पहिले के बात कुछ आउ र रहे, अब कुछ आउर बा।''

''मतलब ?'' ऊ जाने के चहले।

''मतलब ई कि दूनू लइका अब बड़ा हो गइले, कॉलेज जाये लगले। हमरा स्कूल में नौकरी लाग गइल। अइसन में, सभका चल गइला पर, घर सूना रही कि ना ?''

''से त ठीक बा आ आज काल्ह शहर में चोरिओ बहुत होखे लागल बा।''

''एही से त हम कहत बानी कि नरेन्द्र को बोला ल। छोट–मोट काम त करबे करिहें, घरों के सुरक्षा रही।''

''बाकिर खर्च त बढ़ जाई।''

''का खर्च बढ़ी ? फाटल–पुरान कपड़ा त तहार मिलिए जाई, खाहूं के चिन्ता मत कर। हर समय दू–चार चपाती त बंचबे करेला, ऊ कुत्ता के ना डालब, बस।'

पत्नी के बात सुधीर महाशय के अइसन जंचल कि अगिले दिन नरेन्द्र घरे आपस आ गइले।❐

दिवाली के मिठास

ऊ सौ रुपया खर्च क के पूरा तीन सौ किलोमीटर दूर से दिवाली पर घरे पहुंचल रहले। आवे–जाये के परेशानी, ओहू पर बिना वेतन के छुट्टी, तबो खुश रहले। घरे पहुंचते छोट भाई–बहिन घेर लिहले, पूछले–''हमरा खातिर का ले आइल बाड़ भइया ?''

''अधिका कुछ ना, ई मिठाई ह, बस।'' ऊ थैला से मिठाई के डब्बा निकाल के लइकन का ओर बढ़ा दिहले।

लइकन का चेहरा से चमक गायब हो गइल रहे। तबले मझिला भइया आ गइले। पड़ोसे का शहर में नौकरी करेले मझिला भइया। अब लइका उनका में जा सटले–''डिब्बा में का बा ?''

''अहा–हा, बहुत–कुछ बा; सोनी खातिर फुलझड़ी, बंटी खातिर पटाखा, नरेश खातिर अनार आ बड़का–बड़का बम ...आउर...आउर सभका खातिर बहुत सारी मिठाई।'' मझिला भइया गद्‌गद होके बतवले–"पूरा पचास रुपया के सामान ले आइल बानी, तहरा सभन खातिर।''

लइका खूब उछिले लगले–''कतना अच्छा बाड़े मझिला भइया।'' उन्हनी का अफसोस रहे–''बड़का भइया त कुछुओ ना ले अइले, हमनी खातिर।''

''काकाजी कहीले कि बड़का भइया के तनखाह कम बा। का ई सांच ह भइया ?'' बहुत भोलापन से बड़का से सोनी पूछले रहे–''का मझिला भइया सचहूं तहरा से ज्यादा कमाले ?''

''हं, तबे त कतना सारा चीज हमनी खातिर ले आइल बाड़े। मझिला भइया अच्छा ! मझिला भइया अच्छा !!" कहत–कहत बंटी आ नरेश उछिले लगले।

''अरे ना, अइसन ना कहे के। बड़का भइया जे ले आइल बाड़े, बहुत बा।'' मझिला भइया उन्हनी के टोकले रहस।

लइकन के बात सुन के बड़का के हलक सूख गइल रहे। उनका लागल, जइसे दिवाली के समूचा मिठास, पटाखा के बारूदी गंध से, कसैला हो गइल बा।❐

एकमुश्त समाधान

मंजुला के नजर त अखबार पर टिकल रहे, बाकिर मन कहीं आउर उलझल रहे। एह से ऊ जइसहीं अखबार पढ़े के प्रयास करस, एक–ब–एक अनेक सवाल फन फइला के उनका आंख का सोझा खड़ा हो जात रहे। अब का होई ? कइसे होई ? आदि।

भइया आ बाबूजी उनका रिश्ता के बात चला–चला के थाक गइल बाड़े। बहुत मुश्किल से एक जगह बात बनल रहे, बाकिर काल्ह ओहूजा से मनाही हो गइल। उनका जवन उमेद रहे, ऊ पूरा होत ना लउकल। पूरा होखबो करो, त कइसे। बाबूजी समूचा घर–बार बेंच देस, उनका दहेज खातिर, तबो एक लाख के प्रबन्ध नइखे हो सकत।

''फेर ?'' ऊ अपने–आपसे पूछत बाड़ी, बाकिर जवाब ना मिलला पर एगो लमहर आह भरके कहत बाड़ी–''हे भगवान, हमरा त कुछुओ समझ में नइखे आवत। अब तू ही बताव, हम का करीं। भइया आ बाबूजी के दुःख हमरा से अब आउर नइखे देखल जात।''

एक–ब–एक मंजुला के नजर अखबार का एगो सुर्खी पर जा टिकल–'एगो आउर कॉलेज–छात्रा मंडल–विरोध के भेंट।' समूचा खबर ऊ सरसरी नजर से पढ़ गइली–'बीस बरिस के कॉलेज–छात्रा मनीषा, मंडल आयोग के रिपोर्ट लागू कइला का विरोध में कीटनाशक दवा पीके, आत्महत्या कर लिहली। पीछे छोड़ल हस्तलिखित पत्र से ऊ अपना मौत के जिम्मेदार प्रधानमन्त्री आ कल्यानमन्त्री के ठहरवले बाड़ी।'

खबर पढ़ते मंजुला के समूचा परेशानी जइसे अनायासे दूर हो गइल। एह से अखबार के एक ओर रख के, ऊ झट से अइसन आश्वस्त भाव से उठ के खड़ा भइली, जइसे सभ समस्यन के एकमुश्त समाधान बइठले–बइठल मिल गइल होखे।❐

आग

मोहल्ला में आग लागल रहे। ऊ ई सोच के निश्चिन्त रहे कि आग बहुत दूर बा आ ओकर घर पूरा तरह से सुरक्षित बा।

आग कुछ नजदीक आ गइल, त थोड़े चिन्तित भइल, बाकिर कुछ करे के जरूरत ऊ अबो ना समझलस।

आग ओकरा पड़ोसी के घर तक आगइल, तबो ऊ हाथ–पर–हाथ धइले बइठल रहे। 'पड़ोसी खातिर ऊ आपन हाथ काहे झुलसावे।' ऊ मने–मन सोचत बा।

अब जरे के बारी ओकरा घर के रहे। आग बुतावे खातिर ऊ कुछ कर पाइत, ओकरा पहिलहीं आग, ओकरा घर के राख में बदल के, अगिला घर तक पहुंच गइल रहे।❐

नाव

नाव किनारे से कुछुए दूर गइल रहे कि ओमें छेद हो गइल आ पानी भरे लागल। मौत के नजदीक देख के, ओमें सवार सभ लोग, डरे कांपे लागल। एह से सभे कूद के डूबत–उतरात किनारे पहुंच के राहत के सांस लिहल–''हे प्रभु, तू हमनी के बंचा लिहल।''

अब सभे निश्चिन्त हो के, नाव में भरल पानी देखत रहे, बाकिर ओकरा डूबे के चिन्ता केहू के ना रहे।❐

बहाना

हरिदत्त बाबू, बैंक से रुपया निकलवा के, बैंक से बाहर आइले रहले कि मनसुख हांफत उनका आगे आ के खड़ा हो गइल।

''बाबूजी, रउआ बैंक से आ रहल बानी, त जरूर रुपया निकलववले होखब। हमरा दू सौ रुपया के बहुत जरूरत बा। हमार बेमार लइका अस्पताल में पड़ल तड़प रहल बा, ओकरा खातिर इंजेक्शन ले आवे के बाटे। हमरा लइका के बंचा लीं बाबूजी !'' ऊ अतना–कुछ एके सांस में बोल गइल रहे।

परिचय खातिर बता दिहल जाय, मनसुख, हरिदत्त बाबू का कॉलोनी के नुक्कड़ पर, सब्जी के दुकान करेला। हरिदत्त बाबू के ढूंढत ऊ बैंक कइसे पहुंच गइल, ई बतावे के ना ओकरा लगे फुर्सत रहे, ना एह समय ओकरा से पूछला के कवनो औचित्ये रहे।

हरिदत्त बाबू का जेब में दूइए सौ रुपये रहे। कहीं से चैक मिलल रहे, उहे भंजवले रहले। ऊ रुपया निकाल के, मनसुख का हाथ में रख दिहले।

उनका घर के तंगी इयाद आइल, त मन के समझा दिहले–''अरे का बा। पांच–सात दिन के त बात बा, फेर त तनखाह मिलिए जाई।''

'बाकिर पत्नी पूछ लिहली कि चैक के का भइल ?' त उनका मन में एगो शंका पैदा भइल।

'कह देब कि चैक 'डिस ऑनर' हो गइल। बैंक में पइसा ना रहे, तबो लोग पता ना काहे चैक काट देला।' एगो नीमन बहाना उनका सूझ गइल रहे।❐

फ्रिज

''भाई वाह, रउआ त बहुत कुछ खरीद लेले बानी।'' अपना सहकर्मी धर्मपाल मलिक का ड्राइंग–रूम में घुसते सोफा, टी०वी०, फ्रिज आदि चीजन पर एक नजर डालत हम कहलीं–''बहुत अच्छा, बधाई होखे।''

''ई सभ त जरूरी हो गइल बा आज–काल्ह। ना लीं, त लइका थोड़ मनिहें।'' मलिक साहेब गद्‌गद होके स्पष्ट कइले।

''हं, ई त बा।'' हम कहलीं।

''फेर रउओ शायद बहुत समय का बाद आइल बानी। एही बीचे ई सभ हो गइल।'' मलिक साहेब बतवले।

''फ्रिज त बुझाता, अभी लियाइल बा।''

''ना, एकरा के लिहल त एक साल हो गइल बा, बाकिर लागत अइसन बा, जइसे आजे खरीदाइल होखे।'' ऊ स्पष्ट कइले।

''वाह–वा !'' फ्रिज का लगे जा के हम कहलीं–''सचहूं प्यारी चीज बा। हमहूं लेब, त एही कम्पनी के।''

''शर्मा जी, खरीदलीं, बस। सौ फायदा बा फ्रिज के, ठंडा के आराम, लइकन के री–री खतम, फलो–सब्जी ताजा रहेला। हम त सभ एके बेर ले आके रख दीले, सप्ताह–भर खातिर।''

''तनी भीतरो से देखीं खोल के।''

''एं....हं....काहे ना, जरूर देखीं।'' फ्रिज खोलते सकपका के मलिक साहेब कहले–''ई देखीं।''

''फ्रिज में पानी के दू–तीनगो बोतल रखल रहे आ एगो टोकरी में थोड़े आलू–टमाटर। उन्हनी पर नजर जाते हम आंख घुमा लिहलीं।''

हम देखलीं, फ्रिज के खुलते, मलिक साहेब का उत्साह के तापमान काफी घट गइल रहे।❐

दर्द-बोध

'मन में उनका बुजुर्गी का प्रति पूरा सम्मान आ सहानुभूति भइला का बादो, दोसर परिवारवालन के तरह, हमहूं उनका से तंग आ गइल बानी। ऊ सबेरे आ सांझहूं हमरा घरे आवस त कवनो बात ना, बाकिर ऊ त टी०वी० पर फिल्म चाहे चित्रहार शुरू होत बा, तबो आ के बइठ जात बाड़े। उनका एह कार्यक्रमन में कवनो रुचि नइखे, एह से एने–ओने के चर्चा शुरू कर देले। व्यवधान का चलते हमरा खीझ आ झुंझलाहट से भर उठल स्वाभाविक बा।

एह से हम मने–मन फैसला कर लेले रहीं कि आज ऊ अइहें, त तरीका से उनका के, एह मौकन पर आवे से मना कर देब।

आज सबेरहीं ऊ नियमित रूप से, निश्चित समय पर अइले, बाकिर हरमेसा का उलिटा उदास रहले। एह से हमरा मन के भाव ओठन तक आवते–आवत शिष्टाचार में बदल गइल–''आज त रउआ परेशान लउकत बानी, घर–परिवार सभ ठीक त बानू ?''

''रिटायरमेन्ट का बाद आदमी के जिनगिओ कुछ नइखे डॉ० शर्मा !'' उनका दिल के दर्द छलक उठल रहे–''घर में रह त बहू–बच्चन के परेशानी होत बा आ केहू किहां जा त ओकरा। बेकार में दिन–भर सड़को पर घूमल नइखे जा सकत।''

''बात त राउर ठीक बा, बाकिर दोसरो के आपन रुचि आ मजबूरी होला।'' हम कहलीं।

''एही से सभका लगे ना जाइल जाला। दोसरा के दर्द सभे कहां समझ पावेला। एगो रउआ से दिल के बात करलीले, एही से चल आईले। बरना रउओ बहुत व्यस्त आदमी बानी, रउओ के काहे 'डिस्टर्ब' कइल जाय।''

"ना–ना, रउआ अइसन काहे समझत बानी।" हम पहिलका निर्णय के इयाद आवते अपराध–बोध से भर गइल रहीं–''ई राउरे घर ह, जब दिल करे, आ जाइल करी; हमरा कवनो तकलीफ नइखे।''❐

बिआह के सगुन

मइल गेंठरी उठा के ऊ भीतर ले चल आइल, त एके साथे कई आदमी ओकरा के दुरदुरा दिहले–''नीच, भीतर कहां चलल जा रहल बाड़े। चल, बाहर बइठ।''

''एकर ई मजाल कि बिआह का मंडप तक चल जाय। कमीन ह, त बाहर बइठे। जवन सभका मिली, ऊ एकरो मिल जाई।'' एक आदमी कहले।

''माई एकरा के माथा पर चढ़ा के रखले बाड़ी। एकर मेहरारू इहां नौकरानी बिया, त एकर मतलब ई ना भइल कि सरभंगे हो जायेदीं।'' खिसिआ के केहू दोसर कहल।

बिआह का शुभ अवसर पर हमरा खिसिआइल नीक ना लागल। एह से हम सभ के शान्त करत समझावे का स्वर में कहलीं–''अरे भीतर आ गइल बा, त का हो गइल। ऊ का कहत बा, तनी सुन त ललोग।''

फेर विनम्रता आ प्रेम से हम ओकरा से पूछलीं–''काहे, का बात बा भाई ? केकरा से मिले के बा ?''

''दादी–सा से।'' अपमान से आहत आवाज में ऊ कहलस।

''ऊ त नइखी, बाजार गइल बाड़ी।'' हम बतवलीं–''कबले लवटिहें, कुछ कहल नइखे जा सकत।''

''तब ई सामान रउआ दादी–सा के दे देब।'' आपन गेंठरी हमरा ओर बढ़ावत ऊ कहलस–''कह देहब कि रमेसर गइल रहले त भागवन्ती भूवा–सा खातिर भेजववले बाड़ी।''

दोसरा लोग के ई बात खराब लागल। कमीन के देस चाहे ओकरा से लेस। बाकिर हम ओकर मन राखे खातिर गेंठरी रखवा लिहलीं।

थोड़ी देर बाद मांजी आ गइली, त गेंठरी खोलल गइल। ओमे सौ–डेढ़ सौ रुपया के एगो सूती साड़ी रहे, एक पैकेट चूड़ी रहे, 'मेकअप' के कुछ सामान, जे गांव में मिल सकत, रहे उहो रहे आ सगुन के एकइस गो रुपया।

सगुन के सामान देख के सभका के सांप सूंघ गइल।❐

सिसकी

मिसेज मेहता गजेन्द्र के साफ चेतावनी दे दिहली–''हमार आमन्त्रन संकार चाहे फेर अपना नौकरी से छुट्टी समझ....आजे फैसला करे के बा, ऊ आजे करल, एही समय।''

गजेन्द्र बड़का धर्म–सकंट में फंस गइल। अगर ऊ मिसेज मेहता के प्रस्ताव संकारत बा, त ई अनैतिक होखे का साथ ही पत्नी का प्रति विश्वासघात होई आ अगर प्रस्ताव ठुकरावत बा, त लइकन के का होई। आज–काल्ह नौकरी मिलल कतना मुश्किल बा, अइसन सुविधावाला मिलल त सम्भवे नइखे। ऊ मेहता साहेब के कार–ड्राइवर ह। मेहता साहेब बिजनेस का सिलसिला में सप्ताह में चार–पांच दिन शहर से बाहरे रहेले। पीछे सारा दिन, ऊ कूलर के ठंडा हवा में, सोफा पर आराम से सुतेला आ बइठल टी०वी० देखेला।

मेहता साहेब का अक्सर बाहर रहला आ दिन–भर बिजनेस का काम में व्यस्त आ चिन्ता से हरान रहला से मिसेज मेहता ना मानसिक तौर पर सन्तुष्ट बाड़ी आ ना शारीरिक रूप से तप्त। एही से उनकर नजर, कई दिन से, गजेन्द्र पर टिकल रहे।

गजेन्द्रो कई बेर एह बात के अनुभव कइले रहे। बीबीजी के ओकरा के कवनो बहाने समय–बेसमय अकेला में बोलावल, खरीदारी खातिर जात में ओकरा कान्ह पर माथा रख दिहल जइसन बात कई बेर हो चुकल रहे। बाकिर गजेन्द्र जब कवनो मन–मोताबिक प्रतिक्रिया परगट ना कइलस, त मिसेज मेहता के आज बिल्कुल साफ बात करे के पड़ल।

गजेन्द्र काफी देर ले अह–जह का हालत में खड़ा रहे। कबो पत्नी के, त कबो छोट–छोट लइकन के मासूम चेहरा ओकरा आंखिन का सामने घूम जाता। नौकरी कहां मिली... आ इन्कार कइला पर मिसेज मेहता ओकरा पर कवनो झूठ इल्जाम लगा दिहली तब....। कहल जाला तिरिया–चरित्तर त भगवानो ना जानस।

''हूं, का फैसला कइल फेर ?'' सामने खड़ा मिसेज मेहता के लमहर–लमहर आंख मुस्का के ओकरा के खुलल आमन्त्रन देत रहे।

"हमरा मंजूर बा।" गजेन्द्र हामी भरलस आ फेर आंख नीचे कर लिहलस।

''अरे गजेन्द्र डार्लिंग, सचहूं तू कतना अच्छा बाड़ !'' कहके खुशी से पगलाइल मिसेज मेहता कस के अपना बांह में भर लिहली। अगिले छन बैडरूम के कुंडी भीतर से बन्द हो गइल।

मिलन का आखिरी छन में, दूनू के मुंह से स्वाभाविक सिसकी फूट पड़ल। मिसेज मेहता का सिसकी में सभ–कुछ पा लिहला के भाव रहे, त गजेन्द्र का सिसकी में सभ–कुछ गंवा दिहला के।❐

पहिलका अनुभव

अपना सफेदपोश आबरू के सम्हारत, झोपड़पट्टी से निकलला से पहिले सन्तुष्ट भइल साहेब, पहिलकी कमाई का रूप में, दस के पत्ता ओकरा हाथ में रख दिहले–''हर बेर अतने मिलल करी।''

चउदह बरिस से अधभुखाइल सुगनी के पहिला बेर मालूम भइल कि अपने ना, ऊ दोसरो के भूख मेटा सकत बिया।❐

अतीत से कटल वर्तमान

विद्यापति आइल रहले, तीन दिन हमरा शहर में रहले आ चल गइले, हमरा से मिलले तक ना।

हमरा सामने उनकर एगो पोस्टकार्ड पड़ल बा। कुछ दिन पहिले आइल रहे आ उनका आवे का इन्तजार में जवना के हम सम्भार के रखले रहीं। लिखल बा–''जल्दिए दू–एक दिन खातिर अम्बाला आएब। उहां कई मित्रन से मिले के बा, तहरो से मिले के बड़ले बा।''

बाकिर ऊ आ के बिना मिलले चल गइले।

हमरा विश्वास नइखे होत कि ई उहे विद्यापति हउवे, जे कबो हमरा के आपन आदर्श मानत रहले, हर काम में हमार अनुकरन करत रहले, ताकि हमरे जइसन लउकस। ऊ सचहूं हमरे जइसन लगबो करस, एह से लोग अक्सर उनका के हमार छोट भाई समझ लेत रहे।

हमहूं उनका के कबो अपना छोट भाई से कम ना समझलीं। ऊ आज जहां बाड़े, उहां तक उनका के पहुंचावे में हमरो योगदान कम नइखे। एही से ऊ एक बेर पत्र में लिखले रहले–''लोग हमरा के तहार छोट भाई समझेला, ई गलत नइखे। हम जे कुछ भी बानी, तहरा किरिपे से बानी। तहरा से अलग हमार कवनो अस्तित्व नइखे हो सकत।'' ऊ पत्र आजो कहीं पड़ल मिल जाई।

उहे विद्यापति अब हमरा से मिलल तक जरूरी नइखन समझत।

विद्यापति अब शिक्षा–विभाग में एगो बड़ अधिकारी बाड़े, जबकि हम, एम०ए० भइला का बादो, स्कूल में एगो साधारन अध्यापके बानी। बाकिर का एह से रिश्ता टूट सकेला ? अतीत से कट के का वर्तमान के जीयल जा सकत बा ?

शायद जीयल जा सकत बा। अगर अइसन ना होइत, त का विद्यापति अइसे हमरा से बिना मिलले चल जइते ?

उनका जेकरा से मिले के रहल, मिल गइले। हमरा से काहे के मिले के चाहीं उनका ? दोस्ती का अलावा हम उनका के का दे सकत बानी। हमरा पोस्टकार्ड में लिखल बात बेकार बुझात बा। एह से ओकरा के उठवले त बानी, शायद फाड़ के फेंक देबे खातिर।❐

प्रसंग : गोलीकांड

खतौली में भइल गोलीकांड के समाचार सबेरे 'सन्देश' में छपल देखले, त सभ पत्रकार हरान रह गइले। जब समाचार ना भेजे के निर्णय हो गइल, त एमें कइसे छप गइल ?

एह से समूचा संवाददाता 'सन्देश' के जिला–संवाददाता श्रीकष्ण तनेजा के धर दबोचले–''तू ई समाचार भेजल त काहे ?''

''भाई, ई बात नइखे।'' पत्रकार–साथियन के बइठका में बइठावत तनेजा साफ कइले–''काल्ह सांझ के लाला बेनीप्रसाद आइल रहस। सांझ के हम 'मूड' में रहीले, तू लोग जानते बाड़। बस, ऊ समाचार पर हमार दस्तखत करवा लिहले आ फेर अपना आदमी से सीधे 'सन्देश' कार्यालय में भेजवा दिहले।

''तहरा आ तहरा 'मूड' के अइसन–के–तइसन। तू बिका गइल बाड़। हमनी का कम–से–कम तहरा से ई उमेद ना रहे।''

''तू लोग कुछुओ समझल। बाकिर लाला जे 'गिफ्ट' दे गइल बाड़े, ऊ जइसे–के–तइसे रखल बा, देखल लोग।'' कह के ऊ आलमारी खोलले, त ह्विस्की के सीलबन्द कार्टून देख के सभका आंखिन में चमक आ गइल।

''गिफ्ट' के बाद में देखब स।''

''त ई बताव कि अब का हो सकेला ?''

''स्पष्टीकरण ! लाला आ चौधरी दूनू हरामी बाड़े, ई त सांप आ जाट के लड़ाई ह।''

''ठीक बा, जइसन सभ के मर्जी।''

अगिला दिन एगो समाचार 'सन्देश' सहिते सभ पत्रन के मुखपष्ठ पर छपल, शीर्षक रहे–''गोलीकांड के राजनीतिक रंग देबे के प्रयास।'' ई समाचार खुद श्रीकष्ण तनेजा लिखले रहस, अपना हाथे। ❐

शोध-सन्दर्भ

आंख लागते पी–एच०डी० वाली बात उनका दिमाग में घूम जात बा। उनका शोध के विषय बा–'मेवात अंचल का लोकगीतन के भाव–सौन्दर्य।' विषय नया आ रुचिगर भइला से ऊ महीने–भर में एगो शोधपत्र तैयार कर देत बाड़े।

''सर, एह शोधपत्र के रउआ थोड़ा संशोधित कर दीं। शोध–प्रबन्ध प्रस्तुत करे से पहिले हम कुछ शोधपत्र प्रकाशित करवावे के चाहब।''

''ठीक बा, एकरा के हमरा लगे छोड़ जा।''

''एकरा के हम बहुत मेहनत से तैयार कइले बानी आ ई हमार पहिला शोधपत्र ह। एकरा प्रकाशन खातिर राउर आशीर्वाद चाहीं।''

आश्वासन मिलला पर ऊ शोधपत्र अपना निर्देशक का लगहीं छोड़ जात बाड़े। ऊ बेर–बेर डॉक्टर साहेब के इयादो करवावत रहत बाड़े, बाकिर हर बेर उनकर एके गो जवाब होत बा–''भाई, अभी बहुत व्यस्त बानी, जल्दिए देख लेब।''

ऊ कसमसा के रह जात बाड़े।

लगभग छव महीना बीत गइल बा। ऊ अपना निर्देशक का लगे जात बाड़े, त ऊ एगो शोध–पत्रिका के नया अंक थम्हावत कहत बाड़े–''एह में तहरा विषय से सम्बन्धित हमार लेख छपल बा। ई तहरा खातिर विशेष रूप से छपववले बानी, ताकि तहरा शोधग्रन्थ खातिर सन्दर्भ–सामग्री मिल सके।''

ई बात सुनके ऊ गद्‌गद हो जात बाड़े–''डॉक्टर साहेब उनकर केतना खियाल राखेले !''

हॉस्टल पहुंचते, ऊ बहुत उत्सुकता से, लेख पढ़े के शुरू करत बाड़े। बाकिर जइसे–जइसे ऊ लेख पढ़त जात बाड़े, उनकर धड़कन बढ़त जात बा। ई त उहे शोध–लेख ह, जवना के ऊ आवश्यक संशोधन खातिर अपना निर्देशक के दिहले रहले।

निर्देशक महोदय, लेखक का मौलिकता के सुरक्षित रखत, मात्र एगो साधारन संशोधन कर देले बाड़े– लेखक के नाम जगदीश शर्मा का जगह पर डॉ० राम अवधेश कर दियाइल बा।

उनका लागत बा, जइसे एगो धड़धड़ात ट्रेन उनका ऊपर से गुजर रहल बिया। एह से, आधा नींने में, उनका रुन्हल गला से एगो चीख निकल जाता–''ना !''❐

मोर्चाबन्दी

''ई सभ से अच्छा मौका बा सर ! काल्ह का बैठक में ई काम हो जाये के चाहीं। बुराई के....।"

''ऊ त ठीक बा, बाकिर बैठक में हम अकेला त होखब ना। प्रबन्धक समिति के जरूरी सालाना बैठक ह, सभ लोग रहिहें।''

''त काह सर ! रउआ त पुरान वकील हईं, ममिला के सम्हारल रउआ बहुत अच्छा तरह से जानत बानी।''

''ठीक बा भाई, बाकिर मदान के पोस्ट स्वीकत बा, कैरियर अच्छा बा, कामोकाज ठीक बा, प्रिन्सिपल त उनका के बहुते चाहत बाड़े।''

''ई सभ त सांच बा, बाकिर रउआ जानत बानी, ऊ काल्ह के छोकरा 'प्रोबेशन' पर बा, तबो हमार रत्ती–भर परवाह नइखे करत, 'कन्फर्म' भइला पर त ऊ केहू के पूछबे ना करी।''

''फेर का हो सकत बा ? तू ही कवनो रास्ता बनाव।''

"रास्ता बा सर ! हम कच्चा गोली नइखीं खेलले। ऊ बड़का लेखक बनत बा। ओकर एगो लेख, बहुत दिन भइल, 'वीरभूमि' में छपल रहे। हम ओही दिन 'कटिंग' सम्हार के रख लेले रहीं, ई देखीं।''

''बाकिर ई त साहित्यिक लेख ह।''

''बेशक, बाकिर रउआ एकरा के अइसन ढंग से पेश करे के बा कि रउआ कॉलेज प्रबन्धक समिति के महासचिव हईं। उनका 'कन्फर्मेशन' के केस आवे त, रउआ आपत्ति कर दीं। आ लेख देखादीं कि ऊ वैश्य कॉलेज में रहियो के वैश्य–संस्था आ वैश्य–समाज के खिलाफ लिखत बाड़े। ई सभ कइसे बर्दास्त कइल जा सकत बा ?''

''बाकिर एह लेख में त अइसन कुछ नइखे।''

''सर, ई लेख केहू पढ़ले थोड़े होई। रउआ कहब, त सभका विश्वास हो जाई आ बस, एक मिनट के त काम बा।''

''आ अगर प्राध्यापक–संघ ओकर ममिला उठा दिहलस, तब ?''

''ऊ सभ हम सम्हार लेब सर ! दस बरिस से कॉलेज प्राध्यापक–संघ के प्रधान अइसहीं थोड़े बानी।''❐

तटस्थ लोग

बेकार के उलझल उनकर आदत ना रहे, बाकिर जब प्रो० सिंह उनका पेट पर लात मारे के कोशिश कइले, त ऊ बुराई से टकराये आ अन्तिम दम तक लड़े के फैसला कर लिहले।

चुनाव का बाद नया कॉलेज प्रबन्धक समिति बनल, त ऊ आपन 'केस' ओकरा सामने रखले। समिति उनका विरोध में मिलल बेनामी शिकायत के रद्द क के, उनकर सेवा स्थायी कर दिहलस, बाकिर उनका ओर से प्रस्तुत तथ्यन का आधार पर समिति प्रो० सिंह का विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही करे के निर्णयो कर लिहलस।

जांच का बाद प्रो० सिंह के निलम्बित कर दिहल गइल। ई कॉलेज का इतिहास में अपूर्व घटना रहे। सभका जबान पर एके बात रहे कि सिंह के टक्कर इहे आदमी दे सकत बा।

उनका इयाद आइल : बहाल होके कॉलेज में अइला पर ऊ देखले कि प्राध्यापकन का चेहरा पर प्रो० सिंह का आतंक के करिआ छाया साफ झलकत रहे। केहू उनका विरोध में एको शब्द बोले के हिम्मत ना कर पावत रहे।

उनका इयाद आइल : कुछ पुरान प्राध्यापक उनका से बतवले रहस कि सिंह कमीना आदमी ह, कॉलेज के बर्बाद करे पर तुलल बा। यूनियन का नाम पर कॉलेज में अनुशासनहीनता आ गुंडागर्दी फइला रखले बा, बाकिर केहू कुछ कहे–सुनेवाला नइखे।

उनका इयाद आइल : ऊ खुद अनुभव कइले कि प्रो० सिंह के पढ़ावे–लिखावे से कवनो मतलब ना रहे। उनकर दूइए गो काम रहे– प्रबन्धक समिति का पदाधिकारियन का आगे पोंछ हिलावल आ प्राचार्य आउर साथी प्राध्यापकन का विरोध में चाल चलल। अइसन आदमी के निलम्बित कइल गइला से ऊ सन्तुष्ट रहले आ आश्वस्तो रहले। उनका विश्वास रहे कि सच्चाई का एह लड़ाई में कॉलेज के सभ प्राध्यापक उनकर साथ दिहें।

बाकिर प्राध्यापकन का प्रतिक्रिया से ऊ हतप्रभ रह गइले। उनकर प्रतिक्रिया रहे–''हमनी के दूनू से कवनो वास्ता नइखे। सिंह गन्दा आदमी बाड़े, वर्मा के उनका से उलझे के का जरूरत रहे।"❐

निर्णय

प्राचार्य अध्यक्षन के एगो समिति बना के डॉ० शर्मा के 'टाइम–टेबुल' सम्बन्धी ममिला उनका के सउंप दिहले रहस।

सभ अध्यक्ष, 'टाइम–टेबुल' देखला आ डॉ० शर्मा के पक्ष सुनला का बाद, एह निष्कर्ष पर पहुंचले कि डॉ० शर्मा का साथे, निश्चित रूप से, अन्याय हो रहल बा। उनका के तंग करही खातिर अइसन 'टाइम–टेबुल' दिहल गइल बा कि ऊ पहिली से नउवीं घंटी तक फंसल रहस, लंचो तक ना ले सकस।

एह से निर्णय भइल कि विभागाध्यक्ष डॉ० धस्माना से डॉ० वर्मा के 'टाइम–टेबुल' बदले के कहल जाय। बाकिर एक–ब–एक वाणिज्य–विभाग के अध्यक्ष डॉ० सिंहल कहले–''ई खाली 'टाइम–टेबुल' ठीक करे के ममिले नइखे, बलुक एकरा से आउर कई जो बात जुड़ल बा।''

''कौन बात ?'' कई सहयोगी जाने के चहले।

''ई विभागाध्यक्ष आ 'जूनियर' के विवाद ह।'' डॉ० सिंहल साफ कइले–''अगर रउआ सभे शर्मा के पक्ष लिहलीं, त एह से 'जूनियर' के बढ़ावा मिली।''

''ई त ठीक बा, बाकिर डॉ० शर्मा के समस्यो त अपना जगह सही बा।'' चौधरी गंगाजल कहले।

''ई रउआ सोचीं कि शर्मा के समस्या बड़ बा कि राउर।''

''का मतलब ?''

''मतलब साफ बा। काल्ह राउर कवनो 'जूनियर' रउरा खिलाफ समस्या बन के खड़ा हो जाई, तब रउआ का करब ?'

कुछ छन सभे चुप रहल, फेर आंखिने–आंखिन में विचार–विमर्श भइल आ सर्वसम्मति से निर्णयो हो गइल–''डॉ० शर्मा 'टाइम–टेबुल' सम्बन्धी आपन विवाद खुद डॉ० धस्माना से प्रार्थना क के सुलझा लेस। अगर तबहूं, विवाद नइखे सुलझत, त एकरा के समाप्त समझल जाय, काहे कि अध्यक्ष का ओर से कवनो सहयोगी के कवनो घंटी दिहल जा सकत बा।''❐

चेतावनी

डॉ० मलिक के प्रो० राजेश शर्मा से शिकायत रहे कि ऊ 'जूनियर' होइयो के उनका के नमस्ते ना करेले। एहसे ऊ प्रिन्सिपल बनते उनका के 'सैट' करे के सोचले। एक दिन, एगो सोचल–समझल चाल का मोताबिक, उनका के अपना कार्यालय में बोलवा भेजले।

''रउआ जमा दू (वाणिज्य) के 'क्लास' काल्ह ना लिहलीं।''

''हमरा लगे त ऊ 'क्लास' हइए नइखे, सर !''

''के कहत बा, नइखे।''

''हम कहत बानी, आउर के कही।''

''डॉ० अश्वमुख हमरा के बतवले बाड़े कि 'क्लास' रउरे लगे बा आ विद्यार्थियो इहे कहत रहले।''

''ई एकदम झूठ ह। डॉ० अश्वमुख कवन होले हमरा 'टाइम–टेबुल' का बारे में बतावेवाला।''

"झूठ ऊ ना, रउआ बोलत बानी।"

''बहुत अचरज के बात बा। 'टाइम–टेबुल' के प्रति रउरा टेबुल पर, रउरा सामने लागल बा। रउआ ओकरा के बिना देखले, डॉ० अश्वमुख का कहला पर, हमरा पर झूठ आरोप लगा रहल बानी।''

डॉ० मलिक एक नजर अपना टेबुल पर शीशा का नीचे लागल 'टाइम–टेबुल' पर डलले, त सकपका गइले। फेर चेहरा बदल के कहले–''जमा दू ना सही, कवनो 'क्लास' ना लेले होखब।''

''हम कवनो 'क्लास' छोड़लहीं नइखीं, त झूठ कइसे मान लीं। 'क्लास' शुरू भइला आज तीसरे दिन ह आ रउआ कहत बानी कि...।"

''चलीं, छोड़ले होखीं भा मत छोड़ले होखीं, बाकिर आगे मत छोड़ब।''

''कमाल बा सर ! जब हम आज ले कबो कवनो 'क्लास' छोड़बे ना कइलीं, त आगे ना छोड़े के का मतलब ?''

''जवन हम कह रहलबाती ऊ रउरा भले खातिर कह रहल बानी।''

''ऊ त ठीक बा, बाकिर हम झूठ आरोप कबो स्वीकार ना करब। अगर हम कवनो 'क्लास' छोड़ले होखीं, त साफ बताईं कि कब आ कवन।''

''रउआ कइसे बोलत बानी ? बहस कर रहलबानी हमरा से ! बहुत देर हो गइल बा, रउआ फजूल के बात करत, अब हम बरदास्त ना करब।''

''हमार एको गो बात गलत नइखे सर !''

''जाईं, रउआ जाईं इहां से....आ इयाद रखीं, हम प्रिन्सिपल हईं, रउरा खिलाफ 'एक्शनो' ले सकत बानी।''

''सौ बार 'एक्शन' लीं सर !'' कह के प्रो० शर्मा, निश्चिन्त भाव से, स्टाफ रूम में आ के बइठ गइले। थोड़ही देर में चपरासी उनका के एगो पत्र थम्हा गइल, जवना के विषय रहे–'प्रिन्सिपल से दुर्व्यवहार कइला पर सख्त चेतावनी।'

प्रो० शर्मा के लागल, जइसे ई चेतावनी ना, प्रिन्सिपल का चरित्रहीनता के प्रमाण–पत्र ह। एह से ऊ, ओकरा के टुकी–टुकी क के, कूड़ा का टोकरी में फेंक दिहले।❐

चोट

हिन्दी–दिवस समारोह का सन्दर्भ में, छोटूराम कॉलेज का हिन्दी–विभाग के बैठक चलत रहे। सवाल रहे, समारोह का मुख्य अतिथि के रूप में, केकरा के बोलावल जाय। सभ प्राध्यापक नाम सुझावत रहले।

डॉ० परशुराम शुक्ल, हिन्दी के डॉ० परमानन्द पांचाल के बोलावे के सुझाव दिहले, त श्रीमती अनिता मलिक आ डॉ० नरेन्द्र वालिया ई निर्णय विभागाध्यक्ष डॉ० आदर्श मदान पर छोड़े के बात कहले। बाकिर डॉ० रामवीर ढांडा के सुझाव चौंकावेवाला रहे।

''बी०एम कॉलेज से डॉ० नादिरा शर्मा के बोलवा लिहल जाय, ऊ प्रिन्सिपलो बाड़ी आ हिन्दी के प्राध्यापिको रहल बाड़ी।'' ऊ कहले।

''उनका के त बिल्कुल ना।'' श्रीमती मलिक तुरन्ते प्रतिवाद कहली–''पिछिला साल हम उनका के एगो कार्यक्रम में निर्णायक का रूप में बोलावे के सुझाव देले रहीं, त रउए उनका पर घटिया आरोप लगावत, उनका के बोलावे के विरोध कइले रहलीं।''

''तब बात दोसर रहे, अब बात आउर बा।'' डॉ० ढांड़ा के तर्क रहे–''तब ऊ खाली प्राध्यापिका रहली, अब कॉलेज के प्राचार्या बाड़ी।''

''बहुत खूब !'' श्रीमती मलिक नहला पर दहला मरली–''ऊ प्राचार्या बाड़ी, बाकिर ई काहे नइखीं कहत कि ओही कॉलेज में राउर श्रीमती संगीत के प्राध्यापिका बाड़ी आ रउआ ओकर 'नम्बर' बनवावे के चाहत बानी।''

चोट मर्म–स्थल पर लागल रहे, एह से डॉ० रामवीर ढांडा के चेहरा देखे लायक रहे।❐

बोझ

एह दिन एगो जवान लेखक हमरा से बहुत प्रभावित बाड़े। अक्सर आ जाले। हमरा अच्छा लागेला, उनका से मिल के। बाकिर अधिकतर जवान लेखकन के तरह, उनको लेखन, दावा आ दम्भ का देवाल पर टिकल बा।

''हम अधिका लिखे पर विश्वास ना करीले। लिखीले तबे, जब जरूरी होला।'' एक दिन ऊ कहले।

''इहां के कवनो लेखक में दम नइखे। अब सभ के असलियत हम जान गइल बानी।'' कवनो दोसरा दिन ऊ स्थानीय लेखकन पर टिप्पनी कइले।

''हम लिखे का अपेक्षा पढ़ल ज्यादा पसन्द करीले आ हमार दावा बा कि हम जेतना लिखले बानी, ओकरा से कहीं अधिका पढ़ले बानी।'' फेर ऊ कबनो दिने ताल ठोंकले।

बातचीत का क्रम में, एक दिन ऊ हमरा से पूछले–''रउआ अभी ले कतना कुछ पढ़ले बानी ?''

''कुछ अधिका ना।'' उनकर बचकाना सवाल सुन के, मने–मन मुस्कात, हम कहलीं–''बरिसन से एके गो किताब पढ़े के प्रयास कर रहल बानी, बाकिर ऊ ह कि खतम होते नइखे।''

''ऐं, अइसन कवन किताब ह ?'' ऊ हरान भइले।

''जीवन के खुलल किताब।'' छोटहन जवाब रहे हमार। हम देखलीं, हमार जवाब सुनके उनकर गर्दन, पढ़ल किताबन के अदश्य बोझ से, धीरे–धीरे झुके लागल रहे।❐

अक्स

''श्यामसुन्दर हमरा से जे विश्वासघात कइले, ओकरा के हम चाह के भी नइखीं भूल सकत। सड़क पर खड़ा पांच लइकन के बाप श्यामसुन्दर के अपना विभाग में नौकरी दिलवावे खातिर हमरा कतना भाग–दौड़ करे के पड़ल रहे, हम कतना कठिनाई उठवले रहीं, ई हमहीं जानत बानी।

बाकिर हमरा एहसान के खूब बदला चुकवले श्यामसुन्दर ! का खूबसूरत पुरस्कार दिहले हमरा के !

स्थायी होते पाला बदल लिहले। हमरा विरोधियन के हाथ में खेल के, हमरा के परेशान आ प्रताड़ित करे के कवनो तरीका आ कवनो अवसर ऊ ना चूकत रहले। उनका हाथ के लिखल एगो शिकायती पत्र त हमरा पी०एफ० में आजो लागल होई।

लिखते–लिखत विमल जी बहुत बिह्वल हो गइल रहस। एह प्रसंग के ऊ कई बेर पढ़ले, बाकिर फेर ना जाने का सोच के, काट दिहले।''

पत्नी देखली, त कुछ समझ ना पवली। पूरा प्रसंग पढ़ के बोललीं–''का बात भइल, काहे काट दिहलीं ? सांचे त लिखले बानी।''

''ई त हमहूं जानत बानी आरती, बाकिर..... ।''

''बाकिर का ?''

''एह प्रसंग के हमरा आत्मकथा में छपला पर अहिते होई। एकरा के पढ़ेवाला कवनो आदमी कवनो जरूरतमन्द के मदत ना करी, काहे कि हर आदमी का चेहरा में ओकरा श्यामसुन्दर के अक्स देखाई पड़ी।''❐

पहिल प्रति

नवकी बीवी के नियर, नवकी छपल किताबो में, कुछ अइसने आकर्षण होला कि ओकरा के बेर–बेर देखे के मन करेला। श्रीकान्तो जी अपना ड्राइंग रूम में दीवान पर मसलन्द के सहारे अउंघल लेटल आपन नया प्रकाशित कविता–संग्रह के उलट–पुलट के देखत जात रहले।

–संग्रह अच्छा निकलल बा। कागज, छपाई, गैटअप, सभ लाजवाब। देखते मन मोह लेत बा।

–रचनो कवनो कम नइखे।

–कुल्ह मिला के संग्रह दस्तावेजी बन पड़ल बा। जेकरा हाथ में जाई, सम्हार के राखी।

ऊ एही खयाल में डूबल रहले कि नौकर एगो पुस्तक–पार्सल ले आ के सामने रखे दिहलस–''अभी पोस्टमैन दे के गइल बा।''

ऊ बहुत उत्सुकता के पार्सल खोलले। अरे, ई त उनके कविता–संग्रह 'शब्द–शब्द समिधा' के प्रति ह। चंडीगढ़ से केहू रमन गुप्ता भेजले बाड़े। साथ में एगो पत्रो बा।

ऊ झटपट पत्र पढ़त बाड़े। लिखल बा–''काल्ह सेक्टर सत्रह के बाजार से गुजरत, फुटपाथ पर लागल एगो कबाड़ी का दुकान पर, रद्दी किताबन में राउर एक महीना पहिले प्रकाशित किताब पड़ल देखलीं, त हरान रह गइलीं। ओकरा के खरीद के भेज रहल बानी।''

पत्र पढ़ के मरल मन से किताब के पन्ना–पन्ना पलटले, त उनका चेहरा के रंग एकदम फक पड़ गइल, जइसे टोकरी के ढक्कन उठावते सांप निकल आइल होखे। समर्पण–पष्ठ पर लिखल रहे–'अपना प्रिय मित्र.... के पहिलकी प्रति, सादर–सप्रेम समर्पित।'

आ ओकरा नीचे उनकरे हस्ताक्षर रहे–'श्रीकान्त भारद्वाज'।❐

दृष्टिकोण

कविवर डॉ० स्वयम्भू तथागत 'निकष' पत्रिका का 'उत्तराखंड कविता–विशेषांक' के संयोजन–सम्पादन करत रहले। सहयोगी आधार पर एगो कविता–संग्रह सम्पादित कइला का बाद, ऊ ई ऐतिहासिक जिम्मेदारी सम्हरले रहस। उनका निर्देश पर हम एह विशेषांक खातिर, एगो समीक्षात्मक आलेख लिखले रहीं, शीर्षक रहे–'उत्तराखंड के समकालीन काव्य–परिदश्य।'

तथागत जी हमरा कलम के कायल हउवे। एहसे लेख पढत जात रहले आ हमार प्रशंसा के पुल बान्हत जात रहले। बाकिर एक–ब–एक ऊ ठमकले, जइसे खिंचड़ी खाते–खाते कंकड़ी आ गइल होखे। बोलले–''हुंह, ठाकुरसेन नेगी ! समूचा गुड़ गोबर कर दिहलीं। का जरूरत रहे, लेख में उनकर नाम देबे के ?''

''काहे, नाम त उनकर आवही के चाहत रहे। अच्छा लिख रहल बाड़े। एने उनकर जे नया कविता–संग्रह 'बूंद–बूंद सागर' आइल बा, ओकर बहुत चर्चा भइल बा।''

''खाक चर्चा भइल बा ! उनका का पता बा कि कविता कवना चिड़िया के नाम ह। अइसन आदमी के बेजरूरत के श्रेय ना देबे के चाहीं।''

''देखीं तथागत जी ! हम जवन उचित समझलीं, लिख दिहले बानी। हमार दीर्ह विचार बा कि एह लेख में उनका नाम के चर्चा जरूरे होखे के चाहीं।''

ऊ सहमत ना भइले–''ई बिल्कुल सम्भव नइखे, सुरेश नौटियाल जी ! रउरा लेख से उनकर नाम काटे के पड़ी।''

हमरा कई साल पुरान एगो घटना इयाद आ गइल। ओह समय ठाकुरसेन नेगी उत्तराखंड के समकालीन कविता पर पी–एच०डी० खातिर शोधकार्य करत रहले। तब एक दिन तथागत जी हमरा उपस्थिति में एगो गुमनाम पोस्टकार्ड अंग्रेजी में लिखले रहले, जवना के विषय कुछ एह प्रकार रहे–''अगर रउआ अपना शोध–प्रबन्ध में अमुक–अमुक कवियन के उचित जगह ना दिहलीं, त शोध–प्रबन्ध के अधूरापन सहजे उजागर हो जाई।"

अमुक–अमुक कवियन में एगो नाम तथागतो जी के रहे। ऊ ओह दिन स्थापित ना भइल रहले।

नेगी जी अपना शोध–प्रबन्ध में, तथागत जी के समुचित जगह दिहले रहस कि ना, हमरा एकर जानकारी नइखे। बाकिर अपना लेख में उनकर नाम काटल हमरो खातिर सम्भव ना रहे। एह से हम साफ कर दिहलीं–''हमरा से ई ना हो सकी। रउआ सम्पादक बानी, लेख रउरा लगे बा, ओकरा के जइसे चाहीं सुधार कर सकिले।''

कुछ दिन के बाद, 'निकष' का विशेषांक के एक प्रति हमरा मिलल। हम उत्सुकता से ओकर एक–एक शब्द पढ़ गइलीं। साठ पष्ठन के पत्रिका में ठाकुरसेन नेगी का नाम के कहीं उल्लेख ना रहे, हमरा लेखो में ना।❐

मान-अपमान

काल्ह उनकर सार्वजनिक अभिनन्दन भइल रहे। आज दैनिक 'सन्देश' में समारोह के बड़हन रिपोर्ट छपल बा :

'कानपुर, २६ नवम्बर (वि०)। आज इहां प्रख्यात रंगकर्मी आ नाटककार डॉ० रघुकुल 'रंजन' के, स्थानीय 'रुक्मिणी देवी सभागार' में आयाजित एगो बड़हन समारोह में, सार्वजनिक अभिनन्दन कइल गइल। सभ वक्ता लोग डॉ० 'रंजन' का व्यक्तित्व आ कतित्व पर प्रकाश डालत, उनका के विशिष्ट रंगकर्मी आ अप्रतिम नाटककार बतवले।

मुख्य अतिथि, राज्य के शिक्षामन्त्री श्री गिरधारीलाल व्यास, डॉ० 'रंजन' के चादर आ अभिनन्दन–पत्र भेंट कइले। उनका के 'रंगश्री' के उपाधियो से विभूषित कइल गइल। एह अवसर पर एगो भव्य 'डॉ० 'रंजन' अभिनन्दन–स्मारिका' के प्रकाशन कइल गइल। संयोजक श्री रवि मोहन का अनुसार समारोह बहुत सफल रहल।'

रिपोर्ट पढ़के ऊ गद्‌गद हो गइले। समाचार पढ़के केतने लोगन के टेलीफोन पर बधाई–सनेस आ चुकल बा, केतने त खुद आ के उनकर पीठ थपथपा गइले।

"रवि मोहन जी आइल रहले ह। कहत रहस कि रउरा समारोह के खर्चा खातिर जे पांच हजार एडवान्स देले रहीं, ओकरा से चादर, अभिनन्दन–पत्र, स्मारिका, फोटोग्राफ्स आ जलपान के बिल चुकता कर दियाइल बा।'' लेखक महोदय के, जइसे सुतला से जगावत, उनकर पत्नी बतवली।

''हूं।'' ऊ आगे कुछ ना बोलले।

''माइक, टैंट आदि के, लगभग एक हजार के बिल अभी बाकी बा, उहो दे गइल बाड़े।'' कह के पत्नी बिल उनका सामने टेबुल पर रख दिहली।

बिल देखते डॉ० 'रंजन' के लागल, जइसे अखबार में जे छपल बा, ऊ सभ झूठ ह। लोगन का नजर में उनकर सम्मान भले बढ़ गइल होखे, अपना नजर में आज ऊ गिर गइल रहले।❐

डॉ० अश्वमुख कुटिल

'दैनिक ट्रिब्यून' पढ़त, हमार नजर एक–ब–एक हिसार 'डेट लाइन' से छपल, पुरस्कार–सम्बन्धी एगो समाचार पर जा टिकल। डॉ० अश्वमुख कुटिल का हवाले से छपल एह समाचार में कुछ दिन पहिले दिल्ली में भइल, सहस्राब्दी विश्व हिन्दी–सम्मेलन का विषय में, बहुत–कुछ अनाप–शनाप लिखल गइल रहे, जइसे–'सम्मेलन का नाम पर, देश–भर के हिन्दी–सेवियन के मूर्ख बनावल गइल, साहित्यकारन के भेड़–बकरियन के तरह हांकल गइल....पुरस्कार का नाम पर पाखंड भइल....सम्मेलन ना, राजनीतिक नाटक रहे' आदि...आदि।

हमहूं ओह सम्मेलन में गइल रहीं। एह से उहां के आंखिन देखल सांच, सिनेमा के रील नियर, एक–ब–एक हमरा दिमाग में घूम गइल। डॉ० कुटिलो ओह में सम्मिलित भइल रहस। पुरस्कार खातिर नाम पुकारल गइला पर, ऊ लार टपकावत दउड़ल रहस आ मुख्य अतिथि का सामने, लगभग पसरत ऊ, सम्मान–पत्र लिहले रहस। बादो में चार इंच मुंह फाड़त ऊ ना जाने केकरा–केकरा साथे फोटो खिंचवावत रह गइल रहस। दू पहर के भोजन का बेरा त ऊ कमाले क दिहले रहस। कवनो भुखाइल भिखारी नियर हलुवा–पूड़ी पर टूट पड़ल रहस। एहू पर ई अनर्गल समाचार...।

"डॉ० कुटिल, ई सभ का ह ?" हम तुरत उनका से फोन पर जाने के चहलीं। फेर खुदे बात साफ करत कहलीं–''अगर आयोजन अतने घटिया आ पुरस्कार अतना महत्त्वहीन रहे, त ओहीजा अस्वीकार कर दीत।''

''अरे भाई, रउआ ना समझब।'' खिसियानी हंसी हंसत ऊ बोलले रहस–''सुधाकर 'अवसरवादी' का समाचार बनवे के रहल, हम ई सभ ना कहतीं, त समाचार कइसे बनित।''❐

दुमदार

प्रादेशिक साहित्य–अकादमी का ओर से आयोजित कवि–सम्मेलन का बाद, बीतला रात, जब कवि लोग खाये पर बइठले, त निदेशक महोदय ओह लोग में से दू–तीन जने पर टूट पड़ले। घरे बोला के मेहमान के अपमान करे के नया सांस्कतिक बोध के परिचय देत, ऊ लगभग चीखला के आवाज में बोलले–''तू लोग हमरा खिलाफ अखबारन में अनाप–शनाप लिखते रहेल लोग, बाकिर हमार कुछ नइख बिगाड़ सकत। हम तहरा जइसन लोगन के रत्ती–भर परवाह ना करीले।''

मुंह से झाग फेंकत ऊ साफ कइले–''इहां के सभ साहित्यकार कुत्ता हउवे। खाये के मिलत रहे, त खुश। जेकरा नइखे मिलत, उहे भूंके लागत बा, काटे दउड़े लागत बा।''

फेर अपना बड़प्पन के रेघियावत कहले–''तू लोग हमार चाहे जतना विरोध कर, हम तहरा लोग के आपन समझीले, तेहरा लोग के भले सोचीले। अब देख लोग, आज का कवि–सम्मेलन में त तहरा लोग के बोलवलहीं बानी, कुछ दिन बाद, देश के साहित्यिक यात्रा पर जायेवाला पांच सदस्यवाला साहित्यकार–मंडलो में तहरा लोग के सामिल कइले बानी।''

निदेशक महोदय के बिना उमेद के अपमानवाली बात सुनियो के केहू कुछ ना बोलल, 'हां–हूं' करत रहे सभे। हम तड़प के रह गइलीं। खइला का बाद, सुतेवाला कमरा में जाये लागल लोग, त हम कोचलीं–''अतना सुनलो पर तू लोग चुपचाप रह गइल।'' फेर ओह लोग के अगुवा के सम्बोधित करत हम कहलीं–"हम हरान बानी कि 'पींग' में छपल अपना लेख में, साहित्य–अकादमी आ ओकरा निदेशक के चमड़ा अधारे वाला 'क्रान्ति–पुत्र' के, आज का हो गइल रहल ह !"

ऊ कवनो साफ प्रतिक्रिया प्रगट ना कइले, हम सुझाव दिहली–''पींग' में अइसन लेख लिख कि साहित्यकारन के अपमान करेवाला निदेशक के, लेख पढ़ के, पसेना आ जाय। साहित्यकारन के ई कुत्ता आ भेड़–बकरी समझ लेले बाड़े।"

''छोड़ इयार !'' ऊ कहले–''शर्मा हमार दुश्मन त हउवे ना। फेर विरोध करे के हमही ठेका थोड़े ले रखले बानी, अउरो त लोग बा, ओहू लोग के त सामने आवे के चाहीं।''❐

हार-जीत

विधानसभा–चुनावन में, पार्टी उम्मीदवारन का हार–जीत के लेके, 'अ' आ 'ब' में बहस छिड़ गइल रहे।

''हमरा पार्टी के उम्मीदवार जीती।'' अ कहलस।

''ना, हमरा पार्टी के जीती।'' 'ब' दावा कइलस।

''तहरा उम्मीदवार के जीते के त सवाले नइखे उठत।'' 'अ' में बहुत आत्मविश्वास रहे।

''सवाल होखे भा ना होखे, जीती उहे।'' 'ब' भी अपना मत पर दीर्ह रहे।

''बाकिर कइसे ? वोट त मिली ना ओकरा।''

''वोट हमनी के ले लेबे आवेला।''

''ऊ कइसे ?''

''अइसे।'' कहत 'ब' एगो चोख चाकू अ के आंतन में उतार दिहलस। 'अ' ओही जा ढेर हो गइल।

अगिला दिन, अल्पसंख्यक समुदाय का आदमी के हत्या के खबर फइलल आ ओने समूचा वोट 'ब' का उम्मीदवार के झोरी में जा गिरल।❐

जय श्रीराम

दिन में राममन्दिर–निर्माण के जम के विरोध करेवाला नेता घरे लवटले, रामनामी ओढ़ले आ सीधे रामजी के मूर्ति के लगे जाके पसर गइले, बोलले–''माफ करीं भगवान ! कुर्सी के मजबूरी बा, ना त मन्दिर–निर्माण त हमहूं चाहत बानी।''❐

आतंकवादी

आतंकवादियन से रात का बससेवा के यात्रियन के हत्या कर दिहला के खबर मिलते, आधा रात के, सत्ताधारी दल नगर–शाखा के आपात बइठक बोला लिहल गइल रहे। एगो कार्यकर्त्ता उत्तेजित होके कहले–''पानी माथ से ऊपर गुजर चुकल बा। अब उन्हनीं के अइसन मजा चखावल जाय कि नानी इयाद आ जास।''

बइठक में उपस्थित सभ लोग एह बात से सहमत रहले, बाकिर सवाल रहे कि एह घटना से जन–भावना के भड़कावल कइसे जाय। पुलिस आ प्रशासन का अनुकूल रवैया का बादो अगर लोग कुछ ना कइल, त अतना लोग के मरइला के का फायदा।

''का जन–भावना भड़कावे खातिर चौंतीस बस–यात्रियन के निर्मम हत्या काफी नइखे ?'' एगो दोसर कार्यकर्त्ता के सवाल रहे।

''ना।'' सभापति साफ कइले–''सात बरिसन से होत रहल हत्याकांडन के खबर पढ़–सुन के लोग अतना आदी हो गइल बाड़े कि अब उनका पर अइसन घटनन के कवनो असर नइखे होत। एगो मरे चाहे बीस, उनका खातिर सभ बराबर बा।''

एह से एह सम्बन्ध में का कइल जाय, एह विषय पर रात बीतला तक गम्भीर मन्त्रणा होत रहल।

सबेर होत–होत, बस यात्री–हत्याकांड का खबर के साथे, एगो जोरदार अफवाहो, जंगल के आग नियर, पूरा नगर में फइल गइल–''आतंकवादी यात्रियन के हत्या करे के पहिले, जवान महिला यात्रियन के खाली लंगटे ना कइले, उनका गुप्तांगन में बन्दूक के नली... आ ऊ चिल्लात रह गइलीं।''

आधे घंटा में पूरा शहर माचिस आ माटी के तेल ले के, आतंकवादियन के खोज में, सड़क पर आ गइल रहे।❐

शान्ति के द्वीप

साम्प्रदायिक दंगन के दौरान, अल्पसंख्यकन के सभ से ज्यादा खतरा धक्का बस्ती के लोगन से रहल। आगजनी, लूटपाट आ मारपीट में सभ से आगे इहे लोग रहेले। एह से, धक्का बस्ती का लगे बसल अल्पसंख्यक परिवारन के, त जइसे जाने निकलत जात रहे। 'अब का होई वाहे गुरु ?' तेजासिंह का मकान में बटोराइल, सभ लोगन के डेराइल चेहरन पर, बस इहे एगो सवाल रहे।

सबेरे होते, जब आठ–दस लट्ठधारी, तेजासिंह के आवाज लगवले, त सभ के प्रान सूख गइल। दरवाजा के छेद में से देखल लोग, त पता चलल कि किसना, बब्बू, गब्बू, सभ बाड़े एक–से–एक खुंखार आ छंटल। अब केहू के खैर नइखे। एह से तेजा सिंह दरवाजा खोले खातिर उठले, त सभ मना कर दिहले–''का करत बाड़ ! ओह लोग पर खून सवार बा। चुपचाप बइठ। मरब स, त सभे एकट्ठे मरब स।''

''तेजासिंह!'' किसना के आवाज रहे–''दरवाजा खोल, देख केतना लोग आइल बा, तहरा लोग से मिले।''

''डर रहल बाड़ का ? अरे भाई, समूचा उमिर पड़ोस में रहल बानी, स अब हमनियों से डरब का ?'' ई बब्लू रहले।

''हमनी तहरा के इहे कहे आइल बानी कि हमनी के रहते तहरा केहू से डेराये के जरूरत नइखे।'' गब्बू साफ कइले।

बाकिर, उनका बातन पर, केहू के विश्वास ना होत रहे। काल्ह के गुंडा आ बदमास कइसे बदल सकेले। दरवाजा खुलते पता ना का कर बइठस। घर के सामान आ बहू–बेटियन पर नजर होई बदमासन के। गुरमीत कौर अपना जवान बेटी के लगे खींच लिहली।

''अब त दरवाजा खोलहीं के पड़ी। तू लोग हर स्थिति खातिर तइयार रहिह। जब मर ही के बा, त बहादुरी से हंसत–हंसत मरब स।'' कह के तेजासिंह दरवाजा खोल दिहले।

पलक झंपकते सभ लट्ठधारी घर में दाखिल हो गइले। औरतन आ बच्चन के मुंह से चीख निकल गइल।

लेकिन ई का, किसना झपट के तेजासिंह के गला से लगा लिहलस आ बब्बू–गब्बू आदि दरवाजा के दूनू तरफ जम के बइठ गइले–''देखत बानी, अब कवन माई के लाल एने आंख उठा के देखत बा। तेजासिंह, ई तहरा सुरक्षा का साथ ही हमनी के इज्जत के सवाल बा। हमरा बस्ती में हमरा रहते, तहरा के केहू कुछ कह दिहलस, त हम बिना मरले मर जाएब।''

दिन निकलते दंगा उग्र रूप धर लेले रहे। आशंका के मोताबिक, दंगाइयन के नेतागीरी, धक्का बस्तीवाले करत रहले। आज, ऊ आपन कार्यक्षेत्र बढ़ा के, पूरा शहर कर देले रहले। लेकिन धक्का बस्ती के पड़ोसवाले अल्पसंख्यक परिवार, समुद्री तूफान में शान्ति के द्वीपन नियर, पूरा तरह से सुरक्षित रहले।❐

धर्मान्तरण

बिरसा, लालटेन के मद्धिम अंजोर में आंख खोलले, त उज्जर कपड़ा में सजल संगमरमर नियर मदर मारग्रेट, उनका देवी के साक्षात् मूर्ति नियर लउकली। ऊ सरधा से लबालब भर गइले।

''रउआ कतना अच्छा बानी मदर !'' बिरसा के रोआं–रोआं कतज्ञता प्रगट करत रहे–''रात–दिन जाग के, दवा–दारू क के, हमरा के रउआ एगो नया जीवन दिहलीं।''

''तहरा के नया जीवन हम ना, यीशू देले बाड़े।'' कह के मदर आपन हाथ आशीर्वाद के मुद्रा में बिरसा के माथ पर रख दिहली–''यीशू बहुत दयालु बाड़े, तहरा के बोला रहल बाड़े, तू यीशू के सरन में आ जा।''

''ना।'' मदर के अन्तिम वाक्य सुनते, बिरसा चीख उठले–''हमरा के ईसाई बनावे खातिर तू बचवले बाडू ? ना मदर, ना। सेवा के मीठ गोली खिया के, बहुत लोग के धर्मान्तरण करवा चुकल बाड़ तू। लेकिन बिरसा मुंडा के होते अब बस्तर धरम ना बदली, मदर !''

बिरसा के लाल–लाल आंखिन में जइसे समूचा बस्तर धधक उठल रहे। ओह आंखिन के ताव सह सके के हिम्मत केहू में ना रहे, मदर मारग्रेटो में ना।❐

आश्रय

भ्रष्टाचार का लगे रूप–सौन्दर्य, विद्या–बुद्धि आदि सभ कुछ रहे, ना रहे त केवल आश्रय। एक दिन ऊ आश्रय के खोज में निकल पड़ल।

ओकर पहिला पड़ाव गांव के एगो मेहनती मजदूर किहां रहे। मजदूर, सामरथ का मोताबिक, ओकर अच्छा स्वागत कइलस, बाकिर ओकर मन ना भरल। रूखर रोटी रात–भर ओकरा पेट में गड़त रहल। चारपाई गड़त रहे, ऊ अलग। ऊ राम–राम क के रात गुजरलस।

अगिला रात ऊ एगो कलाकार किहां ठहरल। कलाकार ओकरा के भाव में भींजल पत्र–पुष्प भेंट कइलस। रात–भर ऊ अतिथि के काल्पनिक आदर्श कथा सुनावत रहल। भ्रष्टाचार के मन ओहू जगह पर ना लागल, काहे कि कलाकार खाली सुनावे के जानत रहे, सुने के ना।

तिसरका पड़ाव में ऊ एगो धनिक आदमी का घरे ठहरल। धनिक आदमी, अपना स्तर के मोताबिक, खाये–पीये आ रहे–सहे के व्यवस्था कइलस। दूनू में खूब पटल। भ्रष्टाचार व्हिसकी से महकत रात मखमली विछावन पर बितवलस। इहां ऊ खुश रहे।

धनिक, पिछिला चुनाव में, नगरपालिका के प्रधान बनल रहे। ओकरा एगो अइसने सुयोग्य सहायक के जरूरत रहे, पूछलस–''तू हमरा सहायक का रूप में काम करब ?''

मनलायक मुराद मिलला से भ्रष्टाचार बहुत खुश भइल। एह से ऊ तत्काल आपन स्वीकति दे दिहलस–''राउर सेवा कइल हमरा खातिर परम सौभाग्य के बात होई।''

पिछिला पचास बरिसन से, भ्रष्टाचार ओह धनिक आदमी के सहायक का रूप में, कार्यरत बा। धनिक आदमी अब अपना क्षेत्र के निर्विवाद नेता हो गइल बा।❐

छत

जब तक छत ठीक–ठाक रहे, देवाल कसमसात रहे। भारी बोझा अपना कान्ह पर उठवले रखल, ओकरा खातिर असम्भव हो गइल रहे। एह से बोललस–''तहार बोझ हमरा से आउर सहन ना होई।''

''हमरा के बोझा मत समझ हमार बच्ची लोग !'' छत उन्हनीं के समझावत कहली–''हम ओहीजा बानी, जहां हमार जगह बनल बा।''

देवालन के, छत के कहला में, उन्हनी के कान्ह पर जमल रहे के षड्यन्त्र के गंध बुझात रहे। एह से तुनुक गइली–''बोझा ना समझीं ! हमार कान्ह चूर–चूर हो गइल बा, अब मुक्त कर हमनी के।''

''हम हट जाएब, त तू बेकार हो जइबू। तू मकान तबे तक बाड़ू, जबले हम तहरा कान्ह पर बानी।'' रुन्हाइल गला से छत फेर समझवलस।

देवाल एहू पर ना मनली। अन्त में छत जमीन पर गिर गइल। ई देख के देवालन का खुशी के पार ना रहे।

लेकिन ऊ ठीक से खुशी मनवलहूं ना रहली कि मालिक के आदमी कुदार आ कस्सी लेके पहुंच गइले। ऊ सभ देवालन के एक–एक कर के बेरहमी से नेंव सहिते उखाड़ फेंकले।

आहत देवाल जमीन पर बिछ गइली। छत के अधखुलल आंख अबो उनका पर टिकल रहे, जइसे कह रहल होखे–''हम तहरा लोगन के सांचे कहत रहलीं नू, नादान बच्ची लोग !''❐

लालटेन

लालकिला से लेके बोट क्लब तक, दस किलोमीटर लमहर लाल सागर लहरा रहल बा। देश के कोना–कोना से आइल कामरेड, आज के एह रैली में शामिल होके, दिल्ली के कान पर दस्तक दे रहल बाड़े–''चेत दिल्ली, हमनी तोहरा के लूटे ना, जगावे आइल बानी।''

''आज के ई रैली अब तक के सभ से बड़की रैली चाहे ना होखे, बाकिर ई दिल्ली में भइल सभ से बड़ रैलियन में बा।'' हम अपना साथी पत्रकार रमेश तलवार के आपन आकलन प्रस्तुत करत बानी।

''बेशक, बड़लो बा बहुत अनुशासित आ लोग ढो के एकट्ठा नइखन कइल गइल, अपना मन से आइल लागत बाड़े।'' रमेश एही जगह पर भइल पहिलकी रैलियन आ वामपन्थियन द्वारा आयोजित आज का रैली के चरित्र के अन्तर साफ करत कहले।

लालकिला पर लाल निशान देखे के सपना मन में जोगवले कामरेड कतार बान्ह के चल रहल बाड़े। केहू गुड़–चना चाहे सतुआ के गेंठरी लटका रखले बा, केहूं झोरा में लिट्टी टांग रखले बा। हम, उनका में से एगो के रोक के, पूछलीं–''कहां से आइल बाड़ ?''

''किसनगढ़ी गांव से, मुरैना जिला में पड़ेला।''

''तहरा के ले आइल गइल बा आ कि खुदे आइल बाड़ ?''

''ले आई के साहेब ? अपना मर्जी से आइल बानी स, खुद किराया–भाड़ा खरच क के, अपना नेतन के भासन सुने खातिर।'' रमेश का बात के पुष्टि हो गइल रहे।

चेहरन से साफ झलकत रहे कि कई कामरेड पहिली बेर दिल्ली आइल बाड़े, खुश बाड़े– केहू दिल्ली देख के, त केहू छोला–भटूरा खा के। उड़ीसा के बुजुर्ग गनेश पटनायक खुश बाड़े कि ऊ अपना पहिलके दिल्ली–यात्रा में अपना मनलायक चीज खरीद लेले बाड़े।

''एह में का बा ?'' उनकर झोरा का ओर इसारा क के रमेश पूछलें।

ऊ हिचकिचात बाड़े, बाकिर प्रार्थना कइला पर बतावत बाड़े आ फेर देखावतो बाड़े–''लालटेन ह।''

हमरा लागल, ई बुजुर्ग ओह लाखन लोगन के प्रतीक बाड़े, जे एगो लालटेन यानी अंजोर के एगो किरिन खातिर, अइसन रैलियन में, उमड़ल चल आवत बाड़े। 'बाकिर ई राजनीतिक दल आ नेता एगो लालटेन दे पइहें ?' हमनी दूनू के आंखिन में एगो सवाल उभर आइल रहे।❐

बुढ़ापा-पेंशन

डाकघर के पिछिला दरवाजा पर, बूढ़ स्त्री–पुरुषन के जमघट जइसन लागल देखलीं, त पत्रकार–वत्ति के कारण, हमार ध्यान ओह लोग के तरफ आकर्षित हो गइल। पूछला पर पता चलल कि वद्धावस्था–पेंशन लेबे आइल बा लोग। बाकिर पेंशन त मनीऑर्डर से, घर पर मिले के चाहीं, इहां आवे के कारन ?

''का बताईं बाबू साहेब, ई मुआ डकपिउन हर बेर इहवां बोलवा लेला।'' पूछला पर एगो वद्धा हमरा से कहली।

''रउआ देखत बानी कि हमरा चले–फिरे के हालत कतई नइखे, तबहूं इहां आवे के पड़त बा।'' दोसर बद्धा बतवली।

''डकपिउन सभका से बीस–बीस रुपया कमीशन ले ला। कहेला, तीन–तीन सौ फोकट में मिलत बा, हमरो त कुछ हिस्सा होखे के चाहीं।'' दू–तीन आदमी स्पष्ट कइले।

''हमनी दूनू से हर बेर मनीऑर्डर फारम पर दस्तखत करवावल जाला, बाकिर पेंशन एके के मिलेला– कबो इनका, त कबो हमरा।'' एगो बूढ़ लगे बइठल अपना बूढ़ पत्नी का ओर इसारा करत कहले।

मामला साफ हो गइल रहे। हम दिलासा दिहलीं–''तहरा लोग का साथे आगे से अइसन ना होई। हम ई सभ अखबार में लिखब।''

अतना सुनते दूगो छुटभैया नेतानुमा युवक, जे कुछ दूरी पर खड़ा हमनी के बातचीत सुनत रहले, हमरा लगे आ गइले। कहे के जरूरत नइखे कि ई दूनू दलाल रहले आ डाकिया से मिल के कमीशन खाये के धंधा करत रहले।

''बाबूजी, अइसन मत करिह। हम गरीब मारल जायेब।'' ओहनी में से एगो कहलस।

''हं बाबूजी, ई हमनी का पेट के सवाल बा। तू अखबार में लिख दिहल, त ई धंधा चौपट हो जाई आ हमनी भूखे मर जायेब।'' दोसर कहलस।

''तू लोग धंधा बना के रखले बाड़ एकरा के ? बीच में दलाली खात बाड़, तहरा लोग के सरम नइखे आवत ?'' हम आवेश में आ के उन्हनी के फटकरलीं।

''का करीं बाबूजी, कवनो रोजगार नइखे, नोकरियो नइखे मिलत। इहां पेंशनो बुढ़ौतिए में जा के मिली। तब तक गुजारा खातिर ई व्यवस्था कइले बानी स। बुढ़ापा–पेंशन से पेट भरब स, त जल्दी बूढ़ होखब स।''❐

रामबाण

ऊ जबसे स्थानान्तरित होके इहां आइल बाड़े, चपरासी से लेके अधीक्षक तक, सभ दुःखी बाड़े। अजब स्वभाव बा। ना पल–भर चैन से बइठे के, ना बइठे देबे के, सारा दिन काम...अरे भाई, आदमी हउवे कि मशीन ?

अतनो पर बस रहित, त गनीमत रहे। ऊ त एकदम 'शाकाहारी' हउवे; ना खुद खात बाड़े, ना केहू के खाये देत बाड़े, जइसे देश के अर्थ–दशा सुधारे के ठेका उहे ले चुकल बाड़े; चाहे फेर उनका अलावा सभे काला चोर आ कामचोर बाड़े। .. पता ना उनका समझ में ई बात काहे नइखे आवत कि हमनी बाल–बच्चादार आदमी हईं, अइसे कइसे गुजारा होई हमनी के। तनखाह से आज–काल्ह का होत बा।

एह से उनकर कई बेर शिकायत कइल गइल, लोगन से मुख्यमन्त्री के ज्ञापन दिलवावल गइल, बाकिर सभ बेकार। सभे जानत बा कि ऊ निकम्मा हउवे, तबादला कइला से का मिली !

एह से, लक्ष्य–बेधन खातिर, रामबाण नुस्खा खोजल गइल। एक दिन ऊ ऑफिस से बाहर रहले, त सभ कर्मचारी दफ्तर के बाबू दर्शन लाल से प्रार्थना कइले कि तू शिकायत कर। अगर तू शिकायत कर देब, त तुरन्ते बदली हो जाई। ऊ मना कइले, त सभे बहुत दबाव डालल, एकता के दोहाई दिहल, लइकन का भविष्य के ध्यान दिलवावल। अन्त में ऊ शिकायत करे के तइयार हो गइले।

विभागीय मन्त्री के अपना शिकायत में ऊ लिखले कि सात दिसम्बर के निदेशक महोदय उनका साथे बड़ा खराब व्यवहार कइले। छव अप्रैल, २००२ के, १० बजे, जब ऊ कवनो पत्र पर उनका से हस्ताक्षर करावे गइले, त ऊ उनका के गरियावत कहले–''गैट आउट ! चमार के बच्चा ! बिना पूछले भीतर घुसल चल आवत बा।'' उनकर आवाज सुन के, दफ्तर के कई कर्मचारी एकट्ठा हो गइले आ हमरा बहुत अपमानित होखे के पड़ल। हम पूछत बानी कि का हमार चमार भइल गुनाह बा आ एह कारन मि० अशोक गुप्ता के हमरा के अपमानित करे के लाइसेन्स मिल जाता ? "आदि–आदि।

शिकायत का सप्ताह–भर बादे उनका तबादला के आदेश आ गइल।❐

दोसर फैसला

लोगन के बर्ताव से उनकर मन वितष्ण हो उठल रहे। उपहास, उपेक्षा आ आक्षेप। डेग–डेग पर विरोध अलग। का इहे पुरस्कार ह उनका जनसेवा के ?

एह से ऊ फैसला कर लिहले कि आज का बाद ऊ कबो कवनो सार्वजनिक गतिविधियन में भाग ना लिहें।

''काहे ?'' एक–ब–एक एगो सवाल उनका मन में उभरल। बाकिर ऊ कवनो जवाब ना दिहले।

''तहार फैसला ठीक नइखे। ई त कायरता ह, पलायन ह। तू जवन करे के सोचत बाड़, उहे त तहार विरोधी चाहत बाड़े।'' उनकर मन उनका के समझवलस।

ऊ फेर चुप रहले।

एह से उनकर मन सवाल कइलस–''का तू अपना विरोधियन के इच्छा अतना आसानी से पूरा कर देब ?''

''ना।'' एह बार उनका मुंह से निकलल।

उनकर मुट्ठी तन गइल। जोश में भर के ऊ उठ के खड़ा भइले। अब उनका लगे दीर्ह संकल्प रहे आ रहे ओकरा के पूरा करे के दुगुना शक्ति।❐

धन्यवाद-मुद्रा

उनका भाग्य आ भगवान से बराबर शिकायत रहल बा। ''भगवान उनका के देलहीं का बाड़े ?'' ऊ अक्सर सोचेले आ एही कारन, अपना स्थिति से, कबो सन्तुष्ट नइखन हो सकत।

''जवन ना मिलल, हरमेसा ओही खातिर भगवान के कोसत रहेल।'' एक दिन पत्नी कहली–''जवन मिलल बा, कबो ओकरो विषय में सोचले बाड़ ?''

ऊ चुप रहले।

एह से पत्नी फेर कहे लगली–''कतना कुछ त देले बाड़े भगवान। तहरा त उनकर कतज्ञ होखे के चाहीं। अगर उहो ना देते, त का हालत होइत तहार, कबो सोचले बाड़ ?''

एह नजर से त ऊ कबो सोचलहीं ना रहले।

''सचहूं का नइखे उनका लगे।'' पहिली बार ऊ सोचले रहस–''उच्च शिक्षा, नौकरी, सुन्दर बीवी–बच्चा, अच्छा घर–बार, सभ–कुछ त बा। ऊ करोड़न से बेहतर बाड़े।''

आ तब, एक–ब–एक उनकर दूनू हाथ उठ गइल रहे, धन्यवाद के मुद्रा में।❐

राष्ट्र के सत्त्व

मगध–विजय के बाद, महाराज चन्द्रगुप्त मौर्य के महत्त्वाकांक्षा कुछ ज्यादा प्रबल हो गइल रहे। ऊ अपना नजदीकी राज्यन पर विजय क के एगो विशाल साम्राज्य का स्थापना के सपना देखे लागल रहले। सेना से चढ़ाई करे खातिर सजा के, ऊ अपना गुरु, आचार्य विष्णुमित्र कौटिल्य का लगे गइले। राज्य–विस्तार के अपना अदम्य आकांक्षा के महाराज चन्द्रगुप्त गुरु का आशीर्वाद से पूरा करे के चाहत रहले।

आचार्य जब उनकर मनोरथ सुनले त प्रशंसा आ आशीर्वाद देबे के बजाय, देर ले, उनका पर व्यंग्य से हंसत रह गइले। चन्द्रगुप्त एकर आशय ना समझ सकले। ऊ विनम्रता से एकर कारन पूछले, त गुरु उनके से उलट सवाल कइले–''कवना शक्ति से तू ई अभियान पूरा करब ? अतना बड़ इच्छा का पूर्ति के का आधार बा तहरा लगे ?''

"गुरुवर, रउरा अनुकम्पा आ आशीर्वाद से, हमरा लगे एगो विशाल राष्ट्र बा, अजेय सेना बा।" विनम्रतापूर्वक चन्द्रगुप्त निवेदन कइले।

पहिले जइसन मुस्कात आचार्य फेर व्यंग्य कइले–''त तू राज्य का विशालता आ सेना का बल पर विजयश्री प्राप्त करब ?''

ओकरा बाद चन्द्रगुप्त के कुछ कहे का पहिलही दीर्ह आवाज में ऊ कहले–''असम्भव बा राजन् !"

''काहे आचार्य–प्रवर ?'' गुरु के बात सुनके चकित हो गइल रहस चन्द्रगुप्त। आचार्य के आशय ऊ अबहूं ठीक से ना समझ सकल रहले।

''विजयश्री पावे खातिर राष्ट्र आ सेना के विशालता ना, राष्ट्र के सत्त्व चाहीं।'' चन्द्रगुप्त का संशय के समझ के आचार्य स्पष्ट कइले–''पाट चौड़ा भइला पर का नदी के धारा उथला ना हो जाले ? उथलल नदी नौकायन खातिर कबो उपयुक्त ना ह। तू राष्ट्र के सत्त्व ओकरा के द राजन्, विजयश्री खुद तहार कदम चूमी।''❐

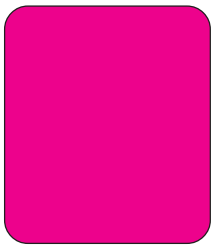

डॉ० रामनिवास 'मानव'

जन्म : २ जुलाई, सन् १९५४ को तिगरा, जिला महेन्द्रगढ़, (हरियाणा) में। (शैक्षिक प्रमाण–पत्र के अनुसार जन्म–तिथि ८ अक्टूबर, सन् १९५४)।

शिक्षा : एम०ए० (हिन्दी), पी–एच०डी०, डी० लिट् तक।

विशेष : तीस मौलिक तथा दस विभिन्न भाषाओं में अनूदित कतियों सहित कुल चालीस कतियां प्रकाशित। * देश–विदेश की अड़सठ प्रमुख बोलियों एवं भाषाओं में रचनाओं का अनुवाद। * देश के अनेक विश्वविद्यालयों में 'व्यक्तित्व और कतित्व' पर एम०फिल् हेतु चालीस बार तथा पी–एच०डी० हेतु पांच बार शोधकार्य सम्पन्न। * एम०फिल् और पी–एच०डी० के सत्तर से भी अधिक शोधछात्रों का कुशल निर्देशन * अनेक विद्यालयी, महाविद्यालयी और विश्वविद्यालयी पाठ्यक्रमों में विविध रचनाएं तथा दो शोध–प्रबन्ध सम्मिलित। * व्यक्तित्व एवं कतित्व पर केन्द्रित चार ग्रन्थ, दो स्मारिकाएं तथा तीन पत्र–पत्रिकाओं के विशेषांक प्रकाशित। * पचास 'हूज़हू' ग्रन्थों तथा एक दर्जन समीक्षात्मक ग्रन्थों में विस्तत परिचय सम्मिलित। * हरियाणा सरकार द्वारा राज्य परिवहन की सभी बसों में आजीवन निःशुल्क बस–यात्रा सुविधा प्रदत्त।

सम्पर्क : 'अनुकति', ७०६, सैक्टर–१३, हिसार (हरि०) ✆ ०१६६२–२३८७२०

लघुकथा के क्षेत्र में हरियाणा के खास पहचान दिलवावेवाला लघुकथाकारन में डॉ० रामनिवास 'मानव' के विशेष स्थान बा। जीवन आ जगत् के विभिन्न पहलुअन पर तेज नजर आ ओकरा के लघुकथा का शिल्प में ढाले के जइसन क्षमता डॉ० 'मानव' में लउकत बा, ओइसन बहुत कम लघुकथाकारन में देखे के मिलेला। व्यक्ति, समाज, देश, दुनिया, घर, परिवार, नेता, मजदूर, आपसी द्वेष, दाम्पत्य सम्बन्ध में बिखराव, नारी–शोषण, बुढ़ापा के बेबसी, युवा पीढ़ी का मानसिकता में आइल बदलाव आ शिक्षा, शोध, साहित्य आदि से जुड़ल विषयन के लघुकथा में ढाल के एकरा आयाम के विस्तार देबे में डॉ० 'मानव' के प्रतिभा अपना पूरा क्षमता का साथे सामने आइल बा। उनका लघुकथन के सभ पात्र आदमी के मनोवत्तियन के प्रतीक का रूप में उरेहल बाड़े। एह पात्रन का माध्यम से युग के एगो पूरा तस्वीर देखल जा सकत बा।

डॉ० 'मानव' का लघुकथन के शैलीगत विशेषतो अपना ओर ध्यान खींचे वाला बा जइसे–'बिना लवटल राम' (वर्णन), 'चैकअप' (विवरण), 'शो–पीस' (उत्तम पुरुष), 'बीजारोपण' (संवाद), 'पत्नी बनाम नारी' (पत्र), 'मैरिड आदमी' (डायरी), 'लाश' (समाचार), 'आ कवि के जनम' (काव्य)। आकार का दष्टि से डॉ० 'मानव' के लघुकथा चार पांतियन से लेके डेढ़ पन्ना तक के आकार में देखल जा सकेले। एह से ई बात बिना हिचकिचाहट के कहल जा सकेला कि लघुकथा के क्षेत्र में जतना सफल शैलीगत प्रयोग डॉ० 'मानव' कइले बाड़े, ओतना शायदे केहू दोसर लघुकथाकार कइले बा।

(एही पुस्तक के भूमिका से उद्धत)